प्राक्कथन।

इस वर्ष श्री १०८ श्री दिगम्बर जैन मुनि श्री मल्लिसागरजी महाराज ने [illegible] इतर्दे सभा [illegible] वक्ता श्री० पं० इन्द्रलालजी शास्त्री विद्यालंकार स० 'जैनगजट' का निवासस्थान भी जयपुर ही है। उक्त शास्त्रीजी द्वारा लिखित इस 'श्रेयोमार्ग' नामक पुस्तिका को जब उक्त श्री मुनि महाराज ने सुना तो आपकी इच्छा इस पुस्तिका में उल्लिखित विचारों को शिक्षित समाज तथा जनता में प्रसारित करने की हुई। आपने कहा कि ऐसी ऐसी अनेक पुस्तिकाएँ पर्याप्त संख्या में लिखी जाकर प्रकाशन के द्वारा शिक्षित समाज के सामने लाई जावें तो शिक्षित समाज एवं उसके द्वारा सर्व साधारण को भी बहुत अंशों में वास्तविक श्रेयोमार्ग की प्राप्ति हो सकती है। विद्वान् लेखक ने इस पुस्तिका में बहुत ही आकर्षक और सुन्दर ढङ्ग से प्रतिपाद्य विषय को रक्खा है जिसके लिए लेखक महोदय धन्यवादके पात्र हैं। नवशिक्षित समाज तथा सर्वसाधारण का झुकाव वास्तविक श्रेयोमार्ग की ओर हो इसी आशय से इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। भविष्य में भी इस प्रकार का साहित्य प्रकाशित किया जायगा।

दीपमालिका
विक्रम संवत् २००६

निवेदक—
मन्त्री
श्री १०८ श्री मुनिराज मल्लि-
सागर ग्रन्थमाला

॥ श्रीः ॥

मंगलाचरण ।

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं ।
साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि ॥
रागद्वेषभयामयान्तकजरा लोलत्वलोभादयो ।
नालंयत्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते ॥

[यह भाषण ता० ६-६-४६ को राजस्थान ब्राडकास्टिंग कार्यालय जोधपुर से श्री० पंडित इन्द्रलालजी शास्त्री विद्यालंकार द्वारा रेडियो से प्रसारित किया गया था जो ८० मीटर ३७७५ किलो साइकिल मे सर्वत्र सुना गया था ।]

संसार में प्रत्येक मानव ही नहीं किन्तु प्राणी मात्रही सुख चाहता है परन्तु सुख-प्राप्ति के कारणों की ओर इसकी गति न

दो शब्द

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सातवें भाग के प्रकाशित होने के करीब तेरह महीनों के पश्चात् यह आठवां भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हुए हमें बड़े हर्ष और सन्तोष का अनुभव हो रहा है। आठवें भाग के साथ यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। निरन्तर छः वर्ष के परिश्रम से ही जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के ये आठ भाग तैयार हुए हैं। छः वर्ष पूर्व सोचे एवं स्वीकार किये हुए कार्य को पूरा कर आज हम अपने को भारमुक्त एवं हल्का अनुभव कर रहे हैं।

यह आठवाँ भाग पहले के सात भागों का विषय कोष है। इस भाग में सातों भागों में आए हुए विषयों की विस्तृत सूची अकारादिक्रम से दी गई है। सात भागों के बोल जिन आगम एवं सिद्धान्त ग्रन्थों से उद्धृत किये गये हैं उन प्रमाणभूत ग्रन्थों का उल्लेख भी इस सूची में किया गया है। प्रमाणभूत ग्रन्थों का पूरा नाम देने में इसका बहुत अधिक विस्तार हो जाता अतएव यहां उनका निर्देश संकेत रूप में किया गया है। सज्जनों के सुभीते के लिये प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची पृथक् दी गई है और उसमें ग्रन्थों के पूरे नाम तथा सम्पादकों के नाम, प्रकाशन का स्थान और समय आदि दिये गये हैं।

इस अनुक्रमणिका में पाठकों की जिज्ञासा का ख्याल कर एक ही बोल दो चार तरह से बदल कर दिया गया है एवं बोल के अन्तर्गत भेद प्रभेदों का भी इसमें समावेश किया गया है। सूची तैयार करते समय यह भी ख्याल रखा गया है कि संख्या विशेष एवं विषय विशेष के बोल लगातार एक साथ आ जायँ। इसी तरह गाथाएं और कथाएं भी पास पास रखी गई हैं। शास्त्र विशेष के नियत या वचना के अर्थ इन भागों में आये हैं वे भी एक साथ दिये गये हैं। इस प्रकार पाठकों की सुविधा का ख्याल कर हमने यह अनुक्रमणिका बहुत विस्तृत बनाई है। इस अनुक्रमणिका को तैयार करते समय सातों भागों को प्रमाण ग्रन्थों से, जिनसे कि इन भागों में बोल लिये गये हैं, भी मिलान किया गया है और सातों भागों के बोलों के प्रमाणों में जहाँ कहीं कमी या त्रुटि थी वह इस अनुक्रमणिका में यथासंभव ठीक कर दी गई है। यही कारण है कि इसे तैयार करने में इतना समय लगा है और समिति को इसके लिये पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ा है। सहृदय पाठकों से यह भी निवेदन है कि इस विषय सूची से सात भागों में दिये हुए प्रमाण में कुछ भिन्नता हो तो वे विषयसूची के अनुसार भागों में सुधार कर लेवें।

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में कौनसा विषय किस भाग में कहाँ पर है ? पाठकगण इस विषय सूची की सहायता से सुगमतापूर्वक इसका पता लगा सकेंगे तथा साथ में प्रमाण ग्रन्थ होने से शंका अथवा विशेष जिज्ञासा होने पर पाठक उन ग्रन्थों को देखकर आत्मसन्तोष कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त यह विषयकोष जैन पारिभाषिक

शब्दों के लिये जैन भाष का काम भी देगा और पाठक केवल इसी की सहायता से कौनसा विषय किस ग्रन्थ में कहाँ पर है? सहज ही जान सकेंगे।

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह कोई मौलिक रचना नहीं है। प्राकृत संस्कृत भाषा के सिद्धान्त ग्रन्थों में से चुने हुए विषय सरल हिन्दी भाषा में आवश्यक व्याख्या एवं विवेचन के साथ इस भाग में दिये गये हैं। अतएव हम उन सभी ग्रन्थकारों के जिनके ग्रन्थों से हमने बोलसंग्रह में बोल लिये हैं अत्यन्त ऋणी हैं। यदि हमारे अनुवाद व्याख्या अथवा विवेचन में उन ग्रन्थकारों के आशय से कहीं स्खलना हुई हो तो हम उनसे क्षमा याचना करते हैं। पाठकगण से भी हमारा यह निवेदन है कि यदि उन्हें हमारे इस प्रकाशन में कोई त्रुटि या कमी प्रतीत हो तो हमें अवश्य सूचित करें ताकि हम आगामी संस्करण में उचित सुधार कर सकें। उनकी इस कृपा के लिए हम उनके कृतज्ञ रहेंगे।

इस आठवें भाग के छपाने में श्री पं० हनुमानप्रसादजी शर्मा शास्त्री ने अध्यवसाय पूर्वक बड़ा परिश्रम उठाया है अतएव हम उन्हें धन्यवाद देते हैं। अन्त में इस ग्रन्थ के लेखन संकलन संशोधन प्रकाशन आदि में हमें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन जिन महानुभावों की सहायता प्राप्त हुई है उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए हम अपना यह वक्तव्य समाप्त करते हैं।

पुस्तक प्रकाशन समिति
जैन प्रेस बिल्डिङ्ग्स, बीकानेर।

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर

पुस्तक प्रकाशन समिति

अध्यक्ष—श्री दानवीर सेठ भैरोदानजी सेठिया।
मन्त्री—श्री जेठमलजी सेठिया।
उपमन्त्री—श्री माणकचन्दजी सेठिया।

लेखक मण्डल

श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम ए, शास्त्राचार्य, न्यायतीर्थ, वेदान्तवारिधि।
श्री रोशनलाल जैन बी ए, एलएल बी, न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ, सिद्धान्ततीर्थ, विशारद।
श्री श्यामलाल जैन एम ए, न्यायतीर्थ, विशारद।
श्री घेवरचन्द्र बाँठिया 'वीरपुत्र' न्यायतीर्थ, व्याकरणतीर्थ, सिद्धान्तशास्त्री।
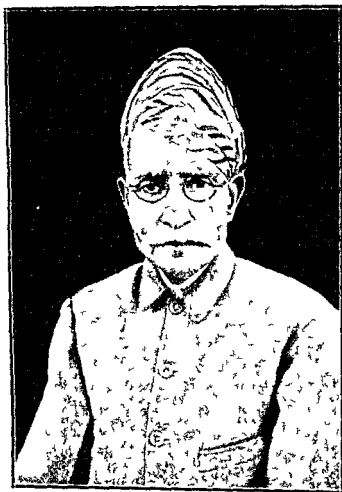
भैरोंदान सेठिया

जन्म सं० १९२३ विजया दशमी

फोटो सं० १९९३ अक्षय तृतीया

श्रीमान् धर्मभूषण दानवीर

सेठ भैरोंदानजी सेठिया

की

संक्षिप्त जीवनी

दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया का जन्म जैन बीसा ओसवाल कुल में विक्रम संवत् १९२३ विजयादशमी के दिन हुआ। आप के पिता का नाम श्री धर्मचन्दजी था। आप चार भाई थे। श्री प्रतापमलजी और अगरचन्दजी आप से बड़े और हजारीमलजी आप से छोटे थे। आप दो वर्ष के ही थे कि आपके पिता का स्वर्गवास हो गया। सात वर्ष की अवस्था में बीकानेर में बड़े उपाश्रय में साधुजी नामक यति के समीप आपकी शिक्षा का आरम्भ हुआ। दो वर्ष यहाँ पढ़ कर विक्रम सं० १९३२ में आपने कलकत्ते की यात्रा की। वहाँ से लौटकर आप बीकानेर के समीप शिवबाड़ी गाव में

रहे। मन्दिर,उद्यान और सरोवर से यह गाँव सुहावना है। उस समय राज्य की विशेष कृपादृष्टि होने से यहाँ का व्यापार बढ़ा चढ़ा था। यहाँ सदा बाजार में मेला सा लगा रहता था। यहाँ आप अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री प्रतापमलजी के पास व्यापार का काम सीखने लगे। सं० १९३६ में आपने बम्बई की यात्रा की। वहाँ अपने बड़े भाई श्री अगरचन्दजी के पास रह कर आपने बहीखाता जमा खर्च आदि व्यापारिक शिक्षा के साथ अंग्रेजी,गुजराती,आदि भाषाएं सीखीं। शिक्षा के साथ आपने यहाँ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त किया। यहीं आपकी शिक्षा समाप्त नहीं होती। नवीन ज्ञान सीखने की लगन आपकी जीवन भर रही और आज भी है। ज्ञान सीखने के प्रत्येक अवसर से आपने सदा लाभ उठाया है। दूसरे को पढ़ाने और सिखाने में भी आप सदा दिलचस्पी लेते रहे हैं। कई व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय का काम सिखा कर आपने उन्हें सफल व्यापारी बनाया है। आपने अपनी संस्था से भी कई सुयोग्य व्यक्ति तैयार किये हैं एवं उन्हें ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाई है।

संवत् १९४० में आप देश आये। इसी वर्ष आप का विवाह हुआ। कुछ समय देश में ठहर कर संवत् १९४१ में आप पुनः बम्बई पधारे। यहाँ आकर आप एक फर्म में, जिसमें चालानी का काम होता था, मुनीम के पद पर नियुक्त हुए। आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी इस फर्म के साझीदार थे।

बम्बई में सात वर्ष रहकर सं० १९४८ में आप कलकत्ते गये और वहाँ आपने अपनी संचित पूँजी से मनिहारी और रंग की दूकान खोली और गोली सूता का कारखाना शुरू किया। सफल व्यापारी में व्यापारिक ज्ञान, अनुभव, समय की सूझ, साहस, अध्यवसाय, परिश्रमशीलता, ईमानदारी, वचन की दृढ़ता, नम्रता

तथा स्वभाव की मधुरता आदि जो गुण होने चाहिये वे सभी आप में विद्यमान थे। इसलिये थोड़े ही समय में आपका व्यापार चमक उठा। धीरे धीरे आपने प्रयत्न करके भारत से बाहर बेल्जियम, स्विजरलैंड और बर्लिन आदि के रंग के कारखानों की तथा गबलज (Gablon/) आष्ट्रिया के मनिहारी के कारखानों की सोल एजेन्सियाँ प्राप्त कर लीं। फलत. आपको अधिक लाभ होने लगा और काम भी विस्तृत हो गया। इसी समय आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी भी आपकी फर्म में सम्मिलित हो गये। अब फर्म का नाम 'ए.सी बी सेठिया एन्ड कम्पनी रखा गया। कार्य के विस्तृत हो जाने से आपने कर्मचारियों को बढ़ाया। फर्म की सुव्यवस्था के लिये आपने एक अंग्रेज को असिस्टेन्ट मैनेजर के पद पर नियुक्त किया और पत्र व्यवहार के लिये एक वकील को रखा। कर्मचारियों के साथ आपका व्यवहार स्वामी सेवक का नहीं किन्तु परिवार के सदस्य का सा रहा है। आप कर्मचारियों से काम लेना खूब जानते हैं और उन्हें सब तरह निभाते भी हैं। उक्त अंग्रेज आपके पास २७ वर्ष रहा और वकील बाबू आज भी आपके सुपुत्र श्री जेठमलजी साहब की फर्म में है।

आप स्वभाव से ही कर्मठ और लगन वाले हैं। आपने कार्य करना ही सीखा है, विश्राम तो आपने जाना ही नहीं। जिस कार्य को आपने हाथ में लिया, उसे पूरा किये बिना आपने कभी नहीं छोड़ा। व्यापारिक जीवन में ऐसी सफलता पाकर भी आपने विश्राम नहीं लिया। आप और आगे बढ़ना चाहते थे। फलस्वरूप आपने हावड़ा में 'दी सेठिया कलर एन्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड' नामक रंग का कारखाना खोला। यह कारखाना भारतवर्ष में रंग का सर्व प्रथम कारखाना था। कारखाने से तैयार होने वाले सामान की खपत के लिये आपने भारत के प्रमुख नगरों-कल

कत्ता, बम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदाबाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला।

यहाँ यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्न कार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से बड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे। शुरू से अन्त तक सभी कार्यों की जानकारी आप रखते थे। सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था। यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मूले सीखने के लिए आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को केवल दैनिक पाँच मिनिट के लिए ३००) मासिक पर नियुक्त किया एवं उसके लिए आपने निजी प्रयोगशाला स्थापित की ।

सम्वत् १९५७ में एक पुत्री (बसन्तकुँवर) और दो पुत्रों (श्री जेठमलजी और पानमलजी) को छोड़कर आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास होगया। आपकी पत्नी धर्मात्मा और गृहकार्य में बड़ी दक्ष थीं। इसी कारण आप गृह व्यवस्था की चिन्ता से सदा मुक्त रहे एवं अपनी सभी शक्तियाँ व्यापार व्यवसाय में लगा सके थे । पहली धर्मपत्नी के स्वर्गवास होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ। कर्तव्यनिष्ठ सेठियाजी का उस समय व्यापार व्यवसाय की ओर ही विशेष ध्यान था। आप कुशलतापूर्वक व्यापार व्यवसाय में लगे रहे और उत्तरोत्तर उन्नति करने लगे। सं० १९७१ (सन् १९१४) के गत महायुद्ध में आपको रंग के कारखाने से आशातीत लाभ हुआ।

सम्वत् १९६४ में आप एक भयंकर बीमारी से ग्रस्त हो गये। इस समय आप कलकत्ते थे। वहाँ के प्रसिद्ध डॉक्टर और वैद्यों का इलाज हुआ पर आपको कोई लाभ न पहुँचा। अन्त में आपने

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपैथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपैथी साहित्य देखते रहे हैं एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप
[illegible] करते रहे
विक्रम संवत् १९६६ तदनुसार मई [illegible] किया। इसमें
बीकानेर नगर में किंग एडवर्ड मेमोरि [illegible] दी जाती है।
बी. सेठिया एन्ड सन्स के नाम से [illegible] लगा दिया था।
बढ़िया सामान और नई नई फैशन [illegible] चन्दजी बीकानेर
की प्रसिद्ध दूकान है। यहाँ से [illegible] गया। दोनों भाइयों
लोग सामान खरीदते हैं। [illegible] के लिये 'अगरचन्द
ने यह दूकान अपने [illegible] स्थापित करना तय
पीछे उससे जुड़ी हुई [illegible] रचन्दजी का स्वर्गवास हो
दूकान और [illegible] अब आपके सुयोग्य ज्येष्ठ
१४ १० १९३० ई० [illegible] श्री अगरचन्दजी के गोद हैं,
पट्टा बनवा दिया [illegible] से पाँच लाख की चल अचल
कर इस [illegible] नुसार संस्थाओं के नाम रजिस्ट्री
दूकान [illegible] ब्याज एवं किराये की आय से
विशाल [illegible], हिन्दी-संस्कृत प्राकृत विद्यालय,
इस [illegible] दान विभाग आदि चल रहे

कत्ता, बम्बई, मद्रास, कराची, कानपुर, देहली, अमृतसर और अहमदाबाद में अपनी फर्म की शाखाएं खोलीं । इसके सिवा जापान के ओसाका नगर में भी आपने ऑफिस खोला।

यहाँ यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि कारखाने और ऑफिस में विभिन्न कार्यों पर कुशल व्यक्तियों के नियुक्त होने पर भी आप आवश्यकता पर छोटे से बड़े सभी काम निस्संकोच भाव से कर लेते थे। शुरू से अन्त तक सभी कामों की जानकारी आप रखते थे। सर्वथा लोगों पर आपका कार्य निर्भर रहे यह आपको कतई पसन्द न था। यही कारण है कि रंगों के विश्लेषण के फॉर्मूल सीखने के लिये आपने एक जर्मन विशेषज्ञ को ...

कलकत्ता के प्रसिद्ध होमियोपैथिक डॉक्टर प्रतापचन्द्र मजूमदार से इलाज करवाया और आप स्वस्थ हुए। इसी समय से आपको होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति में अपूर्व विश्वास हो गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ी और उक्त डॉक्टर के सुयोग्य पुत्र डॉक्टर जतीन्द्रनाथ के पास आपने होमियोपैथी का अभ्यास किया एवं इसमें प्रवीणता प्राप्त की। तभी से आप होमियोपैथी साहित्य देखते रहे हैं एवं जनता में अमूल्य दवा वितरण करते रहे हैं। वर्षों के अनुभव ने आपको इस प्रणाली का विशेषज्ञ बना दिया है।

सेठ साहेब ने केवल धन कमाना ही नहीं सीखा पर आप समय समय पर सत्कार्यों में उदारतापूर्वक खर्च भी करते रहे हैं। सं० १९७० में आपने बीकानेर में स्कूल स्थापित किया। इसमें बच्चों को व्यावहारिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। इस से भी पहले आपने शास्त्र भंडार का काम शुरू करा दिया था।

संवत् १९७८ में आपके बड़े भाई श्री अगरचन्दजी बीकानेर में बीमार हो गये। उन्होंने आपको कलकत्ते से बुलाया। दोनों भाइयों ने मिल कर समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के लिये 'अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाएं' स्थापित करना तय किया। इसके थोड़े दिनों बाद ही श्री अगरचन्दजी का स्वर्गवास हो गया। उक्त निश्चय के अनुसार आप एवं आपके सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्र श्री जेठमलजी साहेब, जो कि श्री अगरचन्दजी के गोद हैं, संस्थाओं को चला रहे हैं। संस्थाओं में पाँच लाख की चल अचल सम्पत्ति है और वह कानून के अनुसार संस्थाओं के नाम रजिस्ट्री करा दी गई है। उक्त सम्पत्ति के ब्याज एवं किराये की आय से बाल पाठशाला, कन्या पाठशाला, हिन्दी-संस्कृत प्राकृत विद्यालय, नाइट कॉलेज, ग्रन्थालय एवं प्रकाशन विभाग आदि चल रहे हैं।

सेठिया जैन पारमार्थिक संस्थाओं के विभिन्न विभागों द्वारा पिछले बाईस वर्षों में, समाज में शिक्षा एवं धर्म प्रचार के जो महत्वपूर्ण कार्य हुए वे समाज के सामने है।

सं० १९७६ में आपके पुत्र उदयचन्दजी का असामयिक देहान्त होगया। इस घटना से आप अत्यन्त प्रभावित हुए। व्यापार व्यवसाय से आपका मन हट गया। अतएव कलकत्ते का विस्तृत व्यापार समेट कर आप बीकानेर पधार गये। आपने पारमार्थिक संस्थाओं का कार्य हाथ में लिया और अपनी सारी शक्तियां संस्थाओं की उन्नति में लगा दीं। धार्मिक ज्ञानवृद्धि का भी आपने यह अच्छा सुयोग समझा। आपने थोकड़े, ढाल और स्तवनों का स्वयं संग्रह किया और उन्हें प्रकाशित कराया। इसके सिवा आपने संस्कृत, प्राकृत, अर्द्धमागधी, आगम, न्याय, धर्मशास्त्र, हिन्दी, नीति और कानून विषयक पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। इस वृद्धावस्था में भी आपने निरन्तर सं० १९९६ से पाँच वर्ष तक अथक परिश्रम कर अपूर्व लगन के साथ जैनसिद्धान्त बोल संग्रह के आठ भाग, सोलह सती और आर्हत प्रवचन ग्रन्थ तैयार करा प्रकाशित कराये है। आपकी ज्ञानपिपासा एवं ज्ञान प्रचार की भावना के फलस्वरूप संस्था से १०७ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

आपकी दानवीरता एवं समाज तथा धर्म की सेवा का सम्मान कर सन् १९२६ में अखिल भारतवर्षीय श्रीश्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरन्स के कार्यकर्त्ताओं ने आपको कॉन्फरन्स के बम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन का सभापति चुना। कॉन्फरन्स का यह अधिवेशन बड़ा शानदार और सफल हुआ। आपकी दानशीलता के प्रभाव से उस अधिवेशन में एक लाख से अधिक फंड इकट्ठा हुआ।

समाज और धर्म की सेवा के साथ आपने बीकानेर नगर और राज्य की भी सेवा की। लगभग दश वर्ष तक आप बीकानेर म्यूनिसि

पल बोर्ड के कमिश्नर रहे। सन् १९२९ में सबसे पहले जनता में से आप ही सर्व सम्मति से बोर्ड के वाइस प्रेसिडेन्ट चुने गये। सन १९-३१ में राज्य ने आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया। लगभग सवा दो वर्ष तक आप बेंच ऑफ ऑनरेरी मजिस्ट्रेट्स में कार्य करते रहे। आपके फैसल किये हुए मामलों की प्रायः अपीलें हुई ही नहीं, यदि दो एक हुई भी तो अपीलेट कोर्ट में भी आप ही की राय बहाल रही। इससे आपकी नीर क्षीर विवेकिनी न्यायबुद्धि का सहज ही अन्दाज हो जाता है। सन् १९३८ में म्यूनिसिपल बोर्ड की ओर से आप बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य चुने गये। निस्वार्थभाव से बीकानेर की जनता की सेवा कर आप उसके कितने विश्वस्त एवं प्रिय बन गये, यह इससे स्पष्ट है।

सन् १९३० में संयोगवश सेठियाजी को पुनः व्यवसायक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ा। बीकानेर में बिजली की शक्ति से चलने वाला ऊन की गाँठें बाँधने का एक प्रेस बिकाऊ था। योग्य कार्यकर्त्ताओं के अभाव से वह बन्द पड़ा था। प्रेस के मालिक उसे चला न सके थे। क्रियात्मक शिक्षा देकर अपने पुत्रों को व्यापार व्यवसायमें कुशल बनाने के उद्देश्य से आपने उक्त प्रेस खरीद लिया। राज्य ने आपको रियासत भर के लिये प्रेस की मोनोपोली दी। आपने प्रेस को एवं बीकानेर के ऊन के व्यापार को उन्नति देने का निश्चय किया। प्रेस के अहाते में आपने इमारतें, गोदाम और मकानात बनवाये और व्यापारियों के लिये सभी सहूलियतें प्रस्तुत कीं। आपने कमीशन पर व्यापारियों का खरीद फरोख्त का काम भुगताना, आर्डर सप्लाई एवं यहाँ से सीधा विलायत में माल चढ़ाने का काम शुरू किया। माल पर पेशगी रकम देकर भी आपने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया। आपने प्रयत्न करके व्यापारियों के हक में राज्य एवं बीकानेर स्टेट रेल्वे से सुविधाएँ प्राप्त कीं। सभी प्रकार की सुवि-

धाओं के होने से बीकानेर राज्य एव बाहर के व्यापारी यहाँ काफी तादाद में आने लगे। ऊन का कारबार करने वाली बडी बडी कम्प नियाँ भी यहाँ अपने कर्मचारी रखने लगी। इस प्रकार उत्तरोत्तर प्रेस का काम बढ़ने लगा। सन् १६३४ में आपने ऊन के काँटों से ऊन निकालने के लिये ऊल बर्रिंग फैक्टरी (Wool Burring Factory) खरीदी। राज्य ने इसके लिये भी आपके हक में मोनोपोली स्वीकृत की। इस प्रकार कुछ ही वर्षों में आपकी लगन और परिश्रम ने आपके सकल्प को कार्य रूप में परिणत कर दिया। आज ऊन प्रेस सन् १६३० के ऊन प्रेस से कुछ और ही है। यहाँ सैकडों मज दूर लगते हैं और हजारों मन ऊन का व्यापार होता है। हजारों गाँठें बँधती हैं और विलायत भेजी जाती हैं। प्रेस की साख ने लिवरपूल के मार्केट को भी प्रभावित कर रखा है। प्रेस के मार्के वाली गाँठें वहाँ अपेक्षाकृत ऊँचे भाव में बिकती हैं।

सेठ सा० की धार्मिकता एव परोपकार भावना के फलस्वरूप ऊनप्रेस में भी गाय गायों के घास एव कबूतरों के चुगे के लिये, हामि योपेथिक एव आयुर्वेदिक औषधियों के लिये तथा साधारण सहा यता आदि के लिये पृथक् पृथक् फंड कायम किये हुए हैं और सभी में अलग अलग रकम जमा कराई हुई है। रकम के ब्याज की आय से उपरोक्त सभी कार्य नियमित रूप से चल रहे हैं। ऊन प्रेस के आढतिये भी गाय गोंओं के घास एव कबूतरों के चुगे के लिये लागा देते हैं।

इस प्रकार ऊन प्रेस को सब भाँति समुन्नत कर सेठ साहेब ने उसे अपने सुयोग्य पुत्र श्री लहरचदजी, जुगराजजी, और ज्ञान पालजी के हाथ सौंप दिया है एव आप व्यापार व्यवसाय से सर्वथा निवृत्त हो धर्मध्यान में सलग्न हैं। पिछले पाँच वर्षों से धार्मिक साहित्य, सुनना और तैयार करवाना ही आपका कार्यक्रम रहा है।

परिवार की दृष्टि से सेठ सा० जैसे भाग्यशाली विरले ही मिलते है। आप के पाँच पुत्र है। सभी शिक्षित, सस्कृत एव व्यापारकुशल हैं। सभी जुदे किये हुए हैं एव जुदे २ व्यापार व्यवसाय में लगे हुए हे। पाँचों पुत्र सेठजी के आज्ञानुवर्ती हैं एव सभी भाइयों में परस्पर सराहनीय प्रेम है। यही नही आपके छः पौत्र, दो प्रपौत्र, दो पौत्री और दो प्रपौत्री हैं। सेठजी के दो पुत्रियों में से छोटी पुत्री मौजूद है एव तीन दोहिते और पाँच दोहितियाँ है।

सेठजी सफल व्यापारी, समाज और राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त, बडे परिवार के नेता एव सम्पन्न व्यक्ति है। आप दानवीर और परोपकारपरायण हैं। धर्म और परोपकार के कार्यों में आपने उदारता के साथ धन ही नहीं बहाया किन्तु तन और मन का योग भी आपने दिया है। बचपन में माता और बडी बहिनों से धार्मिक संस्कार प्राप्त करने वाले एव धर्मस्थान में शिक्षा का श्रीगणेश करने वाले सेठ साहेब की प्रवृत्ति सासारिक कार्यों के बीच रहते हुए भी सदा धार्मिक रही है। सांसारिक वैभव में जलकमलवत् निर्लिप्त रह कर आपने नाम से ही नहीं, कर्म से भी धर्मचन्द का पुत्र होना सिद्ध किया है। आपने बचपन में ही श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज से धर्म श्रद्धा ग्रहण की थी। आप गुणों के ही पुजारी है। पंच महाव्रत धारी निर्मल आचार-वाले सभी साधु आपके लिये पूज्य है। आपने अपने जीवन में कभी चाय, भग, तमाखू या अफीम का सेवन नहीं किया। सात व्यसनों का आपके त्याग है तथा रात्रिभोजन का भी आपके नियम है। आपने श्रावक के बारह व्रत धारण किये है और जीवन के पिछले वर्षों में आपने शीलव्रत भी धारण किया है। ग्रहण किये हुए त्याग प्रत्याख्यान आप दृढता के साथ पालन करते रहे है।

आपकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि आप स्वनिर्मित हैं। आप सदा स्वावलम्बी, साहसी, अध्यवसायशील एवं कर्मठ रहे हैं। सभी प्रकार से सम्पन्न होकर भी आप सर्वथा निरभिमान हैं।'सादा जीवन और उच्च विचार' इस महान् सिद्धान्त को आपने जीवन में कार्य रूप दिया है। आपका चरित्र पवित्र एवं अनुकरणीय है। आप में परमहंसों का सा त्याग, साधुओं का सा कर्मसन्यास और वीरों की सी कर्मनिष्ठा है। आपने क्या नहीं किया और क्या नहीं पाया परन्तु सासारिक विभूति के मोह बन्धन में आपने अपने को कभी नहा बाँधा। आपके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर जैन गुरु कुल शिक्षण सघ, ब्यावर ने आपको 'धर्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। यह उपाधि सब तरह से आप जैसे महापुरुष को शोभा देती है। हमारी परमात्मा से यही प्रार्थना है कि आप चिरायु हों।

बीकानेर (राजपूताना) भादवा सुद ७ वि० स० २००१ ता० २६ ७ ४४ ई०	रोशनलाल जैन बी ए, एल एल बी, न्याय काव्य सिद्धान्ततीर्थ, विशारद

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी का वंश

श्रीमान् सेठ धर्मचन्दजी के चार पुत्र और पाँच पुत्रियाँ हुईं। उनके नाम—श्रीप्रतापचन्दजी, श्रीअगरचन्दजी, श्रीभैरोंदानजी, श्री हजारीमलजी, चाँदाबाई, धमाबाई, पन्नीबाई, मीराबाई और दुर्गीबाई। श्रीमान प्रतापचन्दजी के तीन पुत्रियाँ और तीन पुत्र हुए। उनके नाम–तख्तुबाई, सुगनीबाई, मानबाई। सुगनचन्दजी, हीरालालजी, चनणमलजी। इन तीनों के कोई संतान न हुई। इन तीनों का तरुणावस्था में ही स्वर्गवास होगया। श्रीमान् चनणमलजी की धर्मपत्नी अभी मौजूद है। उन्होंने श्रीमान् जेठमलजी सेठिया के ज्येष्ठ पुत्र श्री माणकचन्दजी को गोद लिया।

श्रीमान् अगरचन्दजी के कोई सन्तान न हुई। उन्होंने [illegible] लघुभ्राता श्रीमान् भैरोदानजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री [illegible] को गोद लिया।

श्रीमान् भैरोंदानजी के ६ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। वे इस प्रकार है–१बसंतकुंवर, २जेठमलजी, ३पानमलजी, ४[illegible], ५उदयचन्दजी, ६जुगराजजी, ७ज्ञानपालजी, ८[illegible], संवत् १९९६ मिति कार्ती सुद९ को बसन्तकुंवर [illegible] हो गया। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् जेठमलजी के चार पुत्र और [illegible] हुईं। उनके नाम–माणकचन्दजी, केशरीचन्दजी, मोहन[illegible], [illegible] स्वर्णलता। १९९४ में केवल आठ वर्ष की [illegible] का स्वर्गवास हो गया। श्री माणकचन्दजी के [illegible] कुसुमकुमार और एक पुत्री आशालता है।

श्रीमान पानमलजी के इस समय एक पुत्र श्रीकुन्दनमलजी (भंवरलालजी) हैं। कुन्दनमलजी के एक पुत्र रविकुमार और एक पुत्री लाला है।

श्रीमान लहरचन्दजी के इस समय एक पुत्र श्री खेमचन्दजी और एक पुत्री चित्ररेखा है।

संवत् १९७९ में श्रीमान् उदयचन्दजी का केवल ४५ वर्ष की अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास के पश्चात् करीब १६ महीनों के बाद उनकी धर्मपत्नी का भी स्वर्गवास हो गया।

श्रीमान् जुगराजजी के इस समय एक पुत्र श्रीचेतनकुमार है। बाबू ज्ञानपालजी अभी अविवाहित हैं।

माहिनीबाई के इस समय एक पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं।

श्रीमान् भैरोंदानजी से छोटे भाई श्रीमान् हजारीमलजी थे। उनका स्वर्गवास युवावस्था में ही हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्री रत्नकुंवरजी को बचपन से ही धर्म के प्रति विशेष रुचि एवं प्रेम था। संवत् १९३६ में केवल छ वर्ष की अवस्था में आपने रतलाम में पूज्यश्री उदयसागरजी महाराज के पास सम्यक्त्व ग्रहण की थी। पति का स्वर्गवास हो जाने पर धर्म के प्रति आपकी रुचि और भी तीव्र हो गई। आपको संसार की असारता का अनुभव हुआ और वैराग्य भावना जागृत हो गई। संवत् १९६५ में समस्त सांसारिक वैभवों का त्याग कर श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यश्री श्रीलालजी महाराज के पास श्रीरंगूजी महाराज की सम्प्रदाय में श्रीमैनाजी महाराज के नेश्राय में पूर्ण वैराग्य के साथ दीक्षा अंगीकार की। ३६ साल हुए आप पूर्ण उत्साह के साथ संयम का पालन करती हुई आत्म कल्याण की साधना में अग्रसर हो रही हैं।

भादवा सुद ७ वि० संवत् २००
ता० २६-७-४४ ई०

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

श्री अगरचद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था,

सस्था–भवन, बीकानेर
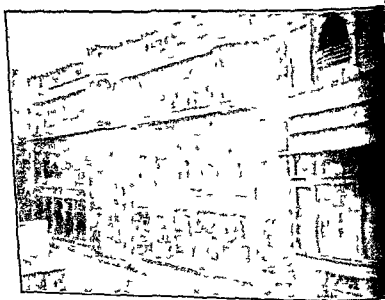
अज्ञान तमसा पतिं विदलयन् सत्यार्थमुद्भासयन् ।
भ्रान्तान् सत्पथ दर्शनेन सुखद मार्गे सदा स्थापयन् ॥
ज्ञानालोकविभासनेन सतत भूलोकमालोकयन् ।
श्रीमद्भैरवदानमान पदवी पीठ सदा राजताम् ॥

१	पंक्ति—	माणकचन्द, केशरीचन्द जुगराज, कुनणमल
२	"	लहरचन्द, जेठमल, भैरोंदानजी, पानमल, ज्ञानपाल
३	"	मोहनलाल सोमलता, खेमचन्द

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर

की

संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट

(तारीख १ जनवरी १९४४ से ३१ दिसम्बर तक)

सन् १९४४ की समाप्ति के साथ हमारी संस्थाओं का इक्कीसवां वर्ष पूरा होता है। इतने दीर्घ काल में इन संस्थाओं ने यथासामर्थ्य देश और समाज में ज्ञान का प्रचार करने का प्रयत्न किया है। इन संस्थाओं में बालशिक्षण कन्याशिक्षण और प्रौढ़शिक्षण के साथ साथ साहित्य निर्माण और साहित्य संशोधन का कार्य भी बराबर होता रहा है। व्यवहारिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा भी इन संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य रहा है और इसी उद्देश्य के अनुसार साधु-मुनिराजों तथा महासतियों के ग्रन्थ आदि पठन का कार्य भी चलता है। इन सब बातों का उल्लेख संक्षेप में आगे किया जायगा।

बाल पाठशाला

इस वर्ष इस विभाग के अन्तर्गत पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएँ चलती रही हैं। इन कक्षाओं में हिंदी, अंग्रेजी, धर्म, गणित इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य और बालिका विषय पढ़ाये जाते रहे हैं। छात्रों की संख्या का औसत १४५ रहा है।

विद्यालय

इस वर्ष विद्यालय में मुनीमी पठन की एक नई कक्षा आरंभ की गई है। जिसमें सराफी, बहीखाता ब्याज, जमाखर्च, हुंडी, चिट्ठी पत्री तथा व्यवहारिक अंग्रेजी का ज्ञान कराया जाता है। इस वर्ष पंजाब यूनिवर्सिटी की हिन्दीरत्न परीक्षा में दो विद्यार्थी पास हुए। इसी विभाग के अन्तर्गत हिन्दी भूषण और हिन्दी प्रभाकर की पढ़ाई भी इस वर्ष होती रही है। इस विभाग की ओर से सन्त मुनिराजों और महासतियों को उनके स्थान पर पण्डितों को भेजकर हिन्दी संस्कृत, प्राकृत धर्मशास्त्र और न्याय आदि का अभ्यास कराया जाता रहा है।

सेठिया नाइट कालेज

इस वर्ष कालेज विभाग में पंजाब मैट्रिक और राजपूताना बोर्ड आफ [illegible] ए. कक्षाओं

बी ए ई चलती रही है। एफ ए परीक्षा में कुल १२ छात्र प्रविष्ट हुए थे जिनमें ८ उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक परीक्षा में ३ छात्रों में २७ पास हुए। इस वर्ष कालेज में बी ए कक्षा नहीं रखी गई किन्तु आगामी सेशन से पुनः बी ए कक्षा खोल दी जायगी।

कन्या पाठशाला

इस पाठशाला में पूर्ववत् पहली से लेकर चौथी तक चार कक्षाएं चलती रही हैं। इन कक्षाओं में कन्याओं को हिन्दी गणित स्वास्थ्य, धर्म भूगोल, वालिका, सिलाई और कसीदा आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता रहा है। छात्राओं की साल भर में संख्या ७ और ८ के बीच में रही।

समाज सेवा विभाग

इस विभाग द्वारा समाज सेवा सम्बन्धी सभी प्रकार के कार्य किये जाते रहे हैं। इन में श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के आय व्यय का हिसाब रखना तथा अन्य पाठशालाओं के संचालन की देखरेख पत्रप्रबन्ध का कार्य होता रहा है।

इस विभाग द्वारा मन मुनिराजों एवं महासतियों के विहारादि सम्बन्धी पत्रव्यवहार और दर्शनार्थी आदि बहनों के लिये भोजनादि का प्रबन्ध भी होता रहा है।

इस विभाग द्वारा इस वर्ष ४२३॥=)॥ मू य का संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें भिन्न भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों को भेंट स्वरूप दी गई हैं इसके अतिरिक्त बिना मूल्य की १ २ पुस्तकें भी इस विभाग द्वारा भेंट दी गई।

प्रिन्टिंग प्रेस (छापाखाना)

इस विभाग में इस वर्ष सेठिया ग्रन्थमाला की १ ४ से १ ७ तक की नवीन पुस्तकों का मुद्रण हुआ। युद्ध जन्य कठिनाइयों के कारण इस साल प्रेस का काम मंदगति से चला। कर्मचारियों तथा कागज की कमी के कारण केवल नीचे लिखी पुस्तकें छप सकीं। समय को देखते हुए यह भी सन्तोषजनक ही है। (१) आर्तप्रवचन (२) श्रीप्रतिक्रमणसूत्र मूल ७ वीं आवृत्ति (३) श्री सामायिकसूत्र साथ ६ वीं आवृत्ति (४) श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह सातवां भाग (५) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया की सचित्र जीवनी (६) हिन्दी बाल शिक्षा दूसरी भाग। अभी श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के आठवें भाग की छपाई हो रही है।

ग्रन्थालय और वाचनालय

इस वर्ष भिन्न भिन्न भाषाओं की कुल ३१ नई पुस्तकें ग्रन्थालय में आई। दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक मासिक और त्रैमासिक पत्र पत्रिकाएँ इस वर्ष भी आती रही हैं और उन्हें वाचनालय में रखा जाता रहा है। इस वर्ष १२७ सदस्यों ने ३३६३ पुस्तकें पढ़ने के लिए पुस्तकालय से लीं तथा वाचनालय से लाभ उठाया।

ग्रन्थालय में इस समय हिन्दी, संस्कृत, गुजराती अंग्रेजी, पत्राकार हस्तलिखित आदि कुल मिलाकर ६६०६ पुस्तकें संगृहीत हैं। विवरण नीचे लिखे अनुसार है –

विषय	संख्या
हिन्दी	**३६८१**
कोष और व्याकरण	१२७
इतिहास और पुरातत्त्व	१४५
दर्शन और विज्ञान	१४६
धर्म और नीति	१३७३
साहित्य और समालोचना	२५६
काव्य और नाटक	४४२
उपन्यास और कहानी	३८४
जीवन चरित्र	१२२
राजनीति और अर्थशास्त्र	१३०
ज्योतिष और गणित	३७
स्वास्थ्य और चिकित्सा	१८७
भूगोल और यात्राविवरण	३४
कानून	८४
बाल साहित्य	२१३
विविध	२६४
संस्कृत	**६४३**
कोष और व्याकरण	१६५
साहित्य काव्य नाटक चरित्र और कथा	२३५
आर्ष ग्रन्थ	१३४
दर्शन शास्त्र	६६
धर्म चार और नीति	१८४
स्तुति स्तोत्रादि	३१
आयुर्वेद (वैद्यक)	५२
ज्योतिष शास्त्र	२०
विविध	७३
अंग्रेजी	**१६८०**
Works of reference	170
History and Geography	213
Theology Philosophy and Logic	287
Law & Jurisprudence	83
Literature	264
Fiction	225
Politics & Civics	8
Business & Economics	45
Science and art of medicine	157
Science & mathematics	56
Biography & auto biography	109
Industrial science	50
Art of teaching	13
जर्मन, फ्रेंच आदि	**१०३**
पत्राकार शास्त्र एवं ग्रन्थ	**५२०**
हस्तलिखित ग्रन्थ	**१२३८**

ग्रंथ निर्माण विभाग

इस साल छापाखाना विभाग में छपने वाले समस्त ग्रन्थों का संशोधन इसी विभाग के कर्मचारियों द्वारा हुआ। श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था की दशवर्षीय

रिपोर्ट लिखी तथा सशोधित की गई। श्री जैनसिद्धान्त बोल सग्रह के आठवें भाग की पाडुलिपि तैयार की गई और आवश्यक सशोधन परिवर्तन कर प्रेस कापी तैयार की गई।

सन् १९४४ के आय-व्यय का संक्षिप्त विवरण

११६०३॥-) कलकत्त के मकानों के किराये के मास बारह के

१७८२॥=) ब्याज

२०१) श्रीमान् लहरचदजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षो करणादि में खर्च करने के लिये

१०१) श्रीमान् राद स्वर्गीय धमपत्नी चम्पलजी सेठिया से प्राप्त हुए शास्त्र तथा दीक्षोपकरणादि में खर्च करने के लिये

५२००) श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सा सेठिया से प्राप्त हुए

२००)ज्ञानवृद्धि फन्ड के लिये

२० ०) बोर्डिंग के लिये

१२ ०) सहायता में देने के लिये

११६८५॥-) श्रीमद्यग जैन पारमार्थिक सस्था में खर्च हुए

६३७॥॥) सेठिया प्रिंटिंग प्रेस में

४८) बोर्डिंग खाते खर्च हुए

१००१) सहायता में दिये श्री स्थानकवासी जैन लायब्रेरी श्रीनगर काश्मीर को

५१) श्रीमद वीर जैन लायब्रेरी श्रीरायसिंहनगर में दिये

१२८॥-)॥ विविध फुटकर सहायता में दिये

३४४६) विद्यालय में वेतन के

१७३५)॥ बाल पाठशाला में

८८८।=)॥ कन्या पाठशाला में

१२७५॥)॥ सेठिया नाइट कालेज

५५२॥)॥ हेड ऑफिस में खर्च हुए

७४७=) सेठिया लायब्रेरी में पुस्तक व समाचारपत्र आदि में

७४॥) खर्च बिजली तथा पंखे का

१२६७) कर्मचारियों को महगाई भत्ते के दिये

५०॥-) परचुरण खर्च

८४॥) मकानों की मरम्मत में

७ ७८-) कलकत्ते के मकानों का ता० २१ सितम्बर १९४४ को नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनवाया उसमें स्टाम्प रजिस्ट्री व एटर्नी की फीस के खर्च हुए

संस्था की कलकत्ता स्थित स्थावर संपत्ति

का

नवीन ट्रस्ट नामा

श्री सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के संस्थापक महोदयों ने संस्था के स्थायित्व के लिये कलकत्ते और बीकानेर में स्थावर संपत्ति प्रदान कर कलकत्ता और बीकानेर में उसकी लिखापढ़ी कर दी थी। कलकत्ते की संपत्ति के अलग अलग तीन डीड्स आफ सेटलमेन्ट रजिस्टर्ड कराये गये थे। किन्तु उनमें कुछ कमी मालूम होने से संस्थापक महोदयों ने उन्हें रद्द कर दिया एवं संस्था के स्थायित्व के लिये उनके बदले ता० २१ सितम्बर १९४४ तदनुसार मिति आसोज सुदी ६ सं० २००१ शनिवार को नीचे लिखी संपत्ति का नया डीड ऑफ ट्रस्ट बनाकर उसकी सबरजिस्ट्रार कलकत्ता के दफ्तर में रजिस्ट्री करा दी। उक्त नवीन डीड आफ ट्रस्ट के अनुसार सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के वर्तमान में निम्नलिखित तीन ट्रस्टी है—

१ श्रीमान् दानवीर सेठ भैरोंदानजी सेठिया
२ ,, बाबू जेठमलजी सेठिया
३ ,, ,, माणकचन्दजी सेठिया

उक्त डीड के अनुसार ट्रस्टियों की संख्या ६ तक हो सकेगी। ट्रस्टियों के अधीन संस्था की व्यवस्था के लिये जनरल कमेटी, प्रबन्धकारिणी कमेटी तथा आवश्यकतानुसार अन्य सब कमेटियाँ स्थापित की जायँगी एवं समय समय पर उनके लिए नियम उपनियम निर्धारित किये जायेंगे।

कलकत्ते की स्थायी संपत्ति

१ मकान नं० १६०-१६०।१ पुराना चीना बाजार।

२ मकान नं० ३ ४,७ ८,११ और १३ क्लाइव स्ट्रीट तथा नं० १ ३ और १२५ मनोहरदास स्ट्रीट

३ मकान नं० १ जैक्सन लेन तथा १११, ११२ ११३ ११४ और ११५ केनिंग स्ट्रीट का दो तिहाई हिस्सा

नोट—उक्त जैक्सन लेन और केनिंग स्ट्रीट का एक तिहाई हिस्सा श्रीमान बाबू जेठमलजी सा० सेठिया ने संस्था को दिया वह नवीन ट्रस्ट डीड में है और एक तिहाई हिस्सा ता० १६ ७ ४० को संस्था ने खरीदा है। इस प्रकार उक्त मकान में संस्था का दो तिहाई हिस्सा है और एक तिहाई हिस्सा श्रीमान गोविन्दचन्दजी भनसाली का है।

कलकत्ते की उक्त स्थावर संपत्ति के सिवाय बीकानेर में संस्था की नीचे लिखी स्थावर संपत्ति है—

बीकानेर की स्थावर संपत्ति

१ मोहता मरोटियों का विशाल भवन (जिसमें आगे तीन मंजिला मकान है और पीछे की तरफ दो मंजिला मकान है) आगे पीछे के चौक दुवारे और बाड़ा सहित। यह भवन कोटड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। यह मकान सस्था के सभ्यावर्गों के सवर, सामायिक प्रतिक्रमण पौषध दया करने और साधु साध्वियों के ठहरने के लिये (यदि वे ठहरना चाहें तो) तथा मुनि महाराज एवं महासतियों के व्याख्यान के लिये एवं इसी प्रकार के अन्य धार्मिक कार्यों के लिये दिया है। इसकी रजिस्ट्री स. १९८० में ता. ३० नवम्बर १९२३ को हुई। तभी से इस कोटड़ी की सारसभाल सस्था कर रही है। सस्था ने इसकी मरम्मत कराई है एवं इसके बरवोर्ड बनवाने मे लागत लगाई है और सस्था पत्रों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य में श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता. २१ ४ ४१ का है। नम्बर मिसल १० तारीख मरजुआ १३ १२ ३८६ नाम नम्बाल मालमनी नम्बर ३०३ है। इस खत के अनुसार इस मकान की कुल दरगज ३ ९॥।=॥ है।

नोट—इस भवन में पहली मंजिल में दरवाजे के दोनों तरफ के दोनों दीवानखाने और उनके नीचे के दोनों तहखाने सम्मिलित में नहीं दिये हुए हैं। ये दोनों अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी हैं और इनका खत उनके नाम का अलग बना हुआ है। दीवानखानोंकीकुल दरगज २२८॥। है। दीवानखानों के ऊपरकी मंजिल सस्था की है।

२—मोहता मरोटियों का दूसरा दो मंजिला विशाल भवन (चौक और बाड़ा सहित)। यह भवन सेठिया लायब्रेरी के नाम से प्रसिद्ध है। सस्थापक म. ने यह भवन सेठिया जैन पारमार्थिक सस्था के लिये दिया है। अभी इस भवन में सेठिया ग्रन्थालय कन्या पाठशाला बालपाठशाला नाइट कॉलेज आदि सस्थाएं के विभाग हैं। इसकी रजिस्ट्री बीकानेर में स. १९८० में ता. २८ नवम्बर १९२३ को हुई। सस्थापकों ने इस मकान का नया खत बीकानेर राज्य में श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के नाम करा दिया है। यह खत ता. २६ ४ ४१ का है। नम्बर मिसल १७ तारीख मरजुआ १३ १२ ३८६ नाम तहसील मालनम्बर ३ ४ है। इस खत के अनुसार इस मकान की दरगज १३६३।=॥ है। ता. २८ नवम्बर १९२३ की रजिस्ट्री के बाद स. था का प्राप्त जमीन तथा एक बाड़ा भी नये खत में शामिल है।

नोट—इस भवन में कन्यापाठशाला के वर्तमान मकान के नीचे का तहखाना (जिसकी दरगज १३६= है) तथा तीन बाड़ों में से दो बाड़े १६१॥।= दरगज के सस्था में नहीं दिये हुए हैं। यह तहखाना तथा दोनों बाड़े अगरचन्दजी भैरोंदानजी सेठिया के निजी हैं। तहखाने और दोनों बाड़ों के दो खत उनके नाम अलग बने हुए हैं।

३-मकान एक उगूण दरवाजे का चौरी समेत निसरी दरवाज ३३८।।।≈ है और जो ट्रार्रों की गली में वाक है, मोती, भोलु व गोलु ट्ठारा से स १६७६ माह वदी ६ ता १४ जनवरी सन् १६०३ को खरीदा और उसपर लागत लगाकर दो मंजिले आसरे इमारत बनवाये इसके बाद वि स २००१ मिति प्रथम चैत्र वदी ६ ता ५ मार्च १६४५ को संस्थापक महोदय ने संस्था के हक में दानपत्र लिख दिया और तहसील मालमंडी में रजिस्टी करादी । सस्था के नाम इस मकान का पट्टा बनाने के लिये भी राज्य में दरखास्त कर दी गई है । इस मकान के आस पास इस प्रकार है— मकान में प्रवेश करते ही दाहिना ओर धन्ना ट्ठार (फिलहाल जोवणजी महाराज) का घर है, बाईं ओर हजारी ट्ठार का घर है, पीछे के तरफ आसुनाइ का मकान है और सामने गली है ।

नोट-उक्त कलकत्ता एवं बीकानेर दोनों जगह की स्थावर सपत्ति एक ही सस्था (सेठियाजैन पारमार्थिकसस्था) की है। अत उनकी सुव्यवस्था के लिये यह आवश्यक है कि कलकत्ते और बीकानेर की उक्त सपत्ति की देखभाल एक ही ट्रस्ट कमेटी के अधीन हो और एक से नियमों के अधीन उसका नियन्त्रण हो । अतएव संस्थापक महोदयों का विचार है कि कोटडी और सेठिया लायब्रेरी के मकान को बीकानेर राज्य में कराइ हुई ता ०८व ३० नवम्बर१६२३ को रजिस्ट्री को अपने सुरक्षित अधिकारके अनुसार रद्दकर संस्था की बीकानेर की सपत्ति के नये ट्रस्टडीड बनाये जावें और उनकी बीकानेर राज्य में रजिस्ट्री करा दी जाय ।

सेठिया जैन ग्रन्थमाला का प्रकाशन

सेठिया जैन ग्रन्थमाला से श्री जैन सिद्धान्त बोल सग्रह के आठ भाग सोलह सती, आर्हत प्रवचन, जैन सिद्धान्त कौमुदी, अर्द्धमागधी धातु रूपावली कर्तव्यकौमुदी सूक्ति-सग्रह उपदेशशतक सुखविपाक सार्थ मांगलिक स्तवनसग्रह प्रथम द्वितीय भाग गुणविलास, गणधरवाद के तीन भाग अनित्य भावना सग्र० पच्चक्खाण थोकड़ा सग्र० पुष्पहार रत्नावली, पचास बोल का थोकड़ा चौदह पूर्व का थोकड़ा, सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र मूल और सार्थ इत्यादि कुल १०८ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । विशेष विवरण के लिए सस्था का सूचीपत्र मगाकर देखिये । आगे आगे और पुस्तकें भी यहां द्वारा छपी जायेंगी ।

पताः— अगरचन्द भैरोदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर (राजपूताना)

Agarchand Bhairodan Sethia
Jain Charitable Institution, Bikaner

प्रमाण ग्रन्थों की संकेत सूची

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
अंत	अंतगडदसा अंतकृद्दशा सूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार-अभयदेवसूरि वि सं १०७२ ११३५	आगमोदय समिति वीर सं २४४६
अणु	अणुत्तरोववाई अनुत्तरोपपातिक सूत्रसटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार अभयदेव सूरि वि सं १०७२-११३५	आगमोदय समिति वीर सं २४४६
अनु	अनुयोगद्वार सूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार मलधार गच्छीय आ हेमचन्द्र सूरि	आगमोदयसमिति वीर सं २४५०
अभि चि	अभिधान चिन्तामणि संस्कृत कोष	आ हेमचन्द्राचार्य वि सं ११४५ १२२९	ज्ञानचन्द्र नंदलाल वकील श्री मुक्तिकमल जैन मोहनमाला का पोल, वडोदा, वीर सं २४५१
अभि रा	अभिधान राजेन्द्र कोष (सात भाग) प्राकृत सं संस्कृत	श्री विजय राजेन्द्र सूरि वि सं १८८३-१९६३	श्री जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस रतलाम वीर सं २४४० २४५१
अर्द्ध मा	अर्द्धमागधी कोष (पाँच भाग) प्राकृत से हिन्दी गुजराती और अंग्रेजी	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज वि सं १९३६-९८ वैशाख	श्री श्वे स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स बम्बई वीर सं २४४६ २४६४

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
अष्टक प्रकरण, संस्कृत वृत्ति (वि स १०८०)	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार-जिनेश्वरसूरि	श्री मनसुखभाई पोरवाड़, अहमदाबाद
आगमसार, मूल गुजराती हिन्दी अनुवाद, वि स १७७६	श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज वि १८ वीं १९ वीं शताब्दी	श्री अभयदेवसूरि ग्रन्थमाला बड़ा उपाश्रय बीकानेर, वीर सं २४४८
आचाराग सूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत वि स ९३३	टीकाकार शीलाकाचार्य	आगमोदय समिति, वीर स २४४२
आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक, प्राकृत दस पइण्णा में दूसरी पइण्णा		आगमोदय समिति, वीर स २४५३
आलापपद्धति, संस्कृत	श्री देवसेनसूरि, वि १०वीं शताब्दी	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला बम्बई, वीर स २४४६
आवश्यक सूत्र पूर्वभाग सटीक मूल और निर्युक्ति प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार मलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५४
आवश्यक सूत्र पूर्व और उत्तर भाग सटीक मूल और निर्युक्ति प्राकृत, टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४३ २४४४

आव ह टि	आवश्यक हारिभद्रीय टिप्पण संस्कृत	मलधार गच्छीय श्री हेमचन्द्रसूरि	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फन्ड बम्बई वीर स २४४६
आ वि	आत्मिक विकासक्रम गुजराती	प सुखलालजी संघवी (विद्यमान)	एम ज शाह मान्डलपुर अहमदाबाद वि स १९८५
उत्त	उत्तराध्ययन सूत्र (दो विभाग) सटीक मूल और निर्युक्ति प्राकृत टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार श्री शान्त्याचार्य (११वीं शताब्दी)	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फन्ड बम्बई वीर स २४४२
उत्त (क)	उत्तराध्ययन सूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत वि स १५४४ सर्वार्थ सिद्धि टीका	टीकाकार श्रीकमल संयमोपाध्याय (सोलहवीं शताब्दी)	विजय धर्म लक्ष्मी ज्ञान मंदिर बेलनगंज आगरा वीर स २४४६ २४५१
उत्त (ह)	उत्तराध्ययन सूत्र हस्तलिखित		श्री सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर
उपा	उपासकदशांग सूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार अभयदेवसूरि (वि सं १०७२ ११३५)	आगमोदय समिति वीर स २४४६
उपा (अ)	उपासकदशांग सूत्र (अंग्रेजी अनुवाद)	अनुवादक ए एफ रुडोल्फ हार्नेल	बिब्लोथिका इंडिका कलकत्ता सन् १८९० ई
उपा ह	उपासकदशांग सूत्र हस्तलिखित		अनूप संस्कृत लायब्रेरी (बीकानेर का प्राचीन पुस्तक भण्डार) बीकानेर
उव	उववाई (औपपातिक) सूत्र मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार अभयदेवसूरि (वि स १०७२–११३५)	आगमोदय समिति, वीर स २४४२
ऋषि	ऋषि मण्डल वृत्ति मूल प्राकृत टीका संस्कृत अनुवाद गुजराती	धर्मघोषसूरि टीकाकार शुभवर्धनगणी अनुवादक शास्त्री हरिशंकर कालीदास	श्री जैन विद्याशाला डोशीवाडानी पोल अहमदाबाद वि स १९५८

त

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
ओघ नियुक्ति, मूल प्राकृत टीका संस्कृत	निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीकाकार श्री द्रोणाचार्य (ग्यारहवीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४४५
अर्धमागधी दूसरा भाग संस्कृत भाषानुवाद सहित (वि स ९८०)	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि स १९३६ १९९८ वैशाख)	श्री भैरोंदानजी सेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५१
(१) कम्मपयडि (कर्म प्रकृति) सटीक	मूल शिवशर्माचार्य टीकाकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजी	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर वीर स २४४३
(२) कम्मपयडि मलयगिरि की टीका का गुजराती अनुवाद	अनुवादक प चुनीलाल नानचंद	श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडल पादरा (गुजरात), वीर स १९७६
(१) कर्म ग्रन्थ भाग १-४ प्राकृत टीका संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मूल और टीकाकार श्रीदेवेन्द्रसूरि (तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी)	श्री आत्मानन्द जैन पुस्तक प्रचारक मंडल रोशनमोहल्ला आगरा वीर स २४४६-२४४८
(२) कर्म ग्रन्थ भाग ५-६ मूल प्राकृत टीका संस्कृत	पांचवें भाग के मूल और टीकाकार श्रीदेवेन्द्रसूरि छठा भाग मूल-श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर टीकाकार मलयगिरि	आत्मानन्द सभा, भावनगर वीर स २४६८
कल्पसूत्र मूल प्राकृत सुबोधिका टीका संस्कृत	मूल भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी) टीका विनय विजयजी उपाध्याय (१७ वीं १८ वीं शताब्दी)	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई वीर स २४४६

कारण	क रण सवाद हिन्दी वीर स २४६५	शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी (वि स १९३६-१९९८ वैशाख)	हीरालाल दुगाचंद जैन नया बाजार अजमेर वीर स २४६५
तत्र	तत्त्वार्थ प्रकाश संस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	उपाध्याय श्रीविनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हंसराज	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर सं २४६२
गच्छा	गच्छाचार पयन्ना प्राकृत		आगमोदय समिति वीर स २४५३
गीता	श्रीमद्भगवद्गीता [संस्कृत] साधारण भाषा टीका सहित		गीता प्रेस गोरखपुर वि स २० १
गुण	गुणस्थान क्रम रो० [संस्कृत का हिन्दी अनुवाद] वि स १४४७	मूल र० श्री रत्नसूरि अनुवादक श्री तिलकविजयजी पंजाबी	आत्म तिलक ग्रन्थ सोसायटी रतनपोल अहमदाबाद वीर स २४४५
गुण थो	चौदह गुणस्थान का थोकड़ा हिन्दी		भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४५५
गौ कु	गौतम कुलक प्राकृत	गौतम मुनि	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर सं २४५४
च	चतुर्भाषा पद्यमाला मूल संस्कृत व्याख्या हिन्दी	मूल-शतावधानी श्रीरत्नचन्द्रजी स्वामी (वि स १९३१ १९९८ वैशाख) व्याख्या धर्मोपदेष्टा श्री फूलचन्दजी महाराज	रतनलाल अ० दास जैन सोनीपत वीर स २४५५
चन्दन	चन्दनबाला (सती वसुमती) हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज के व्याख्यान (वि स १९३२ २० ० आषाढ शुक्ला ८)	श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल रतलाम वीर स २४६२

त

ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
चन्द्रप्रज्ञप्ति मूल प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवादक मुनि श्री अमोलकऋषिजी महाराज (वि स १६३४-)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स २४४५
छन्दोमञ्जरी संस्कृत टीका तथा अनुवाद सहित	वैद्य महामहोपाध्याय श्रीमद् गगादास टीकाकार और अनुवादक } श्रीगुरुनाथ विद्यानिधि भट्टाचार्य	श्री आनन्दीनाथ काव्यतीर्थ, संस्कृत विद्यालय निवेदिताले‍न कलकत्ता, १३२२ बङ्गाब्द
जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (दो भाग) मूल प्राकृत टीका संस्कृत (विक्रम स १६५०)	टीकाकार उपाध्याय श्रीशान्तिचद्रगणी	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४६
जीवाजीवाभिगम सूत्र मूल प्राकृत, टीका-संस्कृत	टीकाकार श्रीमलयगिरि	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४५
जैन तत्त्वादर्श, हिन्दी पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध	श्री विजयानन्दसूरीश्वर (श्री आत्मारामजी महाराज)	श्री आत्मानन्द जैन महासभा अम्बाला, वीर स २४६२
जैन ग्र थावली, हिन्दी		श्रीश्वेताम्बर जैन कॉन्फरन्स बम्बई, वीर स २४५३
जैन सिद्धान्त प्रवेशिका हिन्दी	प गोपालदासजी बरैया	जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय बम्बई, वि स १६८१
ज्ञाताधर्म कथा (णायाधम्मकहा) मूल-प्राकृत टीका संस्कृत (वि स ११२०)	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि स १०७२–११३५)	श्री आगमोदय समिति वीर स २४४५
ज्ञानार्णव, संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता श्रीशुभचन्द्राचार्य [नवीं शताब्दी] अनुवादक प पन्नालालजी बाकलीवाल	परमश्रुत प्रभावक मंडल, बम्बइ वीर सं २४३३

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ठा	ठाणांग सूत्र [स्थानांगसूत्र] दो भाग मूल प्राकृत टीका संस्कृत वि स ११२०	टीकाकार श्री अभयदेवसूरि [वि स १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४५-४६
तत्त्वार्थ	सभाष्य तत्त्वार्थाधिगमसूत्र संस्कृत	वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति	मोतीलाल लाधाजी पूना वीर स ४५२
तत्त्वार्थ [गु.]	तत्त्वार्थसूत्र गुजराती [दो भाग]	विवेचक-पं सुखलालजी [विद्यमान]	गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद वि स १९८४
तन्दुल	तन्दुलवयालिय पइण्णा, प्राकृत (दस पइण्णा में से पांचवीं पइण्णा)		देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड ३ वीर स २४४३
त्रिलोक	त्रिलोकसार प्राकृत टीका सहित	श्रीनेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती टीकाकार श्री माधवचन्द्र	माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति हीराबाग गिरगांव बम्बई वीर स २४४४
त्रि ष	त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र गुजराती अनुवाद भाग ४	हेमचन्द्राचार्य [वि स ११४५-१२२९]	जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर
द प	दस पइण्णा [प्रकीर्णक] प्राकृत		देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई
दश,	दशवैकालिक सूत्र मूल और निर्युक्ति प्राकृत टीका संस्कृत	मूलकर्त्ता शय्यंभवस्वामी [वीर की प्रथम शताब्दी] निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी [वीर की पहली दूसरी शताब्दी] टीकाकार हरिभद्रसूरि [८वीं शताब्दी]	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई वीर स ४४४
दशा	दशाश्रुतस्कंध दशा भाषान्तर सहित मूल प्राकृत	अनुवादक उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज [विद्यमान]	जैन शास्त्रमाला कार्यालय सै. मिट्ठा बाजार लाहौर, वीर स २४६२

द्रव्यानुयोग तर्कणा संस्कृत, हिन्दी अनुवाद सहित	मुनि भोजसागरजी [सोलहवीं शताब्दी] अनुवादक-प ठाकुरदत्त शर्मा व्याकरणाचार्य	परमश्रुत प्रभावक मडल बम्बई, वीर स २४३२
द्रव्यलोक प्रकाश, संस्कृत गुजराती अनुवाद सहित	विनयविजयजीमहाराज(१७वीं १८वीं शताब्दी) अनुवादक-प हीरालाल हसराज	प हीरालाल हंसराज जामनगर वीर स २४४६
द्रव्यसग्रह, प्राकृत, हिन्दी टीका सहित	श्री नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती हिन्दीटीकाकार-बाबू सूरजभानु वकील	श्री जैन साहित्य प्रसारक कार्यालय हीराबाग गिरगाव बम्बई, वीर स २४५३
धर्मसग्रह,संस्कृत[वि स १७३१]	उपाध्याय श्री मानविजयजी	देवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड, बम्बई वीर स २४५१
धर्मबिन्दुप्रकरण संस्कृत	हरिभद्रसूरि (छठी शताब्दी) वृत्तिकार मुनि चद्राचार्य(वि १२वीं शताब्दी)	आगमोदय समिति वीर स २४५०
धर्मरत्नप्रकरण[वि स ११७१]	श्री शान्तिसूरि	आत्मानन्द जैन सभा भावनगर, वीर स २४५२
नदीसूत्र सटीक मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	देववाचक-क्षमाश्रमण [वीर की १० वीं शताब्दी] टीकाकार आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति, वि स १९८०
नयचक्र, प्राकृत	श्री देवसेनसूरि(वि दसवीं शताब्दी)	माणिकचद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति बम्बई, वीर स २४४६
नयप्रदीप संस्कृत	श्री यशोविजय गणी[१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर वीर स २४४५
नयोपदेश संस्कृत	श्री यशोविजय गणी[१७वीं १८वीं शताब्दी]	आत्मवीर सभा भावनगर, वीर स २४४५

संकेत	ग्रन्थनाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
नव	नवतत्त्व मूल प्राकृत हिन्दी भाषानुवाद सहित		श्री आत्मानंद जैन पुस्तक प्रचारक मंडल देहली वीर सं २४४२
नवपद	नवपद प्रकरण बृहद्वृत्ति मूल प्राकृत [वि सं १०७३] टीका संस्कृत [वि सं ११६५]	मूलकर्त्ता देवगुप्तसूरि टीकाकार यशोदेव उपाध्याय	देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई वीर सं २४५३
निर	निरयावलिकासूत्र मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार—श्रीचन्द्रसूरि	आगमोदय समिति वीर सं २४४८
निशी	निशीथसूत्र मूल प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	अनुवा. क.—श्री अमोलकऋषिजी महाराज [वि सं १९३४—]	राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी—ज्वालाप्रसादजी जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर सं २४४५
न्याय	न्यायसूत्र वात्स्यायनभाष्य तथा वृत्ति सहित संस्कृत	सूत्रकार-महर्षिगौतम भाष्यकार वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस सन् १९२० ई
न्याय को	न्यायकोष, संस्कृत	महामहोपाध्याय भीमाचार्य	गवर्नमेंट सेंट्रल बुकडिपो बम्बई, सन् १८९३ ई
न्याय द	न्यायदर्शनम् (न्यायसूत्रम्) संस्कृतभाष्य तथा वृत्तिसहित	सूत्रकार महर्षि गौतम भाष्यकार वात्स्यायनमुनि वृत्तिकार विश्वनाथ न्याय पंचानन भट्टाचार्य	जयकृष्णदास गुप्ता विद्या विलास प्रेस बनारस, सन् १९२० ई
न्याय दी	न्यायदीपिका संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्रीधर्मभूषण यति (सन् १६०० ई) अनुवादक—खूबचन्दजी	श्री जैन ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय बम्बई वीर सं २४३८

	ग्रन्थ	कर्ता	प्रकाशक
य प्र	न्यायप्रदीप, हिन्दी	साहित्यरत्न दरबारीलाल न्यायतीर्थ(विद्यमान)	साहित्यरत्न कार्यालय जुबिलीबाग तारदेव बम्बई, वि स १९८६
	पन्नवणा (प्रज्ञापना) मूल-प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार—आचार्य श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४४४
	पंचसंग्रह (चार भाग) मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	मूलकर्ता श्रीचन्द्रर्षि महत्तर टीकाकार-आचार्य श्री मलयगिरि	श्रावक हीरलाल हंसराज जामनगर, वि स १९६६
	पंच प्रतिक्रमण		श्री जैन श्वेताम्बर मित्र मंडल लायब्रेरी, घी वालों का रास्ता जयपुर, वीर सं २४५८
	पंच वस्तुक स्वोपज्ञवृत्ति संस्कृत मूल प्राकृत	श्रीहरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी]	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४५३
	पंचाशक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	श्री हरिभद्रसूरि [वि छठी शताब्दी] टीका श्रीअभयदेवसूरि[वि १०७२—११३५]	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर स २४३६
	पचीस बोल का थोकड़ा		श्रीभैरोंदान जेठमल सेठिया बीकानेर वीर स २४६६
	परमात्म प्रकाश मूल-प्राकृत टीका संस्कृत भाषा अनुवाद सहित	मूलकार-योगीन्द्रदेव, टीकाकार-ब्रह्मदेव[सोलहवीं शताब्दी] भाषा टीकाकार—पंडित दौलतरामजी	श्री परमश्रुतप्रभावक मंडल झवेरी बाजार बम्बई, वीर स २४४२
	पिंगलसूत्र(पिंगलच्छन्द सूत्रम्)संस्कृत(पंचमावृत्ति)	श्री पिंगलाचार्य	श्री जानकीनाथ शर्मा संस्कृत विद्यालय निवेदिता लेन कलकत्ता

संकेत	ग्रन्थनाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
पिं.नि.	पिण्डनिर्युक्ति मूल प्राकृत टीका संस्कृत	श्री भद्रबाहुस्वामी टीकाकार आचार्य श्रीमलयगिरि	श्री देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्ड बम्बई वीर सं २४४४
पिं.वि.	पिण्डविशुद्धि मूल प्राकृत टीका-संस्कृत [वि सं ११७८]	मूल श्रीजिनवल्लभसूरि टीकाकार श्रीचन्द्रसूरि	आचार्य श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी जैन ग्रन्थमाला सूरत वीर सं २४६५
पी प	पीस एण्ड परसनेलिटी	प्रोफेसर जगदीश मित्र	लाहौर
पुरुषा	पुरुषार्थ दिग्दर्शन (हिन्दी)	श्रीविजय धर्मसूरि	प्रकाशक सेठ नरसिंहदास यशोविजय जैन ग्रन्थमाला हरिसोन भावनगर सन् १९२२ ई
प्र	प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार संस्कृत रत्नाकरावतारिका टीका सहित	श्रीवादिदेवसूरि (वि सं ११४३-१२२६) टीकाकार रत्नप्रभसूरि (वि १३ वीं शताब्दी)	हरषचन्द भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस वीर सं २४३७
प्रतिमा	प्रतिमाशतक लघुवृत्ति सहित मूल प्राकृत	न्यायविशारद न्यायाचार्य श्रीयशोविजयजी (वि १७वीं १८वीं शताब्दी) वृत्तिकार श्रीभावप्रभसूरि	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर वीर सं २४४१
प्र मी	प्रमाणमीमांसा संस्कृत स्वोपज्ञ वृत्ति सहित	श्री हेमचन्द्राचार्य [वि सं ११४५ १२२९]	मोतीलाल लाधाजी १९६ भवानीपेठ पूना वीर सं २४५२
प्र र	प्रकरण रत्नाकर (चार भाग) संस्कृत प्राकृत तथा भाषा के अनेक ग्रन्थों का संग्रह		भीमसी माणक बम्बई [वि सं १९३२ १९६८]

प्रवचन सारोद्धार मूल प्राकृत, टीका संस्कृत(वि स १२४८)	मूलकर्ता श्रीनेमिचंद्रसूरी(वि बारहवीं शताब्दी) टीकाकार-सिद्धसेनसूरीश्वर(वि तेरहवीं शताब्दी)	श्रीदेवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई, वीर स २४४८
प्रशस्तपाद भाष्य		
प्रश्न व्याकरण सूत्र,मूल प्राकृत, टीका संस्कृत	टीकाकार श्री अभयदेवसूरि (वि स १०७२–११३५)	आगमोदय समिति, वीर स २४४५
प्रश्नोत्तर सार्धशतक (वि स १८५१)	उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणी	सेठ फकीरचन्द घेलाभाई सूरत, (वि स १९७३)
प्रकरण संग्रह दूसरा भाग हिन्दी (२७ थोकडों का संग्रह)	संग्रहकार-मुनिश्रीउत्तमचन्दजी स्वामी (वि सं १९१० १९७६)	सेठ भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४५०
प्राकृत व्याकरण संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि स ११४५-१२२९)	श्री मोतीलाल लाधाजी १९१ भवानी पेठ पूना, सन् १९२८ई
बृहत्कल्पसूत्रनिर्युक्तिभाष्य वृत्ति सहित मूल, निर्युक्ति और भाष्य प्राकृत, वृत्ति संस्कृत [पांच भाग प्रकाशित]	मूल एवं निर्युक्तिकर्ता-भद्रबाहुस्वामी (वीर की पहली दूसरी शताब्दी), भाष्यकार संघदास गणी क्षमाश्रमण,वृत्तिकार-मलयगिरि तथा क्षेमकीर्ति आचार्य,सम्पादक मुनि चतुरविजयजी पुण्यविजयजी	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर, वीर स २४५९ २४६५
श्रीबृहत्कल्प सूत्र मूल प्राकृत गुजराती शब्दार्थ भावार्थ सहित	भाषान्तर्ता- डा जीवराज घेलाभाई दोशी	डा जीवराज घेलाभाई दोशी अहमदाबाद, वि स १९७१
बृहत्होड़ा चक्र		गग एन्ड कम्पनी खारी बावली देहली

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
ब्रह्म	ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य भामती वेदान्त कल्पतरु और कल्पतरु परिमल सहित संस्कृत	भाष्यकार श्रीशंकराचार्य भामतीटीका वाचस्पतिमिश्र वेदान्त कल्पतरु श्री अमलानन्द सरस्वती कल्पतरु परिमल श्री अप्पय दीक्षित	तुकाराम जावजी मुंबई, सन् १९१७ ई
भ	भगवती (व्याख्याप्रज्ञप्ति)सूत्र सटीक मूल प्राकृत-टीका संस्कृत (वि० ११२८) भाग ३	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि० सं० १०७२ ११३५)	श्री आगमोदय समिति, वीर सं २४४४ २४४७
भरत	भरतेश्वरबाहुबलि वृत्ति (दो भाग) मूल प्राकृत, वृत्ति-संस्कृत	वृत्तिकार शुभशील गणी (१५वीं १६ वीं शताब्दी)	देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड बम्बई वीर सं २४५८ २४६१
भावना	भावनाशतक मूल भावार्थ और विवेचन सहित मूल संस्कृत भावार्थ और विवेचन गुजराती	शतावधानी श्री रत्नचंद्रजी महाराज [वि सं १९३६ १९९८]	वृन्दावनदास दयाल कोट बाजार मुंबई, वीर सं २४४७
यो	योगशास्त्र स्वोपज्ञ विवरण सहित संस्कृत	श्री हेमचन्द्राचार्य (वि० सं० ११४५ १२२९)	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर, वीर सं २४५२
योग	योगदर्शन संस्कृत, भाष्य तथा व्याख्या सहित	सूत्रकार महामुनि पातञ्जलि भाष्यकार-महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्याख्याकार-श्रीमद् वाचस्पति मिश्र	एच डी गुप्ता एंड सन्स, चौखम्बा संस्कृत बुकडिपो बनारस, सन् १९११ ई
रत्ना	रत्नाकरावतारिका प्रमाणनय तत्त्वालोकालंकार (टीका) संस्कृत	श्री रत्नप्रभसूरि (वि० तेरहवीं शताब्दी)	हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द शेठ (?) मूलचन्द भूराभाई धर्माभ्युदय प्रेस बनारस, वीर सं २४३७

रा	राजप्रश्नीय सूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार श्रीमलयगिरि	आगमोदय समिति वीर स २४५१
राज	सती राजमती हिन्दी	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों में से	श्री हितेच्छु श्रावक मंडल रतलाम, वीर स २४६२
ायो	राजयोग, गुजराती (दो भाग)	स्वामी विवेकानन्द (सन् १८६३-१९०२ ई)	डाह्याभाई रामचन्द्र महता अहमदाबाद, सन् १९२१ ई
ोक	लोकप्रकाश संस्कृत गुजराती अनुवाद	उपाध्याय विनयविजयजी [१७वीं १८वीं शताब्दी] अनुवादक श्रावक हीरालाल हंसराज	प श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर, वि स १९६७
	विपाकसूत्र सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि [वि स १०७२-११३५]	आगमोदय समिति वीर स २४४६
	विशेषावश्यकभाष्य प्राकृत टीका-संस्कृत (वि स ११७५)	भाष्यकर्ता श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण टीकाकार मलधारि श्रीहेमचन्द्रसूरि	हर्षचंद्र भूराभाइ बनारस वीर स २४४१
	विहरमान एकविंशति		
त	वेदान्त परिभाषा		
	व्यवहार सूत्र, मूल प्राकृत हिन्दी अनुवाद सहित	हिन्दी अनुवादक-श्रीअमोलकऋषिजी (वि स १९३४-)	राजा बहादुर लाला सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौहरी महेन्द्रगढ़, वीर स २४४५

संकेत	ग्रंथनाम, भाषा व काल	ग्रंथकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
व्यव चू	व्यवहार चूलिका(हस्तलिखित) टब्बार्थ (वि स १६४४ पौष सुदी १५ शनिवार की लिखी हुई)		श्री महिया जैन शास्त्र भण्डार बीकानेर
व्यव भा	व्यवहार भाष्य नियुक्ति विवरण सहित मूल नियुक्ति और भाष्य प्राकृत, टीका संस्कृत (दस भाग)	नियुक्तिकार श्रीभद्रबाहुस्वामी टीकाकार श्रीमलयगिरि	वकील केशवलाल प्रेमचंद अहमदाबाद वि स १९८२-८४
शा	शान्तसुधारस प्रथम द्वितीय भाग मूल संस्कृत विवेचन गुजराती [वि सं १७२३]	मूलकर्त्ता-उपाध्याय श्रीविनयविजयजी विवेचक मोतीचंद गिरधरलाल कापडिया	श्री जैन धर्म प्रसारक सभा भावनगर वि सं १९९४-९५
शास्त्र	शास्त्र दीपिका व्याख्या सहित संस्कृत	सर्वतंत्रस्वतंत्र श्रीमत्पार्थसारथि मिश्र व्याख्याकार श्री रामकृष्ण श्रीसोमनाथ	तुकाराम जावजी निर्णयसागर प्रेस २३ कालबादेवी रोड बम्बई ता. १९१५ ई
शिक्षा	श्रावक के चार शिक्षाव्रत	पूज्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के व्याख्यानों के आधार पर	श्री हितेच्छु श्रावक मंडल रतलाम वीर सं २४६३
श्राद्ध	श्राद्धविधि प्रकरण स्वोपज्ञवृत्तियुक्त [वि स १५०६]	श्री रत्नशेखरसूरि (वि सं १४५७-१५१७)	श्रावक हीरालाल हंसराज जामनगर वीर सं २४४३
श्राद्ध प्रति	श्राद्ध प्रतिक्रमण(वन्दित्तु सूत्र) मूल प्राकृत टीका-संस्कृत	टीकाकार श्रीरत्नशेखरसूरि (वि सं १४५७-१५१७)	देवचंद लालभाई जैनपुस्तकोद्धारक फंड झवेरीबाजार बम्बई वीर सं २४४५

श्रावक प्रज्ञप्ति, मूल प्राकृत टीका-सस्कृत	मूलकर्ता—वाचकमुख्य श्रीउमास्वाति टीकाकार श्रीहरिभद्रसूरि [छठी शताब्दी]	ज्ञान प्रसारक मंडल बम्बई, वि स १९६१
श्रावक प्रतिक्रमण[हिन्दी और प्राकृत]		श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर, वीर स २४६५
षड्भाषाचन्द्रिका, सस्कृत सगीतशास्त्र	प लक्ष्मीधर	राजकीय ग्रन्थमाला बम्बई, सन् १९१६ ई
सप्तभगीतरगिणी, सस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	मूलकर्त्ता श्री विमलदास अनुवादक-ठाकुरप्रसाद शर्मा	श्री परमश्रुत प्रभावक मंडल बम्बई, वीर स २४४१
समवायांग सूत्र सटीक, मूल प्राकृत टीका सस्कृत [वि स ११२०]	टीकाकार श्रीअभयदेवसूरि (वि स १०७२-११३५)	आगमोदय समिति, वीर स २४४४
समयसार, आत्मख्याति टीका तथा गुजराती अनुवाद सहित	श्री कुन्दकुन्दाचार्य [वि पहली शताब्दी] टीकाकार-अमृतचन्द्राचार्य(वि १०वीं शताब्दी) अनुवादक—हिम्मतलाल जेठालाल शाह	श्री जैन अतिथि सेवा समिति सोनगढ़ काठियावाड़, [वि स १९९७]
सम्मति तर्क प्रकरण, मूल प्राकृत टीका-सस्कृत [पांच भाग]	मूलकर्त्ता आचार्य श्रीसिद्धसेन दिवाकर[पहली शताब्दी] टीकाकार श्री अभयदेवसूरि सम्पादक प सुखलाल बेचरदास (विद्यमान)	गुजरात पुरातत्त्व मंदिर अहमदाबाद, वि स १९८०
सरल पिंगल, हिन्दी वि स १९७४	श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी, विशारद, श्री लक्ष्मीधर शुक्ल विशारद	हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, वि स १९८४

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थ कर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान व समय
सर्व द	सर्व दर्शन संग्रह संस्कृत	श्री माधवाचार्य	जीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य कलकत्ता, सन् १८८९ ई
स श	सत्ततिशत स्थान प्रकरण [सत्तरिसय ठाणावृत्ति] मूल प्राकृत (वि स १३८७) टीका-संस्कृत (वि स १६७)	मूलकर्त्ता श्री सोमतिलकसूरि टीकाकार श्री देवविजय	श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर वीर स २४४५
सांख्य	सांख्यतत्त्व कौमुदी संस्कृत हिन्दी अनुवाद सहित	श्री ईश्वरकृष्ण	नवलकिशोर प्रेस लखनऊ सन् १८८८ ई
साधु प्र	साधु प्रतिक्रमण सूत्र		श्री भैरोंदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर वीर स २४४९
सि	सिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजी दीक्षित	तुकाराम जावजी बम्बई
सि मु	सिद्धान्त मुक्तावलि	श्री विश्वनाथ पंचानन भट्टाचार्य	पाण्डुरंग जावजी निर्णयसागर प्रेस कोलभाट लेन बम्बई सन् १९१४ ई
सूय	सूयगडांग (सूत्रकृतांग) सूत्र मूल प्राकृत टीका संस्कृत वि स ९३३	टीकाकार श्री शीलांकाचार्य (वि दसवीं शताब्दी)	श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४३
सूर्य	सूर्यप्रज्ञप्ति सटीक मूल प्राकृत टीका संस्कृत	टीकाकार आचार्य श्री मलयगिरि	श्री आगमोदय समिति, वीर स २४४५

संकेत	ग्रन्थ नाम, भाषा व काल	ग्रन्थकर्त्ता और उसका काल	प्रकाशन का स्थान और समय
सेन	सेनप्रश्न (प्रश्नरत्नाकराभिध श्री सेन प्रश्न) सस्कृत (वि १७वीं शताब्दी)	संग्रहकर्त्ता श्रीशुभविजय गणी (विजयसेन सूरि को पूछे हुए प्रश्नों के उत्तरों का संग्रह)	श्रीदेवचद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फड बम्बई, वीर स २४४५
स्या	स्याद्वादमजरी, सस्कृत (वि स १३४९)	श्री मल्लिसेनसूरि	श्री मोतीलाल लाधाजी १९१ भवानी पेठ पूना, वीर स २४५२
हठ.	हठयोगदीपिका, गुजराती	मूल स्वात्माराम योगीन्द्र, भाषाटीका वेदान्त कवि हीरालाल जादवराय बुच	महादेव रामचद्र जागुष्टे बुकसेलर अथा दरवाजा अहमदाबाद, वि स १९७१
हि फि	(हिस्ट्री ऑफ) इडियन फिलॉसोफी, दो भाग, अग्रेजी	डा एस राधाकृष्णन	मेक्मिलिन कम्पनी, सन् १९३१ई
हीर	हीर प्रश्न (प्रश्नोत्तर समुच्चय) सस्कृत	संग्रहकर्ता—कीर्तिविजय गणी (वि १७वीं शताब्दी) (श्री हीरविजयसूरि को पूछे गये प्रश्नो के उत्तरो का सग्रह)	जेसगलाल छोटालाल सुतरीया अहमदाबाद, (श्रीहंसविजय जैन लायब्रेरी) वीर स २४४६

अध्ययनादि के संकेत

संकेत	पूरा नाम	किस किस ग्रन्थ में है.—
अ०	अध्ययन	आवश्यक, आचारांग उत्तराध्ययन, उपासकदशा ज्ञाताधर्मकथा, दशवैकालिक विपाकसूत्र सूयगडांग अ तगडदशासूत्र अणुत्तरोववाई आदि
अधि	अधिकार	धर्मसंग्रह
अध्या	अध्याय	तत्त्वार्थसूत्र द्रव्यानुयोग तर्कणा
आ	आह्निक	प्रमाणमीमांसा न्यायसूत्र
उ	उद्देशा	सूयगडांग भगवती, निशीथसूत्र बृहत्कल्पसूत्र व्यवहारसूत्र ठाणांगसूत्र आचारांग सूत्र
उल्ला	उल्लास	सेनप्रश्न
का	कारिका	स्याद्वादमंजरी
कांड	काण्ड	सम्मति तर्क
गा	गाथा	आगमों में तथा व्यवहारभाष्य, विशेषावश्यकभाष्य हरिभद्रीयावश्यक मलयगिरि आवश्यक परमात्मप्रकाश
चू	चूलिका	आचारांगसूत्र दशवैकालिकसूत्र
टी	टीका	
द	दशा	दशाश्रुतस्कन्धदशा
द्वा	द्वार	प्रवचनसारोद्धार पंचसंग्रह, पंचवस्तुक, प्रश्नव्याकरणसूत्र (आश्रवद्वार और संवरद्वार) नवपद प्रकरण

नि	निर्युक्ति	आचारांग, सूयगडांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक, व्यवहारसूत्र, ओघनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति
प	पद	पन्नवणासूत्र
पर्व	पर्व	त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र
परि	परिच्छेद	रत्नाकरावतारिका
प्रक	प्रकरण	ज्ञानार्णव
प्रका	प्रकाश	योगशास्त्र, हीरप्रश्न, श्राद्धविधिप्रकरण
प्रति	प्रतिपत्ति	जीवाजीवाभिगम
प्रा	प्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
प्रा प्रा	प्राभृतप्राभृत	चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति
भा	भाग	कर्मग्रन्थ, कर्तव्यकौमुदी
व	वर्ग	निरयावलिका, अणुत्तरोववाई, अन्तगडदशा
वक्ष	वक्षस्कार	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
विव	विवरण	पचाशक
श	शतक	भगवती
श्लो	श्लोक	
श्रु	श्रुतस्कन्ध	आचारांगसूत्र, सूयगडांगसूत्र
स	सर्ग	
सू	सूत्र	ठाणांगसूत्र, समवायांगसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र, रत्नाकरावतारिका

श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह

आठवाँ भाग

जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों का विषय कोष

मंगलाचरण

आसाढे धवलाइ छट्ठि चवण चित्तस्स तेरस्सिए ।
सुद्धाए जणणं सुकिएह दसमी, दिक्खा य मग्गस्सिरे ॥
जस्सासी वइसाह सुद्ध दसमी, णाणं जणाणदणं ।
मुक्खो कत्ति अमावसाइ तमहं, वदामि वीरं जिणं ॥

भावार्थ-आषाढ़ सुदी छठ को देवलोक से चव कर चैत सुदी त्रयोदशी को जिसने जन्म धारण किया, मगसिर वदी दशमी को जिसने लोक कल्याण के लिये दीक्षा अङ्गीकार की, वैशाख सुदी दशमी को जिसे लोक को आनन्द देने वाला पूर्ण ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हुआ एवं अन्त में कार्तिक मास की अमावस्या के दिन जिस का निर्वाण हुआ ऐसे श्री वीर भगवान् को मैं वन्दना करता हूँ ।

[1] श्रुतज्ञान का भेद। [2] आहार का दोष। [3] शरीर को न खुजलाने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] अकर्मांशस्नातक	३७१	१	३८६	ठा ५ उ ३ सू ४४५, भ श २५ उ ६ सू ७५१
[2] अकस्माद्भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९,सम ७
अकाममरण	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
अकाममरणीय अध्ययन की बत्तीस गाथाएं	६७२	७	८६	उत्त अ ५
अकारण दोष (आहार का दोष)	३३०	१	३४०	उत्त अ २४ गा १२ टी, उत्त अ २६ गा ३२, प्रवि ३ श्लो २१ टी, पिं नि गा ६६१ से ६६८
अकाल (काल का भेद)	४३१	२	३८	विशे गा २०७८ से २०७०
अकिंचनत्व (परिग्रह त्याग	६६१	३	२३४	नव गा २३, सम १०,शा भा १ प्रक ८(संवरभावना)
[3] अकृत्स्ना आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ५ उ १ सू ४३३,सम २८
अक्रियावादी आठ	५६१	३	६०	ठा ८ उ ३ सू ६०७
अक्रियावादी की व्याख्या और उसके चौरासी भेद	१६१	१	१४५	भ श ३० उ १ सू ८२४ टी आचा अ १ उ १ सू० ३ टी, सूय० अ० १२
अक्षर का क्या अर्थ है?	६१८	६	१३८	बृ गा ७२ से ७६,न सू० १, ४१ टी बृ ६३,२०१
अक्षर श्रुत	८२२	५	३	न सू० ३६, विशे० गा० ४६५ ५००,कर्म भा १ गा ६
अक्षर श्रुत	६०१	६	३	कर्म भा १ गा० ७

१ निर्ग्रन्थ का भेद । २ यकायक होनेवाला भय । ३ प्रायश्चित्त विशेष ।

---

१ श्रुतज्ञान का भेद । २ अजीवपरिणाम का भेद । ३ बादर वनस्पतिकाय का भेद । ४ निर्ग्रन्थ का भेद ।

१ संयम की घात करने वाला एक दोष। २ साधु के कल्प का एक भेद।
३ स्नातक निर्ग्रन्थ का एक भेद।

[1] अज्ञात घरों में गोचरी करने वाला साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अठाईस प्रकृतियाँ मोहनीय कर्म की	६५१	६	२८४	कर्म भा १ गा १३-२२, सम० २८
अठाईस भेद मतिज्ञान के	६५०	६	२८३	सम २८,कर्म भा १ गा ४-५
अठाईस लब्धियाँ	६५४	६	२८६	प्रव द्वा २७० गा १४६२ १५०८
अठारह कल्प साधु के	८६०	५	४०२	दश अ ६ गा ७ स १८, सम० १८
अठारह गाथा क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन की	८९७	५	४१६	उत्त. अ ६
अठारह गाथा दशवैकालिक प्रथम चूलिका की	८९८	५	४२०	दश चू १
अठारह दोष दो प्रकार से जो अरिहन्त में नहीं होते	८८७	५	३९७	प्रव द्वा ४१ गा ४५१ ५२, स शद्वा ६६ गा १९१ १९२
अठारह दोष पौषध के	८९४	५	४१०	शिक्षा०
अठारह द्वार गतागत के	८८८	५	३९८	पन्न. प ६ के आधार से
अठारह पापस्थानक	८९५	५	४१२	ठा १ सू ४८, प्रव.द्वा २३७ गा १३५१-१३५३, भ श १ उ ६, भ श १२ उ ५, सू ४५०,दशा द ६
अठारह पुरुष दीक्षा के अयोग्य	८९१	५	४०६	प्रव द्वा १०७ गा ७९० ९१ ध अधि ३ श्लो ७८ टी पृ ३
अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य	८९२	५	४१०	सम १८ प्रव द्वा १६८ गा १०६१
अठारह प्रकार की चोर की प्रसूति	८९६	५	४१५	प्रश्न अधर्मद्वार ३ सू.१२टी

१ रोगी साधु की सेवा करने वाला साधु।

२ द्रव्यानुयोग का भेद वस्तु के अयथार्थ स्वरूप का व्याख्यान।

१ अतिथिदान की प्रशंसा करके भिक्षा चाहने वाला।

१ आहार का दोष २ श्रुतज्ञान का एक भेद ३ वह ज्ञान, जिसमें वस्तु के स्वरूप का निश्चय नहीं होता।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनानुपूर्वी प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ ३ सू ५०३ उत्त अ गा
अननुयोग के दृष्टान्त बारह	७८०	४	२३८	आव अ १ गा १ ... वृ नि गा १७११७
अनन्त आठ	६४०	३	१४७	अनु सू १४८
अनन्तक दस	७००	३	४०२	ठा १० उ ३ सू ७३१
अनन्तक पाँच	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
अनन्तक पाँच	४१८	१	४४२	ठा ५ उ ३ सू ४६२
अनन्त छह	४८८	२	१००	अनु सू १४८ गा, प्रव द्वा ५६ गा १४ ४
अनन्त जीविक वनस्पति	७०	१	५१	ठा ३ उ १ सू १४१
अनन्तमिश्रितासत्यामृषा	६६६	३	३७१	ठा १० उ ३ सू ७४१ पन्न प ११ सू १६५ धर्म अधि २ श्लो ४१ टी पृ १
अनन्तरागत सिद्ध[1]	९७६	७	६६	न सू २ टी पृ १२५
अल्पबहुत्व के तेतीस बोल				
१ अनन्तरागम	८३	१	६१	अनु सू १४४
अनन्त संसारी	८	१	६	आतु गा ६२ गा ६३ ठा १ सू ७८
अनन्तानुबन्धी कषाय	१५८	१	११८	पन्न प १४ सू १८८ ठा ४ सू २४६ कर्म भा १ गा १७ १८
अनभीप्सित साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४६	२	२९२	रत्ना परि ६ सू ४५
अनर्तित प्रतिलेखना	४४८	२	५३	ठा ६ उ ३ सू ५०३, उत्त अ २६ गा २५

[1] आगम का एक भेद

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनर्थ दण्ड	३६	१	२३	ठा २ उ १ सू ६६
अनर्थदण्ड विरमण व्रत	१२८(ख)	१	६१	भाव ह अ ६ पृ ८२६
अनर्थ दण्ड विरमणव्रत के पाँच अतिचार	३०८	१	३०७	उपा अ १सू ७, आव ह अ ६ पृ ८२६,प्रव द्वा ६ गा २८२
अनर्थदण्ड विरमण व्रत निश्चय और व्यवहार से	७६४	४	२८३	आगम
अनवकांक्षाप्रत्ययाक्रिया	२९५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६० ठा ५ उ सू ४१६, आव ह अ ४ पृ ६१४
अनवस्था दोष	५६४	३	१०३	प्र मी अध्या १ आ १ सू ३३
अनशन	४७६	२	८५	उत्त अ ३० गा ८,ठा ६ उ ३ सू ५११, उव सू १०,प्रव द्वा ६ गा २७०
अनशन इत्वरिक के छः भेद	४७७	२	८७	उत्त अ ३० गा १०-११, भ श २५ उ ७ सू ८०२
अनशन के दो भेद और उनके प्रभेद	६३३	३	१८५	उव सू १६, भ श २५ उ ७ सू ८०२
अनाचार	२४४	१	२२१	पि नि गा १८२, ध अधि ३ श्लो ४३ टी पृ १३६
अनाचीर्ण बावन साधु के	१००७	७	२७२	दश अ ३
अनात्मभूत लक्षण	६२	१	४३	न्याय दी प्रका १
अनात्मवान् के लिये अहितकर स्थान छः	४५८	२	६१	ठा ६ उ ३ सू ४६१
अनाथता की पन्द्रह गाथाएं	८५४	५	१३०	उत्त अ २० गा ३८-५२
अनाथीमुनि अशरण भा	८१२	४	३७६	उत्त. अ २०
अनाथी मुनि की कथा	८५४	५	१३०	उत्त. अ २०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनादि श्रुत	८२७	५	८	नंसू ४४ विशे गा ५३७ ५४८
अनादि सिद्धान्त नाम	७१६	३	३६८	अनु. सू १३०
अनानुपूर्वी	११६	१	८४	अनु. सू ९६ ९७ ९८
अनाबाध सुख	७६६	३	४५५	ठा १० उ ३ सू ७३७
अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३९, कर्म भा ४ गा ५१
अनाभोग आगार	४८३	२	९७	भग ७ श ६ पृ ५८२ प्रव द्वा ४ गा २०३ टी
अनाभोग निवर्तित क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ १ सू २४९
अनाभोग प्रत्यया क्रिया	२९५	१	२८१	ठा २ उ १ सू ६० ठा ५ उ २ सू ४१९ आव ह अ ४ पृ ६१२
अनाभोग बकुश	३६८	१	३८३	ठा ५ उ ३ सू ४४५
अनाभोगिक मिथ्यात्व	२८८	१	२६७	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३९, कर्म भा ४ गा ५१
अनासक्ति पर नौ गाथाएं	९९४	७	२०५	
अनाहारक	८	१	७	ठा १ उ १ सू ७६
अनित्थस्थ संस्थान	४६९	२	६९	भ श २५ उ ३ सू ७२४
अनित्य भावना	८१२	४	३५६	शा भा १ प्रक १ भावना, ज्ञान प्रक २ प्रव द्वा ६७ गा ५७२ तत्त्वार्थ अध्या ९ सू ७
अनिदानता	७६३	३	४४४	ठा १० उ ३ सू ७५८
अनियट्टि (अनिवृत्ति) बादर सम्पराय गुणस्थान	८४७	५	८०	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
अनिवृत्तिकरण	७८	१	५७	आव म गा १०६-७ टी आगम विशे गा १२०२ १८, प्रव द्वा २२४ गा १३०२ टी, कर्म भा २ गा २

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ अनिसृष्ट दोष	८६५	५	१६४	प्रव द्वा६७ गा ५६६,ध अधि ३ लो २२टी पृ ३८ पिं नि गा ६३२ पिं वि गा ४ ८चा,१३गा ६
२ अनिह्नवाचार	५६८	३	६	ध अधि १ श्लो १६ टी पृ १८
अनीक	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
अनुकम्पा	२८३	१	२६४	ध अधि २श्लो २ टी पृ ४३
अनुकम्पादान	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५
अनुकम्पा प्रत्यनीक	४४५	२	५०	भ श ८ उ ८ सू ३३६
अनुगामी अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६ उ ३सू ५२६,नसू ८ १०
अनुतट भेद	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू ७१३ टी, पन्न. प ११ सू १८५
अनुत्तर दस केवली के	६५५	३	२७३	ठा १० उ ३ सू ७६३
अनुत्तर पाँच केवली के	३७६	१	३६१	ठा ५ उ १ सू ४१०
अनुत्तर विमान पाँच	३६६	१	४२०	पन्न. प १ सू ३८, भ श १४ उ ७ सू ५२६
अनुत्तर विमान में उत्पन्न जीव क्या नरक तिर्यञ्च के भव करता है?	६८३	७	११२	पन्न. प १५ उ २ टी पृ ३१६
अनुत्तर विमानवासी देव शङ्का होने पर किसे पूछते हैं और कहाँ से?	६८३	७	१०३	भ श ५ उ ४ सू १८६
अनुत्पन्न उपकरणोत्पा दनता विनय	२३५	१	२१६	दशा ४ ४

१ आहार का एक दोष। २ ज्ञानाचार का भेद। ३ सैनिक देव अथवा सेनानायक देव।

१ सीखे हुए सूत्रार्थ का बार बार मनन करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अनुयोग द्वार सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	२०४	१	१७६	
अनुयोग श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा ७
अनुयोग समास श्रुत	६०१	६	४	कम भा १ गा ७
अनुस्रोतचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
अनुस्रोतचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ ३ सू ४५३
अनृद्धिप्राप्त आर्य के भेद	६५३	३	२१६	पन्न प १ सू ३७
अनेकरूपधुना प्रमाद प्रतिलेखना	५२१	२	२५१	उत्त. अ २६ गा. ७
अनेकवादी	५६१	३	६१	ठा ८ उ ३ स ६०७
अनेक सिद्ध	८४६	५	१२०	पन्न. प १ सू ७
अनेकान्तवाद पर आठ दोष और उनका वारण	५६४	३	१०२	प्रमा अध्या १ आ १ सू २८टी
अनैकान्तिक हेत्वाभास	७२२	३	४१०	ठा १० उ ३ स ७४३ टी.
अन्तःशल्य मरण	८७६	५	३८३	सम १७,प्रवद्वा १५७गा १००६
अन्तक्रियाएं चार	२५४	१	२३७	ठा ४ उ १ स २३५
अन्तगडदसांग सूत्र का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७६	४	१६१	
अन्तचरक	३५२	१	३६७	ठा ५ उ १ सू ३९६
अन्तचारी भिक्षु	४११	१	४३७	ठा ५ उ ३ सू ४५३
अन्तचारी मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५ उ ३ स ४५३
अन्तरद्वीप छप्पन	१०११	७	२७७	पन्न.प १सू ३७टी,प्रव द्वा २६ गा १४३० १४३१,जीप्रति ३ सू १०८ ११२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
अन्तर द्वीपिक	७१	१	५२	? ३ प्र १ सू ११० प्रज्ञा १ सू ३७ जी प्रति ३ सू १०८
अन्तर नरयों का	५६०	३	३४१	भ श १४ उ ८ सू ५ ४
अन्तरात्मा	१२५	१	८६	परमा गा १४
अन्तराय कर्म और उसके भेद	५६०	३	८१	कर्म भा १ गा ५२, पन्न. प. २३ सू २९३ २९६, तत्त्वार्थ अ ८ सू १४
अन्तराय कर्म का अनुभाव	५६०	३	८२	पन्न प २३ सू २९२
अन्तराय कर्म के पाँच भेद व्याख्या सहित	३८८	१	४१०	कर्म भा १ गा ५२, पन्न प २३ सू २९३
अन्तराय कर्म के बन्ध के कारण	५६०	३	८३	भ श ८ उ ९ सू ३५१
अन्ताहार	३५६	१	३७१	ठा ५ उ १ सू ३९६
अन्तोसन्न मरण	७६८	४	२६६	भ श २ उ १ सू ९१
अन्त्यकाश्यप(महावीर)	७७०	४	६	जैन विद्या वोल्यूम १ नं १
१ अन्नइलायचरक	३५३	१	३६८	ठा ५ उ १ सू ३९६
अन्नपुण्य	६७७	३	१७२	ठा ९ उ ३ सू ६७६
अन्यत्व भावना	८१२	४	३६४, ३८२	शा भा १ प्र ५ भावना, इन्द्रि प्र २, प्रवद्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या ९ सू ७
अन्यलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न प १ सू ७
अपनी ओर से किसी को भय न देना ही क्या अभयदान का अर्थ है?	९८३	७	१३१	गच्छा प्रकि टी सूय श्रु १ गा २३ टी

१ अभिग्रह विशेष धारण करने वाला मुनि।

1 ज्ञान दर्शन चारित्र की विराधना न करना। 2 जीव का परिणाम विशेष।

१ ठण्ड और गर्मी के परिषह को सहन करने वाला अभिग्रह धारी साधु ।

[1] अपकीर्ति का भय ।

१ एक समय में उत्कृष्ट अवगाहना वाले १०८ जीवों का सिद्ध होना।

१ शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु।

आ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आचारांगसूत्र के नवें अ० के चौथे उ० की १७ मूल गाथाएं	८७८	५	४८४	आचा श्रु १ अ ६ उ ४
आचारांग सूत्र के नवें अ० तीसरे उ० की सोलह गाथाएं	८७४	५	४८२	आचा श्रु १ अ ६ उ ३
आचारांग सूत्र नवें अ० के दूसरे उ० की १६ मूल गाथाएं	८७४	५	४८१	
आचारांग सूत्र के नवें अ० के पहले उ० की तेईस गा०	६२२	६	१६६	आचा श्रु १ अ ६ उ १
आचारांग सूत्र प्रथम श्रुत स्कन्ध के इकावन उद्देशे	१००५	७	२७१	सम ५१
आचार्य	२७४	१	२५२	भ मंगलाचरण
आचार्य उपाध्याय के गच्छ में पाँच कलह स्थान	३४४	१	३५५	ठा ५ उ १ सू ३६६
आचार्य उपाध्याय के गण से निकलने के पाँच कारण	३४३	१	३५४	ठा ५ उ २ सू ४३६
आचार्य उपाध्याय के विशिष्ट पाँच अतिशय	३४२	१	३५३	ठा ५ उ २ सू ४३८
आचार्य उपाध्याय के सात संग्रह स्थान	५१४	२	२४२	ठा ५ उ १ सू ३६६, ठा ७ उ ३ सू ५४४
आचार्य की ऋद्धि के ३ भेद	१०२	१	७१	ठा ३ उ ४ सू २१४
आचार्य के छः कर्त्तव्य	४५१	२	५५	ठा ७ उ ३ सू ५७० टी
आचार्य के छत्तीस गुण	६८२	७	६४	प्रव द्वा ६४ गा ५४१ ५४६
आचार्य के तीन भेद	१०३	१	७२	रा सू ७७
आचार्य के पाँच प्रकार	३४१	१	३५२	ध अधि ३ श्लो ४६ टी पृ ११८
आचार्य पदवी	५१३	२	२३६	ठा ३ उ ३ सू १७७ टी

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ कर्म	५९०	३	४३	विशे गा १९०६ १९४८, तत्त्वार्थ अध्या ८,कर्म भा १, भ श ८उ ९सू ३५१,भ श १ उ ४,उत्त अ ३३, पन्न. प २३, द्रव्य लो स १०
आठ कर्मों का क्षय करने वाले महात्मा यहाँ की स्थिति पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?	९८३	७	११७	उव सू ४१
आठ कर्मों की स्थिति	५९०	३	४३	९०पन्न प २३ सू २९४,तत्त्वार्थ अध्या ८सू १५से २१,उत्त अ ३३
आठ कर्मों के अनुभाव	५९०	३	४३	९०पन्न प २३ सू २९२
आठ कर्मों के बन्ध के कारण	५९०	३	४३	९०भ० श० ८ उ० ९ सू० ३५१
आठ कर्मों के भेद प्रभेद	५९०	३	४३	९०पन्न० प २३ सू २९३,उत्त अ ३३ कर्म भा १,तत्त्वार्थ अध्या ८सू ५ १४
आठ कारण झूठ बोलने के	५८२	३	३७	साधु प्र महाव्रत २
आठ कृष्ण राजि	६१६	३	१३३	ठा ८उ ३सू ६२३,भ श ६उ ५ सू २४२, प्रव द्वा २६७ गा १४४१ से १४४४
आठ गण	५९६	३	१०८	गणित, व
*आठ गणधर पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८ उ ३ सू ६१७,सम ८

* ठाणांग सूत्र एवं समवायांग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गणधर बतलाये हैं किन्तु हरिभद्रीयावश्यक गाथा २९६ से २९९ में, प्रवचन सारोद्धार द्वार १५ में तथा सत्तरिसय ठाणा वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर होना बतलाया है। ठाणांग और समवायांग के टीकाकार श्री अभयदेवसूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामञ्जस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह खुलासा किया है कि अल्प आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर बतलाये हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आठ कर्म	५६०	३	४३	विशे गा १६०६ ११७४, तत्त्वार्थ अध्या ८,कर्म भा १, भ श ८उ ६सू ३५१,भ श १ उ ४,उत्त अ ३३,पन्न प.२३, द्रव्य लो स १०
आठ कर्मों का क्षय करने वाले महात्मा यहाँ की स्थिति पूरी करके कहाँ उत्पन्न होते हैं?	६८३	७	११७	उव सू ४१
आठ कर्मों की स्थिति	५६०	३	४३	६०पन्न प २३ सू २६४,तत्त्वार्थ अध्या ८सू १५से२१,उत्त अ ३३
आठ कर्मों के अनुभाग	५६०	३	४३	६०पन्न प२३ सू २९२
आठकर्मों के बन्ध के कारण	५६०	३	४३	६०भ०श०८ उ०६ सू० ३५१
आठकर्मों के भेद प्रभेद	५६०	३	४३	६०पन्न०प २३ सू२९३,उत्त अ ३३ कर्म भा१,तत्त्वार्थ अध्या ८सू ५ १४
आठ कारण झूठ बोलने के	५८२	३	३७	आचा प्र महाव्र २
आठ कृष्ण राजि	६१६	३	१३२	ठा ८उ ३सू ६२३,भ श६उ ५ सू २४२,प्रव द्वा २६७ गा १४४१ से १४४४
आठ गण	५६६	३	१०८	ठि ३, क
*आठ गणधर पार्श्वनाथ के	५६५	३	३	ठा ८उ ३ सू ६१७सम ८

* ठाणांग सूत्र एवं समवायांग सूत्र के मूल पाठ में भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गणधर बतलाये हैं किन्तु हरिभद्रीयावश्यक गाथा २६६ से २६८ में, प्रवचन सारोद्धार द्वार १५ में तथा सप्ततिशत स्थान वृत्ति द्वार १११ में भगवान् पार्श्वनाथ के दस गणधर होना बतलाया है। ठाणांग और समवायांग के टीकाकार श्री अभयदेवसूरि ने भी टीका में दस गणधर का होना माना है। मूल पाठ में दी हुई आठ की संख्या का सामञ्जस्य करने के लिये उन्होंने टीका में यह खुलासा किया है कि अल्प आयु होने के कारण सूत्रकार ने दो गणधरों की विवक्षा न कर आठ ही गणधर बताये हैं।

[1] धर्म प्रचार में सहायक होने वाला।

१ आगम का एक भेद।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
[1] आदान भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९ सम ७
आदित्यप्रमाण संवत्सर	४००	१	४२६	ठा ५ उ ३ सू ४६० प्रव द्वा १४२ गा ९०
आदित्य संवत्सर	४००	१	४२७	ठा ५ उ ३ सू ४६० प्रव द्वा १४२ गा ९०१
आधा कर्म	७६०	३	४४३	आचा श्रु १ अ ९ उ १ गा १८३
आधाकर्म दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा ५६५ पञ्चा १३ गा २ पिं नि गा ९२ पिं नि गा ३ पञ्चा १३ गा ५
आधार	४८	१	२८	विशे गा १४०६
आधिकरणिकी क्रिया	२९२	१	२७७	ठा २ उ १ सू ६० ठा ५ उ २ सू ४१९ पन्नव २२ सू २८
आधिगमिक सम्यक्त्व	१०	१	१०	ठा २ उ १ सू ७०, पन्न प १ सू ३७ तत्त्वार्थ अध्या १ सू ३
आधेय	४८	१	२८	विशे गा १४०६
आध्यात्मिक विकासक्रम तथा दूसरे दर्शन	८४७	५	६३	या वि
आनन्द श्रावक	६८५	३	२६५	उपा अ १
आनन्द श्रावक की बाईस बोलोंकी मर्यादा सातवें व्रत में	६८५	३	२६७	उपा अ १ सू ७
आनन्दश्रावक के अधिकार में आये हुए 'चेइय' शब्द पर टिप्पण	६८५	३	४५७	उपा (अ) उपा (ह)
आनन्दश्रावक के अधिकार में सम्यक्त्व के छः आगार	४५५	२	५८	उपा अ १ सू ८

[1] धन की रक्षा के लिए चोर आदि से डरना।

१ दास के समान सेवा करने वाले देव। २ शरीर और उपकरण की विभूषा करने वाला साधु। ३ उत्सर्ग और अपवाद रूप आम्नाय का अर्थ कहने वाला आचार्य। ४ दंड सरीखा लम्बा आकार

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आरे छः उत्सर्पिणी काल के	४३१	२	३५	जंबू व २ सू २७ ४० ठा ६ उ ३ सू ४९२ विशे गा २७०८ १०
आरोग्य सुख	७६६	३	४५३	ठा १० उ ३ सू० ७३७
आरोपणा प्रायश्चित्त	३७५	१	३३४	ठा ५ उ २ सू ४३३
आरोपणा के पाँच भेद	३२६	१	३३४	ठा ५ उ २ सू ४३३ सम २८
आरोपणा प्रायश्चित्त	२४५(ख)	१	२२३	ठा ४ उ १ सू २६३
आर्जव	३५०	१	३६५	ठा ५ उ १ सू ३६ प्रव द्वा ६६ गा ५५४ ध अधि ३ श्लो ४६ टी पृ १२७
आर्जव	६६१	३	२३३	नव गा २६ सम १ शा भा १ प्रक ८
आर्तध्यान	२१५	१	१६४	ठा ४ उ १ सू २४७ सम ४ दश अ १ नि गा ४८ टी
आर्तध्यान के चार प्रकार	२१६	१	१६६	ठा ४ उ १ सू २४७ भाव ह अ ४ ध्यानशतक गा ६ ६ पृ ५८६
आर्तध्यान के चार लिंग	२१७	१	१६८	ठा ४ उ १ सू २४७ भग २५ उ ७ सू ८०३ आव ह अ ४ ध्यानशतक गा १५ पृ ५८७
आर्य (ऋद्धिप्राप्त) के छः भेद	४३८	२	४२	ठा ६ उ ३ सू ४९१ पन्न प १ सू ३७
आर्य (अनृद्धिप्राप्त) के ६ भेद	६५३	३	२१६	पन्न प १ सू ३७
आर्य के बारह भेद	५८५	४	२६६	बृ उ १ नि गा ३२६३
आर्य क्षेत्र साढे पचीस	६४२	६	२२३	प्रव द्वा २७५ गा १५८७ १५६२ पन्न प १ सू ३७, बृ उ १ नि गा ३२६३
आर्यगङ्ग निह्नव का मत	५६१	२	३६६	विशे गा २४२४ २४५०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
आहार की गवेषणा के सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७ ५६८ ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४०, पिं नि गा ४०८ ४०६ पिं नि गा ५८ ५६, पंचा १३ गा १८ १९
आहार की गवेषणा के सोलह उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा ५६५-५६६ ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ३८, पिं नि गा ६२ ६३, पिं नि गा ३ ४, पंचा १३ गा ५ ६
आहार के छः कारण	३३०	१	३४०	उत्त अ २६ गा ३२, ध अधि श्लो २३ टी पृ ५६ पिं नि गा ६६
आहार करने के (साधु के) छः कारण	४८४	२	६८	पिं नि गा ६६२, उत्त अ २६ गा ३२
आहार के ४७ दोष	१०००	७	२६५	पिं नि गा ६६६
आहार तिर्यंच का	२६१	१	२४५	ठा ४ उ ३ सू ३४०
आहार त्यागने के (साधु के) छः कारण	४८५	२	६६	पिं नि गा ६६६, उत्त अ २६ गा ३४
आहार देवता का	२६३	१	२४६	ठा ४ उ ३ सू ३४०
आहार नरक का	२६०	१	२४४	ठा ४ उ ३ सू ३४०
आहार नारकी जीवों का	५६०	२	३४०	भ श १४ उ ६ सू ५१६
आहार पर्याप्ति	४७२	२	७७	पन्न प १ सू. १२ टी भ श ३ उ १ सू १३०, प्रव द्वा २३२ गा १३१७ कर्म भा १ गा ४६
आहार मनुष्य का	२६२	१	२४५	ठा ४ उ ३ सू ३४
आहार संज्ञा	१४२	१	१०५	ठा ४ उ ४ सू ३५६ प्रव द्वा १४५ गा ६२३

[1] लोभ से अधिक उपधि को ग्रहण करने वाला साधु।

[1] पृथ्वीकाय।

[1] श्रुत का कथन करने वाले तथा मूल पाठ सिखाने वाले आचार्य

१ ज्ञानाचार का एक भेद। २ गुणी पुरुषों की प्रशंसा करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
उपमा सत्य	६६८	३	३७०	गा १० उ १ सू ७४१, पन्न प ११ सू १६४ ध अधि ३ श्लो ४१ टी पृ १२१
उपमा १६ बहुश्रुत साधु की	८६३	५	१५५	उत्त अ ११ गा १५ से २०
उपयोग	११	१	१०	पन्न प २९ सू ३१२
उपयोग नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८८
उपयोग परिणाम	७४९	३	४२७	ठा १ उ ३ सू ७१३ पन्न प १३ सू १८२
उपयोग बारह	७८६	४	२६७	पन्न प २९ सू ३१२
उपयोग भावेन्द्रिय	२५	१	१८	तत्त्वार्थ अध्या २ सू १८
उपयोगात्मा	५९३	३	९६	भ श १२ उ १० सू ४६७
उपवास का पच्चक्खाण	७०५	३	३७९	प्रव द्वा ४ गा २०४ की पचा ५ गा ६ आव ह अ ६ पृ ८५३
उपशमना करण	५९२	३	९५	कम्म गा २
उपशम श्रेणी	८४७	५	८४	प्रव द्वा ९० गा ७०० ७०८ कर्म भा २ गा २
उपशम श्रेणी का वर्णन	५६	१	३३	कर्म भा २ गा २, विशे गा १२८४ ल्यलो स १ गा ११९९से१२१५ आव म गा ११६ १२०
उपशम समकित	२८७	१	२६१	कर्म भा १ गा १५
उपशान्त कषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थान	८४७	५	८२	कर्म भा २ गा २
उपशान्त क्रोध	१६४	१	१२४	ठा ४ उ १ सू २४९
उपसम्पद् समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४९ उत्त अ २६ गा ४ प्रव द्वा १०१ गा ७६०

ए

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा क्षपक की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	८८	न० सू० २७ गा० ७३, आव० ह० नि० गा० ६५०
कथा क्षुल्लक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६७	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा खड्ग(गेंडा) की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	न० सू० २७ गा० ७४, आव० ह० नि० गा० ६५१
कथा खड्ग(अगूठी) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२५८	नं० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा गजसुकुमार की	७७६	४	१६३	अन्त० व० ३ अ० ८
कथा गर्हा पर	५७६	३	३४	आव ह अ ४ नि गा १२४७
कथा गाय और बछड़े की द्रव्य अननुयोग पर	७८०	४	२३६	आव ह नि गा १३३, वृ गा १७१ पीठिका०
कथा गेंडे की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११६	न सू २७ गा ७४ आव ह नि० गा० ६५१
कथा गोलक लाख की गोली की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६६	न० सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा ग्रामीण की वचन अननुयोग पर	७८०	४	२४२	आव ह नि गा १३३ वृ नि० गा १७१ पीठिका
कथा घयण (भांड) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६५	न सू २७ गा ६३ टी
कथा चण्डकौशिक सर्प की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११४	त्रि प पर्व १ न सू २७ गा ७४ आव ह नि गा ६५१
कथा चन्द्रमा की	६००	५	४५६	ना अ १०

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा चरणाहत की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११२	नं सू २७ गा ७४, आव ह नि गा ९४१
कथा चाणक्य की पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	६४	नं सू २७ गा ७२, आव ह नि गा ९४०
कथा चार पुत्रवधुओं की	६००	५	४४७	ज्ञा अ ७
कथा चिलातीपुत्र की उपशम से सम्यक्त्व प्राप्ति पर	८२१	४	४३४	नवपद गा १४ की सम्यक्त्वाधिकार ज्ञा अ ८
कथा चेटक निधान की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२७६	नं सू २७ गा ६५ टी
कथा चादह राहक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२४३	नं सू २७ गा ६४ टी
कथा जिनदत्त और सागरदत्त की	६००	५	४३६	ज्ञा अ ३
कथा जिनदास कुमार की	६१०	६	५६	वि अ १५
कथा जिनपाल जिनरक्षकी	६००	५	४५३	ज्ञा अ ८
कथा तीन	६७	१	६६	ठा ३ उ १ सू १८६
कथा तुम्बे की	६००	५	४४१	ज्ञा अ ६
कथा तेतलीपुत्र की	६००	५	४६२	ज्ञा अ १४
कथा तेरह सम्यक्त्व की	८२१	४	४२२	नवपद गा १४ १८
कथा दस दुःखविपाक की	६१०	६	२६से५३	वि अ १ से १०
कथा दस सुख विपाक की	६१०	६	५३से६०	वि अ ११ से २०
कथा दावद्रव वृक्ष की	६००	५	४५६	ज्ञा अ ११
कथा दुर्गन्धा की जुगुप्सा दोष पर	८२१	४	४५८	नवपद गा १८ की सम्यक्त्वाधिकार

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा देवदत्ता रानी की	६१०	६	४७	वि म ८
कथा देवी पुष्पवती की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८०	न सू २७ गा ७२, आव ह नि गा ९४६
कथा धनदत्त की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८३	न सू २७ गा ७२ ज्ञा अ १८ आव ह नि गा ९४८
कथा धनपति कुमार की	९१०	६	५९	वि अ १६
कथा धन सार्थवाह की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८७१	४	४४६	नवपद गा १८ की सम्यक्त्वाधिकार
कथा धन्नाकुमार की	७७६	४	२०४	अनु व ३ अ १
कथा धन्ना सार्थवाह और विजय चोर की	९००	५	४३४	ज्ञा अ० २
कथा नकुल की भार अननुयोग पर	७८०	४	२४९	आव ह नि० गा० १३४ प० नि गा० १७२ पीठिका
कथा नन्द मणियार की	८७१	४	४४४	नवपद गा १५ ज्ञा अ १३
कथा नन्द मणियार की	९००	५	४६०	ज्ञा अ १३
कथा नन्दी फल की	९००	५	४६४	ज्ञा अ १५
कथा नन्दीवर्धनकुमार की	९१०	६	४३	वि अ ६
कथा नन्दीषेण साधु की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८२	न सू २७ गा ७२ आव ह नि गा ९४८
कथा नाणक की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७५	न सू २७ गा ६२ टी
कथा निन्दा पर	५७९	३	२८	आव ह अ ४ नि गा १२४२
कथा निवृत्ति पर	५७९	३	२६	आव ह अ ४ नि गा १२४२

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा वज्रस्वामी की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	१०६	आव० गा० ९५०, न सू० २७ गा० ७३
कथा वज्रस्वामी की वात्सल्य पर	८७१	४	४८१	नवपद गा० १८ टी० सम्यक्त्वाधिकार
कथा वरदत्तकुमार की	९१०	६	६०	वि श्र० ०
कथा वारत्तक धारणा पर	५७६	३	२५	आव० म० ४ नि० गा० १ ८७
कथा विष्णुकुमार की प्रभावना पर	८७१	४	४८५	नवपद गा० १८ टी० सम्यक्त्वाधिकार
कथा वृक्ष की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२५७	न सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा शकटकुमार की	९१०	६	३९	वि श्र० ४
कथा शतसहस्र की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२८२	न सू० २७ गा० ६५ टी०
कथा शब्द के साहस की भाव अननुयोग पर	७८०	४	२५२	आव० म० गा० १३४ टी० नि० गा० १३० टीका
कथा शरट (गिरगिट) की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२६२	न सू० २७ गा० ६३ टी०
कथा शिला की औत्पत्तिकी बुद्धि पर	९४९	६	२७९	न सू० २७ गा० ६४ टी०
कथा शुद्धि पर	५७६	३	२६	आव० ह० म० ४ नि० गा० १ ८
कथा शैलक राजर्षि की	९००	५	४३८	ज्ञा० अ० ५
कथा श्रावक भार्या की पारिणामिकी बुद्धि पर	९१५	६	८४	न सू० २७ गा० ७२ आव० नि० गा० ९४८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कथा श्रावक भार्या की भाव अनुयोग पर	७८०	४	२४५	आव ह नि गा १ ४ वृ निगा १७२ पीठिका
कथा श्रेणिक की उपबृंहणा पर	८२१	४	४६५	नवपद गा १८ टी सम्यक्त्वाधिकार
कथा श्रेणिक के कोप की भाव अनुयोग पर	७८०	४	२५३	आव ह नि गा १३४ वृ नि गा १७२ पीठिका
कथा श्रेयांस कुमार की सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये	८२१	४	४२३	नवपद गा १२८
कथा सती कुन्ती की	८७५	५	३४६	ना अ १६
कथा सती कौशल्या की	८७५	५	२६८	त्रि प पर्व ७
कथा सती चन्दनबाला (वसुमती) की	८७५	५	१६७	आव ह नि गा ५२० ५ १ त्रि प पत्र १० चन्दन
कथा सती दमयन्ती की	८७५	५	३५२	पच प्र भरत गा ८ त्रि प पर्व ८ सू ३
कथा सती द्रौपदी की	८७५	५	२७५	ना अ १६ त्रि प पर्व ८
कथा सती पद्मावती की	८७५	५	३६६	आव ह नि गा १३११ भाष्य गा २०५ २
कथा सती पुष्पचूला की	८७५	५	३६४	आव ह नि गा ११८४
कथा सती प्रभावती की	८७५	५	३६५	आव ह नि गा १२८४
कथा सती ब्राह्मी की	८७५	५	१८५	आव ह नि गा १९६ त्रि प पर्व १,२
कथा सती मृगावती की	८७५	५	३०३	आव ह नि गा १०८ दश अ १ नि गा ७६
कथा सती राजमती की	८७५	५	२४६	दश अ २ त्रि प पर्व ८ उत्त अ २२, राज

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कर्म आठ के क्षय से प्रकट होने वाले आठ गुण	५६७	३	४	अनु सू १२६,प्रव द्वा २७६ गा १५८३-१५६४ सम ३१
कर्म आयु के भेद,अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	६५	भ श ८उ ६सू ३५१ पन्न प २३ सू २६२ २ ४, कर्म भा १ गा २३,तत्वार्थ अध्या ८
कर्म और जीव का अनादि सम्बन्ध	५६०	३	५१	विशे गा १८१०-१८१४ कर्म भा १ प्रस्तावना
कर्म और जीव का सम्बन्ध	५६०	३	४७	विशे गा १६३५-१६३६
कर्मकाठिया तेरह	६८३	७	१२७	भाव १ गा ८४१ ८४२ पृ २४६
कर्म का लक्षण	५६०	३	४४	कर्म भा १ गा १ तथा भूमिका
कर्म की चार अवस्थाए	२५३	१	२३७	कर्म भा गा १ व्याख्या
कर्म की मूर्तता	५६०	३	४६	विशे गा १६२५-१६२८
कर्म की व्याख्या और भेद	२७	१	१८	कर्म भा १ गा १ व्याख्या
कर्म की शुभाशुभता	५६०	३	४६	विशे गा १६४२ १६४५
कर्म की सिद्धि	५६०	३	४४	विशे गा १६११ १६१७
कर्म के विषय में गणधर अग्निभूति का शका समाधान	७७५	४	३१	विशे गा १६ ६ से १६४४
कर्म के नामादि दस भेद	७६०	३	४४१	आचा ु १ अ २ उ १ टी गा १८३ १८४
कर्म गोत्र के भेद,अनुभाव और बन्ध के कारण	५६०	३	७६	भ श ८उ६ सू ३५१ पन्न प २३ सू २६२ २६४ कर्म भा १गा ५२ तत्वाथ अध्या ८
कर्म ज्ञानावरणीय के भेद, अनुभाव, बन्ध के कारण	५६०	३	५५	भ श ८उ ६ सू ३५१, पन्न प २३सू २६२ २६४ कर्म भा १गा ६ ५४तत्वाथ अ या ८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
कामदेव श्रावक	६८५	३	३०६	उपा अ २
कामभोग की असारता के विषय में सोलह गाथाएं	६६४	७	२१८	
काम सुख	७६६	३	४५४	ठा १० उ ३ सू ७३७
कायकौत्कुच्य	४०२	१	४२६	उत्त अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३ गा ६४२
कायक्लेश	४७६	२	८६	उत्त अ ३० गा ८, ठा ६ उ ३ सू ५११, उव सू १६ प्रव द्वा ६ गा २७०
कायक्लेश के तेरह भेद	६३३	३	१६०	उव सू १६, भ श २५ उ ७ सू ८०२
कायक्लेश के तेरह भेद	८१६	४	३६७	उव सू १६
कायगुप्ति	१२८(ख)	१	६२	उत्त अ ४ गा २४-२५, ठा ३ उ १ सू १२६
काय छः	४६२	२	६३	ठा ६ उ ३ सू ४८०, दश अ ४, कर्म भा ४ गा १०
काय छः का अल्पबहुत्व	४६४	२	६५	जी प्रति ९ सू ६, पन्न प ३ द्वा ४
काय छः की कुलकोटियाँ	४६३	२	६४	प्र द्वा १५० गा ६६२ ६६७
काय पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ९ उ ३ सू ६७६
कायमार्गणा के भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १०
काययोग	६५	१	६८	ठा ३ उ १ सू १२४, तत्त्वार्थ भाष्य ६ सू १
काययोग के सात भेद	५४७	२	२८६	भ श २५ उ १ सू ७१६, द्रव्य लो स ३ श्लो ५८ कर्म भा ४ गा २४

१ पूर्वकृत उपकार के बदले दिया जाने वाला दान।

[1] दूसरों को हँसाने के लिए भांड की तरह कुचेष्टा करना।

१ साधु के निमित्त खरीद हुए आहार को ग्रहण करना।

ख

ग

* पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
गणधरमण्डितस्वामी का बन्ध मोक्षविषयक शङ्कासमाधान	७७५	४	४४	विशे गा १८०२ १८६३
गणधरमेतार्यस्वामी का परलोकविषयक शङ्कासमाधान	७७५	४	५६	विशे गा १९४९ १९७१
गणधर मौर्यपुत्र का देवों के विषय में शङ्का समाधान	७७५	४	५०	विशे गा १८६४-१८८४
गणधर लब्धि	९५४	६	२९३	प्रव द्वा २७० गा. १४९१
गणधरवाद संक्षेप में	७७५	४	२३	विशे गा १५४९ २०२४
गणधर वायुभूति का जीव और शरीर के भेदाभेद विषयक शङ्कासमाधान	७७५	४	३४	विशे गा १६४९ १६८८
गणधरव्यक्तस्वामी का पृथ्वी आदि भूतों के अस्तित्व विषय में शङ्का समाधान	७७५	४	३६	विशे गा १६८९ १७४९
गणधरसंख्या तीर्थङ्करों की	७७५	४	२३	आव ह नि गा० २६६
गणधरसुधर्मास्वामी के, 'यहाँ जो जैसा है परभव में वह वैसा ही रहता है,' मत का समाधान	७७५	४	४०	विशे गा १७७० १८०१
गण धर्म	६९७	३	३६१	ठा० १० उ ३ सू० ७६०
गणना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू० ४
गणनानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू० ७१
गणनासंख्या के तीन भेद	६१९	३	१४३	अनु० सू १८
गण है भगवान् महावीर के	६२५	३	१७१	ठा ८ उ० ३ सू० ६८
गणापक्रमण सात	५१५	२	२४४	ठा ७ उ० ३ सू ५४१

* जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर गान्धार ग्राम की जो सात मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रंथ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में गान्धार ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। इनकी गाथा इस प्रकार है —

> नंदी अ खुद्दिआ पूरिमा य चउत्थी अ सुद्धगंधारा ।
> उत्तरगंधारा वि य सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥ १ ॥
> सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा ।
> अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा ॥ २ ॥

अर्थ—(१) नंदी (२) क्षुद्रिका (३) पूरिमा (४) शुद्धगान्धारा (५) उत्तरगान्धारा (६) सुष्ठुतरमायामा (७) उत्तरायतकोटिमा ।

घ

१ ग्रहणैषणा के दस दोषों में छत्तीस दायक दोष है, उसके चालीस भेद हैं।

१ आकाशप्रदेशों की वह श्रेणी जिसके द्वारा परमाणु आदि चक्कर खाकर उत्पन्न होते हैं।

१ शीत, उष्ण, रूक्ष और स्निग्ध ये चार स्पर्श वाले पुद्गल ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चरणकरणानुयोग	२११	१	१९०	दश नि गा ३ ५३
चरणविहिअ०की२१गाथा	६१७	६	१३०	उत्त अ ३१
चरण सप्तति (चरण सत्तरि) के सत्तर बोल	६३७	६	२१६	प्रव द्वा ६६गा ५५२ ५८ धअधि ३श्लो ८७टी १३०
चरणाहत का दृष्टान्त पारिणामिकी बुद्धि पर	६१५	६	११२	नसू २७ गा ७४ आव नि गा ९५१
चरमशरीरी को प्राप्त १७ बातें	८६६	५	३६५	ध वि प्रस्ता ब्ल्मू ८८४ ८८६
चरम समय निर्ग्रन्थ	३७०	१	२८५	ठा ५ उ ३ सू ४४५
चरमाचरम के चौदह बोल	८४३	५	४२	भ श १८ उ०१सू०६१९
चरिम पच्चक्खाण	७०५	३	३८०	प्रव द्वा ४गा २०१ ध्या ५गा ६ आव ह अ ६ नि गा १५६७
चाणक्य की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	६१५	६	६४	आव नि गा ९५० न सू ७ गा ७५
चार अनुप्रेक्षा धर्म ध्यान की	२२३	१	२०७	ठा ४ उ १सू २४७भ श २५ उ ७सू ८०३ उव सू २० आव ह अ ४ध्यानशतक गा ६५ ८८
चार अनुप्रेक्षा शुक्लध्यान की	२२८	१	२१२	
चार अन्त क्रियाएं	२५४	१	२३७	ठा ४उ १सू २३५
चार अवस्था कर्म की	२५३	१	२३७	कम भा गा १ व्याख्या
चार आगार कायोत्सर्ग के	८०७	४	३१६	आव ह अ ५ नि गा १५१
चार आलम्बन धर्मध्यान के	२२२	१	२०६	ठा ४उ १सू २४७ भ श २५ उ ७ उव सू २० आव ह अ ४ ध्यानशतक गा ४२ ६८
चार आलम्बन शुक्लध्यान के	२२७	१	२११	
चार इन्द्रियां प्राप्यकारी	२१४	१	१९३	न सू ३ टी, रत्नाकरि २सू ५की

१ आकाशगामिनी विद्या जानने वाले महात्मा।

* चार मूलसूत्र में उत्तराध्ययन सूत्र का व्याख्यान करते हुए बतलाया है कि आचारांग सूत्र के बाद यह सूत्र पढ़ाया जाता है इसलिए यह उत्तराध्ययन कहलाता है। किन्तु आचारांग सूत्र के बाद उत्तराध्ययन सूत्र पढ़ाने का क्रम दशवैकालिक सूत्र की रचना होने तक ही रहा है। चौदह पूर्वधारी श्री शय्यंभवस्वामी द्वारा दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् उत्तराध्ययनसूत्र दशवैकालिक के बाद पढ़ाया जाता है ऐसा उत्तराध्ययन की नियुक्ति गाथा ३ की टीका में उल्लेख है और यही परिपाटी आज भी प्रचलित है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चारित्र परिणाम	७४६	३	४२८	ठा १० उ १ सू ७१३, पन्न प १३ सू १८२
चारित्र पुलाक	३६७	१	३८२	ठा ५सू ४४५ भश २५उ ६
चारित्रभेदिनी विकथा	५३२	२	२६७	ठा ७ उ ३ सू ५६६
चारित्र मोहनीय	२८	१	२०	ठा २उ ४सू १०५ कर्म भा १
चारित्र मोहनीय के दो भेद	२६	१	२०	कर्म भा १ गा १७
चारित्र विनय	४६८	२	२३०	उत्त सू २० भश २५उ ७ सू ८०२,ठा ७उ ३सू ५८५,ध अधि ३श्लो ५४ टी पृ.१४१
चारित्र विराधना	८७	१	६३	सम ३
चारित्राचार	३२४	१	३३२	ठा ५उ २सू ४३२ ध अधि ३ श्लो ५४ पृ १४०
चारित्रात्मा	५६३	३	६६	भ श १२ उ १० सू ४६७
चारित्राराधना	८६	१	६३	ठा ३ उ ४सू १६५
चारित्रार्य	७८५	४	२६७	पन्न प १ सू ३७
चारित्रेन्द्र	६२	१	६६	ठा ३ उ १सू ११६
चारित्रोपघात	६६८	३	२५७	ठा १० उ ३ सू ७३८
चार्वाक दर्शन	४६७	२	१३०	
चालीस दाता दायक दोष से दूषित	६८८	७	१४६	पिं नि गा ५२०
चालीस भेद खर पृथ्वी के	६८७	७	१४५	पन्न प १ सू १५
चिकित्सा दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७ ध अधि ३ श्लो २२ टी पृ ४० पिं नि गा ४०८ पिं विगा ५८ पंचा १३ गा १८
चित्त के आठ दोष	६०३	३	१२०	क भा २ श्लो १६० १६१

---

[1] चोर को चोरी के लिए प्रोत्साहन देना तथा अन्य किसी प्रकार से सहायता देना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
चौतीस क्षेत्र जम्बूद्वीप में तीर्थङ्करोत्पत्ति के	९७८	७	७१	सम ३४
चौदह अतिचार ज्ञान के	८२४	५	१४	आव ह अ ४ पृ ७३०
चौदह गुणस्थान	८४७	५	६३	कर्म भा २ ४ प्रव द्वा ८८ ६० ४२४ गुण था
चौदह जीव देवलोक में उत्पन्न होते हैं	८४८	५	११५	भ ७ १ उ ९ सू ७४
चौदह द्वार चरमाचरम के	८४३	५	४२	भ ७ १८ उ १ सू ६०
चौदह द्वार पढमापढम के	८४२	५	३८	भ ७ १८ उ १ सू ६१६
चौदह द्वार सप्रदेशी अप्रदेशी के	८४१	५	३४	भ श ६ ७ ४ सू २४६
चौदह नाम माया के	८३६	५	३१	सम ५२
चौदह नाम लोभ के	८३७	५	३२	सम ५२
चौदह नियम श्रावक के	८३१	५	२३	शिक्षा ४ अधि २ ला ५ ८ नी
चौदह पूर्व	८२३	५	१२	नसू ५७, सम १४ १४७
चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंचव गा ७७१ ७७६
चौदह प्रकार का दान	८३२	५	२६	शिक्षा श्राव ह अ पृ ८४८
चौदह प्रकार से अशुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३९	५	३३	पन० प २३ सू० २९४
चौदह प्रकार से शुभ नाम कर्म भोगा जाता है	८३८	५	३३	पन प० २३ सू० ९२
चौदह बातें साधु के लिए अकल्पनीय	८३४	५	२९	बृ उ ४ सू १८ २१
चौदह भेद अजीव के	८२७	५	१९	पन० प० १ सू० ४-४

१ चार मास का गुरु प्रायश्चित्त। २ चार मास का लघु प्रायश्चित्त।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
१ चौवीस जात्युत्तर	९३६	६	२०६	प्रमी श्र-या १ श्रा २ सू २६, न्यायप्र,न्याय दू श्रध्या ५ श्रा १
चौवीसतीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३१	६	१९७	सम ५८ प्रव द्वा ७ गा ३० -३०३
चौवीस तीर्थङ्कर ऐरवत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२८	६	१७६	सम १५९, प्रव द्वा ७ गा २९६ २९८
चौवीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के आगामी उत्सर्पिणी के	९३०	६	१९६	सम० १५८ प्रव० द्वा० ७ गा २९३ २९५
चौवीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के गत उत्सर्पिणी के	९२७	६	१७३	प्रव द्वा० ७ गा २८८ २९०
चौवीस तीर्थङ्कर भरत क्षेत्र के वर्तमान अवसर्पिणी के	९२९	६	१७७	सम १५७ आव ह नि गा २०८ स २६० आव म गा २३१ स २८९ म श्रा प्रव द्वा ७-४५
चौवीस तीर्थङ्करों के सत्ताईस बोलों का यन्त्र तथा उन सम्बन्धी अन्य तेईस बोल	९२९	६	१७८	सम १५७ आव ह नि गा २०९ स २६० आव म गा २३१ २८९, स ग्र प्रव द्वा ७-४५
चौवीस दण्डक	९३४	६	२०४	ठा १ सू ५१ टी भ श १३ १टी
चौवीस धान्य	९३५	६	२०५	दश अ ६ नि गा २५२ २५३

छ

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
छः आगार प्रत्याख्यान पालने के	४८२	२	९६	आव ह नि गा १५९३ पृ ८५१, ध अधि २श्लो ६३ पृ १९२
छः अकर्मभूमि जम्बूद्वीप की	४३५	२	४१	ठा ६ उ ३ सू ५२२
छः अनन्त	४८८	२	१००	अनु सू १४६ टी, प्रव द्वा २५६

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिपक्षी के हेतु में दोष न होने पर भी अवास्तविक दूषण द्वारा उसके हेतु को सदोष बतलाना जात्युत्तर है ।

१ कल्प यानी साधु के आचार का मन्थन अर्थात् घात करने वाले।

[1] गुरु की तरह प्रतिकूल आचरण करने वाला।

१ त्रस जीवों के रोम से बना हुआ वस्त्र। २ पृष्ठ १२२ पर टिप्पणी देखो।

३ अनेक गीतार्थ मुनियों द्वारा की हुई मर्यादा का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ, जीत कहलाता है। उसमें प्रवर्तित व्यवहार जीतव्यवहार है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
जैन साधु के लिए मार्ग-प्रदर्शक बारह गाथाएं	७८१	४	२५५	उत्त अ २१ गा १३ २४
ज्ञात, ज्ञातपुत्र	७७०	४	४	जैनविद्या वाल्यूम १ नं १
ज्ञाता के नौ भेद	६४१	३	२१७	आचा श्रु १ अ ५ उ ५ सू ८८
ज्ञाताधर्मकथांग की १९ कथा	९००	५	४२७	
ज्ञाताधर्मकथांग के दोनों श्रुतस्कन्धों का विषयवर्णन	७७६	४	१८५	
ज्ञान	११	१	१०	पन्न प ५ सू ३१२
ज्ञान कुशील	३६९	१	३८४	ठा ५ उ ३ सू ४४५
❀ज्ञान के चौदह अतिचार	८२४	५	१४	आव ह अ ४ पृ ७३०
ज्ञान के दो भेद	१२	१	१०	ठा २ उ १ सू ७१, नं सू २
ज्ञान के पाँच भेद	३७५	१	३९०	ठा ५ उ ३ सू ४६३ कर्म भा १ गा ४ नं० सू १
ज्ञान गर्भित वैराग्य	९०	१	६५	क भा श्लो ११८-११९
ज्ञान नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८८
ज्ञानपरिणाम	७४९	३	४२७	ठा १० उ ३ सू ७१३ पन्न प १३
ज्ञान पुलाक	३६७	१	३८२	ठा ५ सू ४४५, भ श २५ उ ६
ज्ञान मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म० भा ४ गा ११
ज्ञान विनय	४९८	२	२२९	उव सू २० भ श २५ उ ७ सू ८०२ ठा ७ उ ३ सू ५८५, ध अधि ३ श्लो ५४ टी पृ १४१

❀ज्ञान के चौदह अतिचारों में सुट्ठुदिन्न दुट्ठुपडिच्छिय दो अतिचार हैं। इनका अर्थ इस प्रकार है—

सुट्ठुदिन्न—शिष्य में शास्त्र ग्रहण करने की जितनी शक्ति है उससे अधिक पढ़ाना। यहाँ सुट्ठु शब्द का अर्थ है शक्ति या योग्यता से अधिक।

दुट्ठुपडिच्छिय—आगम को बुरे भाव से ग्रहण करना

झ

ठ

ढ

ण

त

१ शास्त्रार्थ के समय प्रतिवादी के जाति कुल आदि के दोषों को निकाल कर उस पर व्यक्तिगत आक्षेप करना ।

२ अभिग्रह विशेष जिसके अनुसार साधु तभी आहार लेता है जब कि दिये जाने वाले आहार विशेष से दाता के हाथ और भाजन खरड़े हुए हों ।

१ वस्तु के यथार्थ स्वरूप का विचार।

[1] भिन्न भिन्न तयालीस विषयों पर आगम तथा धर्मग्रन्थों की गाथा एवं पाठों का सुन्दर संग्रह। यह संग्रह स्वाध्यायप्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

[2] चिड़चिड़े स्वभाव वाला व्यक्ति, कल्पपलिमन्थु का एक भेद।

[3] तिरीट वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र।

१ दु:खपूर्वक कठिनता से समझाये जाने वाले जीव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तीन भेद करण के	७८	१	५५	आगम सार गा १० १०७ टी विशे गा १२०२ १२१८, प्रव द्वा २१४ गा १३०७ टी कर्म भा २ गा २ व्याख्या
तीन भेद करण के	६४	१	६७	ठा ३ उ १ सू १२४
तीन भेद गारव के	६८	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१५
तीन भेद गुणव्रत के	१२८(क)	१	६१	आव ह अ ६ पृ ८२९ ८३६
तीन भेद गुप्ति के	१२८(ख)	१	६२	उत्त अ २४ ठा ३ सू १
तीन भेद जन्म के	६६	१	४६	तत्त्वार्थ अध्या २ सू ३२
तीन भेद जीव के	६६	१	५०	भ श ३ उ ३ सू १३७
तीन भेद तत्त्व के	६३	१	४४	यो प्रका श्लो ४ ११, ध अधि २ श्लो २१ २ टी पृ ३१
तीन भेद दण्ड के	६६	१	६६	ठा ३ आचा श्रु १ अ ४ उ १ सू १२६ टी ठा ३ उ १ सू १२६
तीन भेद दर्शन के	७७	१	५५	ठा ३ सू १८४ भ श ८ उ २
तीन भेद ज्योतिषी ऋद्धि के	१००	१	७०	ठा ३ उ० ४ सू० २१४
तीन भेद द्रव्यानुपूर्वी के	११६	१	८४	अनु सू ६ ६८ टी
तीन भेद धर्म के	७६	१	५८	ठा ३ उ ३ ४ सू १८८, २ ७
तीन भेद पल्योपम के	१०८	१	७५	अनु सू १३८-१४ प्रव द्वा १५८ गा १०१८ १०२६
तीन भेद भाव इन्द्र के	६२	१	६६	ठा ३ उ० १ सू० ११८
तीन भेद मनुष्य के	७१	१	५१	ठा ३ उ १ सू १३० पन्न प १ सू ३७ जी प्रति ३ सू १ ७
तीन भेद मोक्षमार्ग के	७६	१	५७	उत्त अ २८ गा ३०, तत्त्वार्थ अध्या १ सू १
तीन भेद योग के	६५	१	६८	ठा ३ सू १२४ तत्त्वार्थ अध्या ६

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
तृण वनस्पति के दस भेद	७४५	३	४२२	ठा १० उ ३ सू ७७३
तृतीयसप्तरात्रिदिवसनाम की दशवीं भिक्खुपडिमा	७९५	४	२६०	सम १२ दशा द ७,भ श २ उ १ सू ९३ टी
तृष्णा पर सात गाथाएं	९९४	७	२४२	
तेईस अध्ययन सूयगडांग के	९२४	६	१७३	सूय
तेईस गाथाएं भगवान् महावीर की चर्या विषयक	९२२	६	१६६	आचा श्रु १ अ ९ उ १
तेईस भेद क्षेत्र परिमाण के	९२५	६	१७३	अनु सू १३३ पृ १६० १ २ प्रव द्वा २५४ गा १३९१ टी
तेईस विषय पाँच इन्द्रियों के	९२६	६	१७५	ठा सू ४७ ३९०,४४३ ५०० पन्न प २३ सू २९३ प योग १२ तत्त्वार्थ अध्या २ सू २१
तेईस स्थान साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	९२३	६	१७०	आचा श्रु २ चू १ अ २ उ २
तेजस्काय	४९२	२	६४	ठा ८ उ ३ सू ४८० दश अ ४ धर्म भा ४ गा १०
तेजोलेश्या	४७१	२	७४	उत्त अ ३४ कर्म भा ४ गा १३
तेजोलेश्या लब्धि	९५४	६	२९६	प्रव द्वा २७० गा १४९४
तेतलीपुत्र की कथा	९००	५	४९२	ज्ञा अ १४
तेतीस आशातनाएं	९७५	७	६१	सम ३३ दशा द ३, आव ह अ ४ पृ ७२४
तेतीस बोल सिद्धों के अल्पबहुत्व के	९७६	७	६६	न सू २० टी पृ १२५
तेतीस बोलों का कथन करने वाली २१ गाथा	९१७	६	१३०	उत्त अ ३१

* पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

१ पाप या दोषों के सेवन से होने वाली संयम की विराधना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दस भेद कर्म के	७६०	३	४४१	आचा श्र २ उ १ गा १८३ ८४
दस भेद तृणवनस्पति के	७४५	३	४२७	ठा १० उ ३ सू ७७३
दस भेद दर्शनविनय के	७०६	३	३८४	भ श २५ उ ७ सू ८०२
दस भेद देवों के	७२६	३	४१५	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
दस भेद संसार में आने वाले प्राणियों के	७२८	३	४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
दस महर्द्धिक देव	७४३	३	४२१	ठा १० उ ३ सू ७ ४
दसमहानदी मेरुसे उत्तरमें	७५९	३	४४१	ठा १० उ ३ सू ७१७
दसमहानदी मेरुसे दक्षिणमें	७५८	३	४४०	ठा १० उ ३ सू ७१७
दस मिथ्यात्व	६९५	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७३४
दस मुण्ड	३६४ ३६५	१	३७८ ३७९	ठा ५ उ ३ सू ४४३
दस मुण्ड	६५९	३	२३१	ठा १० उ ३ सू ७४६
दस यति धर्म	३५०	१	३६४	ठा ५ उ १ सू ३९६ धर्मधि ३
	३५१		३६६	श्लो ४८ टी पृ १ ० प्रवद्वा ६८ गा ५५४
दस रानियाँ श्रेणिक की	६८६	३	३३३	अन्त व ८
दस रुचि	६९३	३	३६२	उत्त श्र २८ गा १ २७
दस लक्षण श्रावक के	६८४	३	७९२	भ श २३५ सू १०७
दस लब्धि ज्ञानादि की	६५८	३	२३०	भ श ८ उ २ सू ३२०
दस लोकस्थिति	७५२	३	४३६	ठा १ उ सू ७ ४
दस वक्खार पर्वत सीता महानदी के दोनों तटों पर	७५५	३	४३९	ठा १ उ ३ सू ७६८
दस वक्खार पर्वत सीतोदा महानदी के दोनों तटों पर	७५६	३	४३९	ठा १० उ ३ सू ७६८

[1] दुष्ट स्वभाव, कन्दर्पभावना का एक भेद।

[2] पृष्ठ १४३ पर टिप्पणी देखो

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दुर्लभबोधि के पाँच कारण	२८६	१	२६६	ठा ५ उ २ सू ४२६
दुर्लभ बोल छः	४३६	२	४३	ठा ६ उ ३ सू ४८५
दुर्लभ मनुष्य भव के दस दृष्टान्त	६८०	३	२७१	उत्त अ ३ नि गा १६ आव.ह नि गा ८३२ पृ ३४०
दुषमदुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वत्त २ सू ३८, ठा ६ सू ४९२, भ श ७ उ ६ सू २८७ २८८
दुषमदुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३६	ज वत्त २ सू ३७ ठा ६ सू ४९२
दुषमसुषमा आरा अव० का	४३०	२	३२	ज वत्त २ सू ३४ ठा ६ सू ४९२
दुषमसुषमा आरा उत्स० का	४३१	२	३७	ज वत्त २ सू ३७ ठा ६ सू ४९२
दुषमा आरा अवसर्पिणी का	४३०	२	३३	ज वत्त २ सू ३५, ठा ६ सू ४९२
दुषमा आरा उत्सर्पिणी का	४३१	२	३६	ज वत्त २ सू ३७ ठा ६ सू ४९२
दुषमाकाल जानने के स्थान	५२८	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५५६
दुष्प्रत्याख्यान	५४	१	३१	भ श ७ उ २ सू २७१
दूती दोष (गवेषणैषणा का एक दोष)	८६६	५	१६४	प्रव गा ५६७ ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४० पिं नि गा ४०८ पि वि गा ५८ पंचा १३ गा १८
[1] दूषणाभास (जात्युत्तर) चौबीस	९३६	६	२०६	प्र मी अध्या १ आ २ सू २६, न्यायप्र न्यायसू अध्या ५ आ १
दूषित दाता चालीस	९८८	७	१४६	पिं नि गा ५२०
[2] दृष्टलाभिक	३५४	१	३६९	ठा ५ उ १ सू ३९६
दृष्टान्त	३८०	१	३९७	रत्ना परि.३ न्याय दी.प्रका ३
दृष्टान्त इक्कीस पारिणामिकी बुद्धि के	९१५	६	७३	नं सू २७ गा ७१ ७४ आव
			१२६	ह नि गा ९४८ ९५१

[1] पृष्ठ १२८ पर टिप्पणी देखो।

[2] पहले देखे हुए आहारादि की गवेषणा करने वाला अभिग्रहधारी साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दृष्टान्त श्रेणिक के कोप का भाव अनुयोग अनुयोग पर	७८०	४	२५३	आव० नि गा १३८ पृ ६५, व दीपिका नि गा १३२
दृष्टान्त सत्ताईस औत्पत्तिकी बुद्धि के	६४६	६	२४२	नसू २७गा ६२ ६५ की
दृष्टान्त साप्तपदिक का भाव अनुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२४६	आव० नि गा १३८ पृ ८१, दीपिका नि गा १७२
दृष्टान्त स्वाध्याय का काल अनुयोग तथा अनुयोग पर	७८०	४	२८०	आव० नि गा १३३ पृ ८६ वृ टीका नि गा १७१
दृष्टिजा(दिट्ठिया) किया	२९४	१	२७९	ठा २ उ १ सू ६० ठा ५ सू ४१९
दृष्टिनाम क्रिया में	५६०	२	३३७	जी प्रति सू ८८
दृष्टिवाद के दस नाम	६८८	३	३५१	ठा १० उ ३ सू ७४२
१ दृष्टिसम्पन्नता	७६३	३	४४५	ठा १० उ ३ सू ७५८
देव	६३	१	४४	या पका २ श्लो ८ ११
देव आयु बन्ध के ४ कारण	१३५	१	१००	ठा ४ उ ४ सू ३७३
देवताओं की पहचान के बोल	१३७	१	१०१	ठा ४ उ ३ सू ८२ की
देवताओं के चार भेद	१३६	१	१०१	उत्त अ ३६ गा २०२
देवता की ऋद्धि के तीन भेद	१००	१	७०	ठा ३ उ ४ सू २१४
देवता की तीन अभिलाषाएं	१११	१	८०	ठा ३ उ ३ सू १७८
देवता के एक सौ अट्ठाणु भेद	६२२	३	१७९	पन्न प १ सू ३८ उत्त अ ३६ गा २ ३ १८ जी प्रति ३
देवता के च्यवन ज्ञान के तीन बोल	११३	१	८१	ठा ३ उ ३ सू १७८
देवता के दो भेद	५७	१	४०	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू १७
देवता के पश्चात्ताप के ३ बोल	११२	१	८०	ठा ३ उ ३ सू १७८

१ सम्यग्दृष्टि होना भद्रक नाम का एक कारण।

१ सम्यग्दृष्टि होना भवनपति आयु बांधने का एक कारण।

१ देवों से भी बढ़कर अतिशय वाले,अतएव उनके भी आराध्य,केवलज्ञान केवलदर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते हैं।

१ देवों से भी बढ़कर अतिशय वाले अतएव उनके भी आराध्य, केवलज्ञान केवल दर्शन के धारक अरिहन्त भगवान् देवाधिदेव कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
दो भेद ज्ञान के	१२	१	१०	नसू २ गा २ठा २उ १सू ७१
दो भेद दण्ड के	३६	१	२३	ठा २उ १ सू ६६
दो भेद देवता के	५७	१	४०	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू १७
दो भेद द्रव्य और गुण	४६	१	२८	उत्त अ २८गा ६ तत्त्वार्थ अध्या ५
दो भेद द्रव्य के	६०	१	४२	तत्त्वार्थ अध्या ५ सू ३,४
दो भेद द्रव्येन्द्रिय के	२४	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या २ सू १७
दो भेद धर्म के	१८	१	१४	दश अ १गा १ टी गा २उ १ सू ७२ ध अधि १श्लो ३टीपृ ३
दो भेद नय के	१७	१	१४	रत्ना परि ७ सू ५
दो भेद निगोद के	६	१	८	आगम
दो भेद परोक्ष ज्ञान के	१५	१	१२	पन्न प २८ सू ३१२ गा २उ १ सू ७१ भ श ८उ २सू ३१८, नसू १ कर्म भा १गा ४
दो भेद प्रत्याख्यान के	५४	१	३१	भ श ७उ २सू २७१
दो भेद प्रवृत्ति और निवृत्ति	४५	१	२८	
दो भेद बन्ध के	५२	१	३०	कर्म भा १गा ३५ व्याख्या
दो भेद बन्धन के	२६	१	१८	ठा २उ ४सू ६६
दो भेद भावेन्द्रिय के	२५	१	१७	तत्त्वार्थ अध्या २ सू १८
दो भेद मरण के	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २
दो भेद मोहनीय कर्म के	२८	१	१६	ठा २ सू १०५,कर्म भा १गा १३
दो भेद रूपी के	६१	१	४२	भ श १२ उ ५ सू ४५०
दो भेद लक्षण के	६२	१	४२	न्यायदी प्रका १
दो भेद वेदनीय कर्म के	५१	१	३०	पन्न प २३, कर्म भा १गा १२
दो भेद श्रुतज्ञान के	१६	१	१३	नसू ४४ ठा २उ १सू ७१
दो भेद श्रुतधर्म के	१९	१	१५	ठा २उ १सू ७२

ध

---

[1] तत्त्व या व्याख्याता के प्रति द्वेष होने से उपदेश को अङ्गीकार न करनेवाला जीव।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नकुल का दृष्टान्त भाव अननुयोग पर	७८०	४	२४६	आव ह गा १३४पृ६१, वृ पीठिका नि गा १७२
नक्षत्र अट्ठाईस	९५३	६	२८८	जंबवक्ष ७सू १८१ सम २७
नक्षत्र दस ज्ञान वर्धक	७६७	३	४४४	सम १ ,ठा १ उ ३सू ७८१
नक्षत्रप्रमाण संवत्सर	४००	१	४२५	ठा ५उ ३सू ४६०,प्रवद्वा १४२
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२५	ठा ५उ ३सू ४६०,प्रवद्वा १४२गा ९०१
नक्षत्र संवत्सर	४००	१	४२७	
नगर धर्म	६९२	३	३६१	ठा १०उ ३ सू ७६०
नन्दमणियार की कथा	८२१	४	४४४	ना म १३,नवपद गा १६६ ५८
नन्दमणियार की कथा	९००	५	४६०	ज्ञा० अ १३
नन्दिनी पिता श्रावक	६८५	३	३३१	उपा० अ०९
नन्दी फल का दृष्टान्त	९००	५	४६४	ज्ञा० अ १५
नन्दीवर्द्धनकुमार की कथा	९१०	६	४३	विपा ६
नन्दीषेण की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	८२	न सू २७ गा ७२, आव ह गा ९४६
नन्दी सूत्र का विषय वर्णन	२०४	१	१७८	न
नपुंसकलिंग सिद्ध	८४६	५	११६	पन्न प १सू ७
नपुंसक वेद	६८	१	४६	कर्म भा १ गा २२
नमस्कार का स्वामी नमस्कार कर्ता है या पूज्य है ?	९८३	७	१०१	विशे गा २८७१ से २८९२
नमस्कार के उत्पादक निमित्त क्या हैं ?	९८३	७	१००	विशे गा २८ ६ २८३६
नमस्कार पुण्य	६२७	३	१७३	ठा ९उ ३ सू ६७६
नमस्कारमहिमापरइगाथा	९९४	७	१५३	

१ कर्मों को अपवर्तना उदीरणा आदि सभी करणों के अयोग्य एवं अवश्यवेद्य बनाने वाला जीव का वीर्य विशेष निकाचनाकरण कहलाता है। २ छल जाति आदि से दूसरे को पराजित करना। ३ अपने पक्ष की सिद्धि न कर सकने के कारण वादी या प्रतिवादी की हार हो जाना।

१ जिसमें कर्म उद्वर्तना और अपवर्तना करण के सिवाय शेष करणों के अयोग्य हो जाय ऐसा जीव का वीर्य विशेष।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
निर्विग० पच० के नौ आगार	६२९	३	१७४	आव ह अ ६ पृ ८५४, प्रव द्वा ४
निशीथसूत्र का विषय वर्णन	७०५	४	१८७	निशीथ
निश्चय	३९	१	२५	विशे गा ३५८९, द्रव्यानु अध्या ८
निश्चय और व्यवहार नय	५६२	२	४१९	न्यायप्र अध्या ५, द्रव्यानु अध्या ८
निश्चय और व्यवहार से श्रावक के बारह भाव व्रत	७६४	४	२८०	आगम
निश्चय नय के दो भेद	५६२	२	४२०	रत्ना परि ७ सू ५, न्यायप्र अध्या ५
निश्चय सम्यक्त्व	१०	१	९	धर्म अ १ गा १५, प्रव द्वा १४९
निद्रा के पाँच भेद	३५८	१	३७२	ठा ५ सू ३६८ टी, क भा १ गा ११
निषाद स्वर	५४०	२	२७१	अनु सू १२७ गा २५, ठा ७ सू ५५३
[1] निक्षेप	४७३	२	७९	अनु ५ उ ८ सू ४० टी, ठा ६ उ ३ सू ५३५ टी
निष्कांक्षित दर्शनाचार	५६९	३	७	पन्न १ सू ३७, उत्त अ २८ गा ३१
[2] निष्कृपता	४०५	१	४३२	उत्त अ ३६ गा २६४, प्र द्वा ७३
निष्क्रमण सुख	७६९	३	४५४	ठा १० उ ३ सू ७३७
निसर्गरुचि	६९३	३	३६२	उत्त अ २८ गा १७-१८
निसीहिया (नैषेधिकी) समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४९, उत्त अ २६ गा ७, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
निह्नव आठवां (शिवभूति अथवा बोटिक)	५६१	२	३९९	विशे गा २५५०-२६०९, ठा ७ उ ३ सू ५८७
निह्नव चौथा (अश्वमित्र)	५६१	२	३५८	विशे गा २३८८-२४२३
निह्नव छठा (रोहगुप्त)	५६१	२	३७१	विशे गा २४५१-२५०८

१ फल भोग के लिए होने वाली कर्म पुद्गलों की रचना विशेष। २ स्थावरादि जीवों पर दयाभाव न रखना तथा बिना उपयोग गमनादि क्रिया करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३८	विशेषा २७०८-२७१०
नोउत्सर्पिणी अवसर्पिणी	४३१	२	३६	विशेषा २७०८-२७१०
कालकी क्षेत्रकी अपेक्षा ४ भाग				
नोकषायमोहनीय	२६	१	२१	कर्म भा १गा १७
नोकषाय वेदनीय नौ	६३५	३	२०३	ठा ८उ ३ सू ७००
नोगौण नाम	७१६	३	३६५	अनु सू १३
नौ अनृद्धि प्राप्त आर्य	६५३	३	२१६	पन्न प १ सू ३७
नौ आगार निव्विगई पच्चक्खाण के	६२६	३	१७४	आव ह अ ६ पृ ८५४ प्रव द्वा ४ गा २०५
नौ आचार्यों के नाम (बल देव, वासुदेवों के पूर्वभव के)	६५१	३	२१६	सम १५८
नौ आत्मा न भ० महावीर के शासन में तीर्थङ्कर गोत्र बांधा	६२४	३	१६३	ठा ६ उ ३ सू ६६१
नौ आयु परिणाम	६३६	३	२०४	ठा ६ उ ३ सू ६८६
नौ काव्यरस	६३६	३	२०७	अनु सू १२६ गा ६३ १२६
नौ कोटि भिक्षा की	६३१	३	१७६	ठा ६ सू ६८१, आचा अ २ उ ५
नौ गण भगवान् महावीर के	६२५	३	१७१	ठा ६ उ ३ सू ६८
नौ नारद	६५२	३	२१६	सम उ गा ३ प्र न ८६
नौ निमित्त स्वप्न के	६३८	३	२०६	विशेषा १७०३
नौ नियाणा (निदान)	६४४	३	२१५	दशा द १०
नौ नैपुणिक	६४२	३	२१३	ठा ६ उ ३ सू ६७६
नौ नोकषाय वेदनीय	६३५	३	२०३	ठा ८ उ ३ सू ७००
नौ परिग्रह	६४०	३	२११	आव ह अ ६ पृ ८२५
नौ पापश्रुत	६४३	३	२१४	ठा ६ उ ३ सू ६७८

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
नौ पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ९ उ ३ सू ६७६
नौ प्रकार की वसति	६२३	६	१७०	आचा श्रु २ चू १ अ ३ २
नौ प्रतिवासुदेव	६४८	३	२१८	सम १५८, प्रव द्वा २११ गा १२१२ आव ह अ १ पृ १५९
नौ बलदेव	६४६	३	२१७	सम १५८ प्रव द्वा २०९ गा १२११ आव ह अ १ पृ १५६
नौ बलदेवों के पूर्वभव के नाम	६४९	३	२१८	सम १५८
नौ बात मनःपर्यय ज्ञान के लिए आवश्यक हैं	६२६	३	१७२	न सू १७
नौ ब्रह्मचर्य गुप्ति	६२८	३	१७३	ठा ९ उ ३ सू ६६३ सम ९
नौ भद्र काल के	६३४	३	२०२	विशे गा २०२०
नौ भेद ज्ञाता के	६४१	२	२१२	आचा श्रु १ अ २ उ ५ सू ८८
नौ महानिधियाँ चक्रवर्ती की	६५४	३	२२०	ठा ९ उ ३ सू ६७३
नौ लोकान्तिक देव	६४५	३	२१७	ठा ९ उ ३ सू ६८४
नौ वासुदेव	६४७	३	२१७	आव ह अ १ गा ४० पृ १५६, प्रव द्वा २१० गा १२१२
नौ वासुदेवों के पूर्वभव के नाम	६५०	३	२१८	सम १५८
नौ विगय	६३०	३	१७५	ठा ९ उ ३ सू ६७४, आव ह अ ६ गा १६०१ गा
नौ स्थान रोग उत्पन्न होने के	६३७	३	२०५	ठा ९ उ ३ सू ६६७
नौ स्थान संभोगी को विसंभोगी करने के	६३२	३	१७६	ठा ९ उ ३ सू ६६१
न्यग्रोध परिमंडल संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४९५, कर्म भा १ गा ४०
न्यायदर्शन	४६७	२	१३२	
न्यून तीर्थ वाले पर्व छः	४३३	२	४०	ठा ६ उ ३ सू ५२४, चन्द्र प्रा १२, उत्त अ २६ गा १५

प

१ क्रयाणक बेचने की वस्तु।

[1] वस्तु स्वरूप का ज्ञान करना और ज्ञानपूर्वक उसे छोड़ना।

१ सीखा हुआ ज्ञान विस्मृत न हो इसके लिए उसे फेरना।

१ साधु के सामने जाते समय सचित्त द्रव्यादित्याग रूप पाले जाने वाले नियम।

---

१ मोक्ष प्राप्ति के लिए किया जाने वाला ज्ञानादि आसेवन रूप अनुष्ठान विशेष।

२ काम अर्थात् अभिलाषा को उत्पन्न करने वाले गुण, शब्दादि।

१ काव्य में विशेष अशुभ तथा दूषित माने जाने वाले अक्षर ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पॉच पॉँचभावनाएंअदत्ता	३१९	१	३२६	
दानविरमण व्रत,				सम २५, आचा.ु २चू३ अ
परिग्रह विरमण व्रत,	३२१	१	३२९	२४सु १७९, आव ह अ ४
प्राणातिपात विरमण व्रत,	३१७	१	३२४	पृ ६५८, प्रव द्वा ७२गा ६३६
मृषावाद विरमणव्रत और	३१८	१	३२५	स ६४०, ध अधि ३ श्लो
मैथुन विरमण व्रत रूप	३२०	१	३२७	४८ टी पृ १२५
पाच महाव्रतों की				
पॉँचपॉँचभेद अस्तिकाय के	२७७	१	२५८	ठा ५उ ३सू ४४१
पॉँच प्रकार आभियोगिकी	४०४	१	४३१	उत्त अ ३६गा २६२ प्रव द्वा
भावना के				७३गा ६४४
पॉँचप्रकारआसुरीभावना के	४०५	१	४३१	उत्त अ ३६गा २६४ २६१,
पॉँचप्रकारकन्दर्पभावना के	४०२	१	४२८	प्रव.द्वा ७३गा ६४५ ६४२
पॉँचप्रकारका आचारप्रकल्प	३२५	१	३३३	ठा ५उ २ सू ४३३
पॉँच प्रकार का दण्ड	२९०	१	२६९	ठा ५ उ २ सू ४१८
पॉँचप्रकारका प्रत्याख्यान	३२८	१	३३६	ठा ५ सू ४६६ आव ह पृ ८४४
पॉँच प्रकार का स्वप्नदर्शन	४२१	१	४४४	भ श १६उ ६ सू ५७७
पॉँचप्रकारकिल्विषीभावना के	४०३	१	४३०	उत्त अ ३६गा २६३,प्रवद्वा ७
पॉँचप्रकार की अचित्तवायु	४१२	१	४३८	ठा ५उ ३सू ४४४
पॉँच प्रकार के मच्छ	४१०	१	४३६	ठा ५उ ३ सू ४५३
पॉँच प्रकार के मुण्ड	३६४	१	३७८	ठा ५उ ३ सू ४४३
पॉँच प्रकार के मुण्ड	३६५	१	३७९	ठा ५उ ३ सू ४४३
पॉँच प्रकार के वनीपक	३७३	१	३८७	ठा ५उ ३ सू ४५४
पॉँच प्रकार के श्रमण	३७२	१	३८७	प्रव द्वा ९४ गा ७३१

१ चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से दूसरी निधि।

[1] सीखे हुए धनादि ज्ञान में शंका होने पर प्रश्न करना ।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
पृथ्वीकाय के चालीस भेद	९८७	७	१४५	पन्न प १ सू १५
पृथ्वीकाय के सात भेद	५४५	२	२८४	पन्न प १ सू १४
पृथ्वी के छः भेद	४६५	२	६५	जी. प्रति ३ सू १०१
पृथ्वी के देशतः धूजने के ३ बोल	११६	१	८२	ठा ३ उ ४ सू १९८
पृथ्वी ३ वलयों से वलयित है	११५	१	८१	ठा ३ उ ४ सू २१६
पृथ्वी सारी धूजने के ३ बोल	११७	१	८२	ठा ३ उ ४ सू १९८
[1] पृष्ठ लाभिक	३५४	१	३६६	ठा ५ उ १ सू ३९६
पृष्ठिजा (पुट्ठिया) क्रिया	२९४	१	२७९	ठा २ सू ६० ठा ५ सू ४१९
पेटा गोचरी	४४६	२	५१	ठा ६ उ ३ सू ५१४, उत्त अ ३० गा १९ प्रव द्वा ९७ गा ७४५ धर्मधि ३ श्लो २२ टी पृ ५७
पैंतालीस आगम	९९७	७	२६०	जैन प्रति रा भा १ प्रस्तावना
पैंतालीस गाथा उत्तराध्ययन सूत्र के पच्चीसवें अध्ययन की	९९६	७	२५४	उत्त अ २५
पैंतीस गुण गृहस्थ धर्म के	९८०	७	७४	योगशा प्र १ श्लो ४७ से ५६
पैंतीस वाणी के अतिशय	९७९	७	७१	सम ३५ टी रा सू ४ टी उव सू १० टी
पोट्टिल अनगार	६२४	३	१६४	ना ९ सू १६१ अणुत्त व ३ अ ९
[2] पातक वस्त्र	३७४	१	३८९	ठा ५ उ ३ सू ४४६
पोरिसी का प्रमाण बारह महीनों का	८०३	४	३०४	उत्त अ २६ गा १३-१४
पोरिसी के छः आगार	४८३	२	९७	प्रव द्वा ४ गा २०१-२०३ आव ह अ ६ नि गा १५९७ पृ ८५१-८५२ पचा ५ गा ८-११
पोरिसी साड्ढपोरिसी का पच्चक्खाण	७०५	३	३७७	प्रव द्वा ४ गा २०१-२०३ आव ह अ ६ नि गा १५९७ पृ ८५१-८५२ पचा ५ गा ८-११

[1] आहार आदि के लिए पूछने वाले दाता से ही भिक्षा लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।
[2] कपास का बना हुआ वस्त्र।

१ वे देव जो नगरनिवासी अथवा साधारण जनता की तरह रहते हैं।

२ दस अवस्थाओं में से एक अवस्था, इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष को अपने अभीष्ट की सिद्धि एवं कुटुम्बवृद्धि की बुद्धि उत्पन्न होती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
प्रतान स्वप्न दर्शन	४२१	१	४४४	भ श १ उ ६ सू ६७७
प्रतिक्रमण आवश्यक	४७६	२	६१	आव ह अ ४
प्रतिक्रमण कल्प	६६२	३	२४०	पंचा १७ गा ३२ ३६
प्रतिक्रमण के आठ भेद और उन पर दृष्टान्त	५७६	३	२१	आव ह अ ४ नि गा १२३३ १२४२
प्रतिक्रमण के छः भेद	४८०	२	६४	ठा ६ उ ३ सू ५३८
प्रतिक्रमण क्या व्रतरहित को भी करना चाहिए?	६१८	६	१४४	आव ह अ ४ नि गा १ ७० टी पृ ५६८ ४ च अ (वंदित्ता सूत्र)
प्रतिक्रमण पर कथा	५७६	३	२२	आव ह अ ४ नि गा १२४२
प्रतिक्रमण पाँच	३२६	१	३३७	ठा ५ उ ३ सू ४६७ आव ह अ ४ नि गा १२५० १२५१
प्रतिघात पाँच	४१६	१	४४०	ठा ५ उ १ सू ४०६
[1] प्रतिचरणा पर कथा	५७६	३	२३	आव ह अ ४ नि गा १२४२
प्रतिज्ञा	३८०	१	३६६	रत्ना परि ३ न्यायदी प्रका ३
प्रतिपत्ति श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा ७
प्रतिपत्ति समास श्रुत	६०१	६	४	कर्म भा १ गा ७
प्रतिपाती अवधिज्ञान	४२८	२	२८	ठा ६ सू ५२६ न सू १४
प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के पाँच अतिचार	३११	१	३११	उपा अ १ सू ७
[2] प्रतिपृच्छा समाचारी	६६४	३	२५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६ उत्त अ २६ गा ३, प्रव द्वा १ १ गा ७६०

१ संयम का सावधानता पूर्वक निर्दोष पालन करना प्रतिचरणा है।

२ गुरु ने पहले जिस कार्य के लिए निषेध कर दिया है उसी कार्य में आवश्यकता नुसार फिर प्रवृत्त होना हो तो विनय पूर्वक गुरु से पूछना।

[1] एक रात्रि आदि की पडिमा अंगीकार कर कायोत्सर्ग में स्थिर रहने वाला साधु।

१ स्कन्ध या देश में मिला हुआ द्रव्य का अति सूक्ष्म विभाग।

२ इस अवस्था को प्राप्त होने पर पुरुष का स्वास्थ्य गिरने लगता है।

३ जो धर्म के प्रचार में सहायक होते हैं वे प्रभावक कहलाते हैं।

१ शास्त्रार्थ या विवाद के लिए अवसर आदि की जानकारी, प्रयोगमतिता।

1 द्वादशाङ्ग रूप प्रवचन का वर्णवाद एवं गुण कीर्तन करना प्रवचन उद्भावनता है।

2 सामायिक व्रत आदि का आरोपण करने वाले आचार्य।

* पृथक् पृथक् शास्त्रों एवं अन्य ग्रन्थों से संग्रह कर लिए हुए प्रश्न तथा उनके उत्तर।

१ भोजन से बचा हुआ तुच्छ एवं ठण्डा आहार का गवेषक अभिग्रहधारी साधु ।

फ

[1] दस अवस्थाओं में से चौथी अवस्था।

[2] ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानी और गुरु के प्रति भक्ति एवं श्रद्धा रखना

* हरिभद्रीयावश्यक निर्युक्ति गाथा ४०१ में सुभूम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का सातवीं नरक में जाना मघवा और सनत्कुमार चक्रवर्ती का तीसरे सनत्कुमार देवलोक में उत्पन्न होना एवं शेष आठ चक्रवर्तियों का सिद्ध होना बतलाया है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
बारह भावना पर दोहे	८१२	४	३७६	
बारह भाव व्रत श्रावक के निश्चय और व्यवहार से	७९४	४	२८०	आगम
बारह भिक्खु पडिमा	७९५	४	२८५	सम १ दशा द ७, भ श २उ १
बारह भेद अप्रशस्त मन विनय के	७९१	४	२७५	व्य.सू २०
बारह भेद अवग्रह ज्ञान के	७८७	४	२६९	ठा ६उ ३सू ५१०टी विशे गा ३०७ तत्त्वार्थ अध्या १सू १६
बारहभेदअसत्यामृषाभाषाके	७८८	४	२७२	पन्न प ११ सू१६५टी
बारह भेद कल्पोपपन्न देवों के	८०८	४	३१८	पन्न प २,४ ६ जीप्रति ३ सू २ ७-२०३ तत्त्वार्थ अध्या ४
बारह भेद भाषा के	७७९	४	२३८	प्रश्न धर्मद्वार २सू २४ टी
बारह भेद सूत्र के	७७८	४	२३५	सूउ १गा १२२१
बारहमहीनोंमेंपोरिसी का परिमाण	८०३	४	३०४	उत्त अ २६गा १३-१४
बारह मान्यताएं चन्द्र और सूर्यों की संख्या के विषय में	७९९	४	३००	सूर्यप्र १९सू १००
बारह मास	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १०प्रा प्रा १९
बारह विशेषण धर्म के	८०४	४	३०६	शा भा २प्रक १ (धर्मभावना)
बारह विशेषण सापेक्ष यति धर्म के	८०६	४	३१४	ध वि सू १६६
बारह व्रत श्रावक के (पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	श्राव.ह म ६पृ ८१७ ३८, उपा म १सू६ ठा ५सू३८९, पंचा १गा ७ ३२ ध अधि २ श्लो २३ ४०पृ ४३ ६४
(तीन गुणव्रत)	१७८क	१	९१	
(चार शिक्षाव्रत)	१८६	१	१४०	

[1] द्रव्यानुयोग का भेद, बाह्य (विलक्षण) और अबाह्य (समान) का विचार।
[2] बीज से उगने वाली वनस्पति, जैसे शालि आदि।

भ

[1] ब्राह्मण दान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक।

१ पृष्ठ ३७ पर टिप्पणी देखो।

[1] राजा आदि के डर से दिया जाने वाला दान।

१ आगामी भव में देव होने वाला जीव। २ भंगली का बना हुआ वस्त्र।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
भावना२५पाँचमहाव्रतकी	९३८	६	२१७	आचा श्रु २ चू ३ अ २४ सू. १७६ सम २५ आव ह अ ४ पृ ६५८प्रश्न.द्वा. ०गा ६३६ ४०
भावना पचीस पाँचमहा व्रतों की	३१७ ३२१	१	३२४- ३२६	ध अधि ३श्लो ४८टीपृ १२५
भावना बारह	८१२	४	३५५	शा भा १,२ भावना,प्रव द्वा.२ प्रश्न द्वा ? ०गा ५७२ ५७३ तत्त्वार्थ अध्या ०सू.७
भाव निक्षेप	२०९	१	१८८	अनु.सू १५०,तत्त्वार्थ अध्या ?
भाव पाँच जीव के	३८७	१	४०७	अनु.सू १२६,प्रवद्वा २२१गा १२६० ६८ कर्मभा ४गा ६४ ६
भाव पुद्गल परावर्तन सूक्ष्म और बादर का स्वरूप	६१८	३	१३६	कर्म भा ५गा ८६-८८
भाव प्रतिक्रमण	३२६	१	३३६	ठा ५उ ३सू ४६७ आव.ह.अ गा १२५०-१२५१ पृ.५६४
भाव प्रत्यनीक	४४५	२	५१	भ श ८ उ ८ सू ३३६
भाव प्रत्युपेक्षणा	४५६	२	६०	ठा ६उ ३ सू५०२
भाव प्रमाण नाम के चार भेद	७१६	३	४०१	अनु. सू १३
भाव प्राण की व्याख्या, भेद	१९८	१	१५७	पन्न प १ सू १२टी
भाव लेश्या	४७१	२	७२	भ श १२ उ ५ उत्त अ ३४ पन्न. प १७ उ ४,कर्म भा ४गा १३तथा ३३१३,आव ह.अ ४पृ ६४४, द्रव्यलो ग ३श्लो २८४ २८२
भावशुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	ठा ५उ ३ सू ४६६ आव.ह अ ६पृ ८४७
भावश्रावक के सत्रह लक्षण	८८३	५	३९२	ध अधि २श्लो २२टी पृ.४५
भाव सत्य	६९८	३	३७०	ठा १ सू ७४१,पन्न.प ११सू १६५,ध.अधि.२श्लो ४१पृ १२१

१ औदारिक परिणाम आदि भावों का क्रम, परिपाटी।

२ द्रव्यानुयोग का एक भेद

म

१ पूरी वस्तु न लेकर टुकड़े की हुई वस्तु को ही लेने वाला भिक्षुपिण्डपाती साधु।
२ भुजाओं से चलने वाले जीव चूहे आदि।
३ भूत, भविष्यत और वर्तमान तीनों कालों में विद्यमान होने से जीव भूत कहलाता है।

१ वाद या शास्त्रार्थ के समय अपनी जानी हुई बात को भी भूल जाना अथवा समय पर उसका याद न आना।

* श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर मध्य ग्राम की जो सात मूर्छनाएं छपी हैं वे भगवान शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा ठाणांग सूत्र में मध्य ग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा ।
समोक्कन्ता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥

अर्थ—उत्तरमंदा रत्नी उत्तरा उत्तरासमा समवक्रान्ता सुवीरा और अभिरूपा।

१ केवल बीच बीच के घरों में भिक्षा लेने वाला अभिग्रहधारी साधु।

२ ढाई द्वीप और समुद्रों में रहे हुए संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के मनोगत भावों को जानना।

१ चक्रवर्ती की नौ महानिधियों में से एक निधि।

२ उत्पाद व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदों को मातृकापद कहते हैं। इन्हें जीवादि द्रव्यों में घटाना मातृकानुयोग है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मान नि:सृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १०उ ३सू ७४१ पन्न प ११ सू १६५ ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
मानसंज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू ७५२,भ श ७उ ८
माया का फल	५७८	३	१९	ठा ८उ ३सू ५९७
माया की आलोयणा के आठ स्थान	५७७	३	१६	ठा ८उ ३सू ५९७
माया की आलोयणा न करने के आठ स्थान	५७८	३	१८	ठा ८उ ३सू ५९७
माया के चार भेद और उनकी उपमाएं	१६१	१	१२१	पन्न प १४सू १८८, ठा ४उ २ सू २९३ कम भा १गा २०
माया के चौदह नाम	८३६	५	३१	सम ५२
माया के सत्रह नाम	८८०	५	३८५	सम ५२
माया दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७गा ५६७,ध अधि ३ श्लो २२पृ ४०,पि नि गा ४०८, पिं वि गा ५८ पंचा १३गा १८
माया नि:सृत असत्य	७००	३	३७१	ठा १०सू ७४१ पन्न प ११सू १६५,ध अधि ३श्लो ४१पृ १२२
[1] मायाप्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा उ १ सू ६०,ठा ५उ २सू ४१९ पन्न प २२ सू २८४
मायावी भावना	४०३	१	४३०	उत्त अ ३६गा २६३,प्रव द्वा ७३ गा ६४३
माया शल्य	१०४	१	७३	सम ३,ठा ३उ ३सू १८२,ध अधि ३श्लो २७टी पृ ७६
माया संज्ञा	७१२	३	३८७	ठा १०उ ३सू ७५२ भ श ७उ ८

[1] छल एवं माया द्वारा दूसरों को ठगने के व्यापार से लगने वाली क्रिया।

१ ज्ञान दर्शन चारित्र रूप सत्य धर्म में तथा उसके पालन करने वाले साधुओं में स्वकल्पित दूषण बतलाना। २ ज्ञान दर्शन चारित्र रूप सत्यमार्ग को छोड़ कर विपरीत मार्ग को ग्रहण करना। ३ ऊंची जगह जहाँ आसानी से हाथ न पहुंच सके वहाँ पंजों पर खड़े होकर या निसरणी आदि लगाकर आहार देना। ४ साधुओं के लिए चतुर्मास या किसी दूसरे कारण के बिना एक मास से अधिक एक स्थान पर न रहना मासकल्प कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मास बारह	८०२	४	३०३	सूर्य प्रा १० प्रा प्रा १६
१ मासिक अनुद्घातिक	३२५	१	३३३	ठा ५ उ २ सू ४३३
२ मासिक उद्घातिक	३२५	१	३३४	ठा ५ उ २ सू ४३३
माहण का अर्थ क्या श्रावक भी होता है ?	९८३	७	१२६	भ श १३ उ ७ सू ४९२ टी, भ श २ उ ५ सू ११२ टी
माहेन्द्र देवलोक का वर्णन	८०८	४	३२१	पन प २ सू ५३
मिच्छाकार (मिथ्याकार) समाचारी	६६४	३	३५०	भ श २५ उ ७ सू ८०१, ठा १० उ ३ सू ७४६, उत्त अ २६ गा ३, प्रव द्वा १०१ गा ७६०
३ मितवादी	५६१	३	६२	ठा ८ उ ३ सू ६०७
मिथ्यात्व आश्रव	२८६	१	२६८	ठा ५ उ २ सू ४१८ सम ५
मिथ्यात्व दस	६९५	३	३६४	ठा १० उ ३ सू ७३४
मिथ्यात्व पाँच	२८८	१	२६७	ध अधि २ श्लो २२ टी पृ ३६, कर्म भा ४ गा ५१
मिथ्यात्व प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा ५ उ ३ सू ४६७ आव ह अ ४ गा १२५०-१२५१ पृ ५६४
मिथ्या दर्शन	७७	१	५५	भ श ८ उ २ सू ३२०, ठा ३ सू १८४
४ मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया	२९३	१	२७८	ठा २ उ १ सू ६०, ठा ५ उ २ सू ४१६, पन प २२ सू २८४
मिथ्या दर्शन शल्य	१०४	१	७४	सम ३, ठा ३ उ ३ सू १८२

१ जिस प्रायश्चित्त का भाग न हो यानि गुरु प्रायश्चित्त।

२ जो प्रायश्चित्त विभाग करके दिया जाय यानि लघु प्रायश्चित्त।

३ जीवों के अनन्तानन्त होने पर भी उन्हें परिमित बताने वाले अक्रियावादी।

४ मिथ्या दर्शन अर्थात् तत्त्व में अश्रद्धान या विपरीत श्रद्धान से लगने वाली क्रिया मिथ्या दर्शन प्रत्यया क्रिया कहलाती है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
मिथ्यादृष्टि गुणस्थान	८४७	५	७२	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
मिथ्याश्रुत	८२२	५	७	न०सू ४१,विशे गा ५२७
मिश्र गुणस्थान	८४७	५	७३	कर्म भा २ गा २ व्याख्या
१ मिश्र जात दोष	८६५	५	१६२	प्रव.द्वा.६७गा ५६५ धर्म... रत्रा १ ठा सू ३८,पिं नि ... ९२ पिं विगा ३ पचा १३...
मिश्र दर्शन	७७	१	५५	भ श ८ उ २,पं ५३ श्रू १...
मिश्र भाषा	२६६	१	२४६	पन्न ११ सू १६१
मिश्र भाषा के दस प्रकार	६६६	३	३७०	ठा १०उ ३सू ७४१ पन्न.प... १६५ धर्मा ३ श्लो ४१टी...
२ मुमुही अवस्था	६७८	३	२६८	ठा १०उ ३ सू ७७२
मुख्य (प्रधान)	३८	१	२४	तत्त्वार्थ मध्या ५ सू ३१
मुण्ड दस	६५६	३	२३१	ठा १ उ ३ सू ७४६
मुक्तावली तप यन्त्र सहित	६८६	३	३८८	अंत व ८ अ ६
मुक्ति	३५०	१	३६५	ठा ५सू ३८६,प्रव ... ५५४ धर्मा धि ३ श्लो ४६ पृ...
मुक्ति	६६१	३	२३३	नव गा २३ सम १०,शा... प्रक ८ नवतत्त्वाकर्ता
मुनि(मुणि)माहण(ब्राह्मण)	७७०	४	७	जैनविद्या वाल्यूम १ न १
मुद्रिका की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	८४६	६	२७२	न सू २७ गा ६५ टी
मुहूर्त	५५१	२	२६३	ज्योतिष रसू १८ कालाधि...

१ साधु और साधु के लिए एक साथ पकाया हुआ आहार।

२ दस अवस्थाओं में से नवीं अवस्था इस अवस्था को प्राप्त होकर पुरुष जरा... राक्षसी से समाक्रान्त होकर अपने जीवन के प्रति भी उदासीन हो जाता है।

*श्री जैन सिद्धान्त बोलसंग्रह भाग २ पृष्ठ २७३ पर षड्ज मध्यम और गान्धार ग्रामों की जो इक्कीस मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीतशास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोगद्वार तथा स्थानांग सूत्र में इन तीनों ग्रामों की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है —

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी अ सारकंता य।
छट्ठी अ सारसी नाम, सुद्ध सज्जा य सत्तमा ॥३९॥
उत्तरमंदा रयणी, उत्तरा उत्तरासमा।
समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥४०॥
नंदी अ खुड्डिआ पूरिमा य, चउत्थी अ सुद्धगंधारा।
उत्तरगंधारा वि अ, सा पंचमिआ हवइ मुच्छा ॥४१॥
सुट्ठुत्तरमायामा सा छट्ठी सव्वओ य णायव्वा।
अह उत्तरायया कोडिमा य, सा सत्तमी मुच्छा ॥४२॥

अर्थ षड्ज ग्राम की सात मूर्छनाएं-मार्गी, कौरवी हरिता, रत्ना, सारकान्ता, सारसी और शुद्धषड्जा। मध्यम ग्राम की सात मूर्छनाएं-उत्तरमंदा, रत्ना उत्तरा, उत्तरासमा, समक्रान्ता, सुवीरा और अभिरूपा। गान्धार ग्राम की सात मूर्छनाएं-नंदी क्षुद्रिका, पूरिमा, शुद्धगान्धारा, उत्तरगान्धारा, सुष्ठुतरमायामा और उत्तरायत कोटिमा।

[1] जिस वनस्पति का मूल भाग बीज का काम देता है जैसे कमल आदि।

[१] मौन व्रत पूर्वक आहार की गवेषणा करने वाला अभिग्रहधारी साधु।

य

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
योग का चौथा अङ्ग (प्राणायाम)	५५६	२	३०२	यो प्रका ५,रा यो द्व,पी प गीता अध्याय ६
योग का साधन करने के लिय नियमित आहार विहारादि	५५६	२	३१४	गीता अध्याय ६
योग की व्याख्या और भेद	६५	१	६८	ठा ३सू १२४ तत्त्वार्थ अध्या १
योग के कुछ आसन	५५६	२	३१०	पी प०
योग के पन्द्रह भेद	८५५	५	१३८	पन्न प १६सू २ ३,भ श २५उ १
योग दर्शन	४६७	२	१४६	
योग दोष	८६६	५	१६५	प्रव द्वा ६७गा ५६८,ध अधि ३ श्लो २२पृ ४० पि नि गा ४०६ पि वि गा ५६ पंचा १३गा १६
योग नारकियों में	५६०	२	३३७	जी प्रति ३सू ८८
योग परिणाम	७४६	३	४२७	ठा १०उ ३सू ७१३ पन्न.प १३
योग प्रतिक्रमण	३२६	१	३३८	ठा ५उ ३सू ४६७ आव ह अ ४ गा १२५०–१२५१पृ ५६८
योगमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १०
[1] योगवाहिता	७६३	३	४४५	ठा १०उ ३सू ७५८
योग संग्रह बत्तीस	६६५	७	१६	उत्त अ ३१गा २० टी,प्रवचन धर्म-द्वार ५सू २८टी सम ३२ आव ह अ ४गा १२७४ ७पृ ६६३
योग सत्य	६६८	३	३७०	ठा १०सू ७४१ पन्न प ११सू १६५ध अधि ३श्लो ४१टी पृ १२१
योगाङ्ग आठ	६०१	३	११४	यो०, रा०यो०
योगात्मा	५६३	३	६६	भ श १२उ १ सू ४६७

[1] श्रुतकर्म वाधन का कारण सांसारिक पदार्थों पर से राग हटा कर शास्त्रों का पठन पाठन करना इससे शुभ कर्मों का बन्ध होता है ।

१ रस्सी से नाप कर लम्बाई चौड़ाई मालूम करना रज्जु संख्यान कहलाता है।

१ राजा के यहाँ से आहारादि लेने के विषय में बताया गया साधु का आचारविशेष।

२ चक्रवर्ती आदि राजा जितने क्षेत्र के स्वामी हैं उस क्षेत्र में रहते हुए साधुओं को राजा की आज्ञा लेना राजावग्रह है।

[1] धान आदि के ढेर का नाप कर या तोल कर परिमाण जानना।

[2] श्रद्धा पूर्वक ज्ञान दर्शन चारित्र आदि के सेवन की इच्छा।

[3] वास्तविकता न होने पर भी रूप विशेष को धारण करने से किसी व्यक्ति या वस्तु को उस नाम से पुकारना रूपसत्य है।

ल

[1] जिस समकित के होने पर जीव सदनुष्ठान में सिर्फ रुचि रखता है किन्तु आचरण नहीं कर पाता वह रोचक समकित है।

१ वाद का एक दोष, इसके अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असम्भव तीन भेद हैं।

२ टेढ़ी लकड़ी की तरह कुबड़ा होकर मस्तक और कोहनी को जमीन पर लगाते हुए एवं पीठ से जमीन को स्पर्श न करते हुए सोने वाला साधु।

* ववक रूक्ष और घी तेलादि रहित आहार का गवेषक अभिग्रहधारी साधु।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
लेश्या नारकी जीवों में	५६०	२	३२१	जी प्रति ३सू ८८,प्रव द्वा १७८
लेश्या परिणाम	७४९	३	४२७	ठा १०उ ३सू ७१- पन्न प १३
लेश्या मार्गणा और भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा १३
लोक का नक्शा	८४५	५	५३	
लोक का नक्शा बनाने की विधि	८४५	५	४८	प्रव द्वा १४३ गा ६०६-८०७
लोक का संस्थान	८४५	५	४७	तत्त्वार्थ अध्या ३सू६ प्रव द्वा १४३गा ६०८
लोक की व्याख्या और भेद	६५	१	४५	लोक भा स १२,भ श ११ उ १०सू ४२०
लोक की व्यवस्था ४ प्रकार से	२६७	१	२४७	ठा ४उ ४ सू २८६
लोक के भेद	८४५	५	४६	तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६ टी
लोक चौदह राजू परिमाण	८४५	५	८५	प्रव द्वा १४३गा ६०२-६१७, तत्त्वार्थ अध्या ३ सू ६टी भ श १३उ ४सू ४८६ भ श १३ उ ४ सू ४७३ ४८०
लोक निराकृत साध्य धर्म विशेषण पक्षाभास	५४६	२	२६१	रत्ना परि ६सू ४४
१ लोकपाल	७२६	३	४१६	तत्त्वार्थ अध्या ४ सू ४
लोक भावना	८१२	६	३७०	शा भा २प्रक ११ भावना,ज्ञान प्रक २, प्रव द्वा ६७ गा ५७२, तत्त्वार्थ अध्या ६ सू ७
लोक में अन्धकार कितने कारणों से होता है?	६१८	६	१५६	ठा ४उ ३ सू ३२४

१ सीमा (सरहद) की रक्षा करने वाले देव लोकपाल कहलाते हैं।

[1] सामान्य रूप से जानी हुई बात को विशेष रूप से जानना लोक संज्ञा है।

१ जमीन के साथ वस्त्र को रगड़ते हुए उपेक्षा पूर्वक प्रतिलेखना करना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वन्दना के बत्तीस दोष	९९९	७	३८	आव ह गा १२०७-१२११ पृ ५४३, बृ उ ३ गा ४४७१-८२ प्रव द्वा २ गा १५० १७३
वन्दना योग्य समय के पाँच बोल	३४९	१	३६४	आव ह म ३ नि गा ११९९ पृ ५४१, प्रव द्वा २ गा १२५
'वमन किये हुए को ग्रहण न करना' विषय पर छः गाथाएं	९९४	७	१८९	
[1] वय स्थविर	९१	१	६६	ठा ३ उ सू १५९
वरदत्त कुमार की कथा	९१०	६	६०	वि श्रु २०
वर्गणा आठ	६१७	३	१३४	विशे गा ६३१ -३७
वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त० श्र ३० गा १०
वर्ग वर्ग तप	४७७	२	८८	उत्त श्र ३० गा ११
वर्ग वर्ग संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४७
वर्ग संख्यान	७२१	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४७
वर्ण नारकी जीवों का	५६०	२	३३६	जी प्रति ३ सू ८७
वर्ण परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू ७१३, पन्न प
वर्ण पाँच	४१४	१	४३९	ठा ५ उ १ सू ३९०
वर्ण संज्वलनता विनय चार	२३७	१	२१७	दशा ४
वर्णादि के भेद से स्त्रियाँ या स्वर भेद	५४०	२	२७५	अनु सू १२७ गा ५५, ठा ७ उ ३ सू ५५३
वर्तमान अवसर्पिणी के कुलकरों की भार्याओं के नाम	५०९	२	२३८	सम १५७, ठा ७ उ ३ सू ५५
वर्तमान अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थङ्कर	९२९	६	१७७	सम १५७ आव ह नि गा २० ३९० आव म गा २३१ ३८ स टी, प्रव द्वा ७ से ४५

[1] साठ वर्ष की अवस्था के साधु वय स्थविर (जाति स्थविर) कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वर्तमान अवसर्पिणी के सात कुलकर	५०८	२	२३७	ठा ७उ ३सू ५५६ सम १५७, जै भा २पृ ३६२
वर्धमान (महावीर)	७७०	४	३	जन सिद्धा वाल्यूम१न १
[1] वर्धमान अवधिज्ञान	४२८	२	२७	ठा ६उ ३सू ५२६ नसू १२
वर्षधर पर्वत सात	५३७	२	२७०	ठा ७उ ३सू ५५५ सम ७
वलन्मरण	७६८	४	२६८	भश २ उ १ सू ६१
वलन्मरण	८७६	५	३८३	सम १७ प्रवद्वा १५७गा १००६
वलय तीन	११५	१	८१	ठा ३उ ४ सू २२४
*वशार्तमरण	८७६	५	३८३	सम १७ प्रव द्वा १५७गा १००६
*वसट्ट मरण	७६८	४	२६८	भश २उ १ सू ६१
वसति के नौ भेद	६२३	६	१७०	आचा श्रु २चू १अ २उ २
वसति परिकर्मोपघात	६६८	३	२५५	ठा १०उ ३सू ७३८
वसुमती (चन्दनबाला)	८७५	५	१६७	आव० नि गा ५२० ५२१ त्रि पर्व१० चन्दन
वस्तु का लक्षण	४६७	२	१८२	
वस्तु के स्वपर चतुष्टय के चार भेद	२१०	१	१८८	न्यायप्र अ या ७,रत्ना परि ४ सू १५ टी
वस्तुत्व गुण	४२५	२	१६	आगम,द्रव्य त अध्या ११श्लो २
+ वस्तु दोष	७२२	३	४१०	ठा १०उ ३ सू ७४३
+ वस्तु दोष	७२३	३	४११	ठा १०उ ३सू ७४३

[1] शुभ अध्यवसायों के कारण जो अवधिज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

* दीप शिखा पर गिर कर मरने वाले पतंगिये के समान इन्द्रियों के वशीभूत प्राणी का मरण वशार्त (वसट्ट) मरण कहलाता है।

+ जहाँ साधन और साध्य रहें एस पक्ष को वस्तु कहते हैं। पक्ष के दोष वस्तु दोष कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वस्तु श्रुत	९०१	६	५	कर्म भा १ गा ७
वस्तु समास श्रुत	९०१	६	५	कर्म भा १ गा ७
वस्त्र के पाँच भेद	३७४	१	३८९	ठा ५ उ ३ सू ४४६
वस्त्र पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ९ उ ३ सू ६७६
वह्निदशा सूत्र के १२ अ० का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७, ३८४	४, १	२३४, ४०४	निरयावलिका सूत्र
वाक् कौत्कुच्य	४०२	१	४२९	उत्त अ ३६ गा २६१, प्रव द्वा ७३
वागतिशय	१२९ख	१	९७	स्या श्लो १ टी
वाचना	३८१	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६५
वाचना के चार प्रकार	२०७	१	२८५	ठा ४ उ ३ सू ३२६
वाचना के चार पात्र	२०६	१	२८५	ठा ४ उ ३ सू ३२६
वाचना देने के पाँच बोल	३८२	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६८
१ वाचना सम्पदा	५७४	३	१४	दशा द ४, ठा ८ उ ३ सू ६०१
वाणी के पैंतीस अतिशय	९७९	७	७१	सम ३५ टी, रा सू ४ टी उव सू १० टी
२ वात्सल्य दर्शनाचार	५६९	३	८	पन्न० प १ सू ३७ गा १२८ उत्त अ २८ गा ३१
वाद के दस दोष	७२२	३	४०६	ठा १० उ ३ सू ७४३
वादी के चार भेद	१९१	१	१४४	भग ३० उ १ सू ८२४ टी आचा अ १ उ १ सू ३ टी सूय अ. १२
वादी चार	१९२	१	१४९	आचा अ १ उ १ सू ५
३ वामन संस्थान	४६८	२	६८	ठा ६ सू ४९५, कर्म भा १ गा ४०

१ शिष्यों को एवं सम्पदा शिष्यों को शास्त्र पढ़ाने की योग्यता।

२ अपने धर्म से तथा स्वधर्मियों से प्रेम रखना। ३ जिस शरीर में छाती, पेट पीठ आदि अवयव पूरे हों किन्तु हाथ पैर आदि अवयव छोटे हों।

[1] प्रतिलेखना किये हुए वस्त्रों को बिना प्रतिलेखना किये हुए वस्त्रों में मिला देना ।

[1] आगम तथा युक्ति संगत क्रिया विषय में फल के प्रति संदेह करना।

[2] स्त्री रूप देवता अधिष्ठित जप होमादि से सिद्ध होने वाली विद्या का प्रयोग करके आहारादि लेना। [3] वैताढ्य पर्वत निवासी प्रज्ञप्ति आदि विद्याओं को धारण करने वाले विशिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
विनय	४७८	२	८९	उत्तमू१० उत्त अ ३० गा ३, प्रवद्वा ९गा ३७१/१ (सू ५११
विनय के तेरह भेद	८१३	४	३६१	दश अ ६ उ १नि गा ३२५-३२६ प्रवद्वा ९६गा ५५० ५१
विनय के बावन भेद	१००६	७	२७८	प्रवद्वा ६५गा ५५१ प्र मधि ३ श्लो ५८२१८१
विनय के मूल भेद सात और १३४ अवान्तर भेद	६३३	३	१९३	उ सू १०,भ श २५ उ ७ सू८०२
विनय के विषय में ११ गाथाएं	९९४	७	१९५	
विनय के सात भेद	४९८	२	२२९	उत्तमू १० भ श २५उ ७सू ८ ठा ७उ ३सू ५८५,प्रवि ३ श्लो ५४टी पृ ८१
विनयप्रतिपत्ति के ४ प्रकार	२३८	१	२१६	दशा द ४
विनय प्रतिपत्ति चार	२२९	१	२१३	दशा द ४
विनयवादी की व्याख्या और उसके बत्तीस भेद	१९८	१	१८७	भ श ३० उ १ सू८ २टी, आचा श्रु १अ १उ १सू २टी, सूय श्रु १अ १२
विनय शुद्ध प्रत्याख्यान	३२८	१	३३७	आ ६सू ४८६ भाव ह अ ६पृ ८४७
विनय समाधि अध्ययन की चौबीस गाथाएं	९३३	६	२०१	दश अ ९ उ २
विनयसमाधिअ० की १५ गाथा	८५३	५	१२७	दश अ ९ उ ३
विनयसमाधिअ० की १७ गाथा	८७७	५	३७७	दश अ ९ उ १
विनयसमाधिअ० की ७ गाथा	५५३	२	२९३	दश अ ९ उ ४
विनय समाधि के चार भेद	५५३	२	२९३	दश अ ९ उ ४
विनय समाधि के चार भेद	५५३	२	२९४	दश अ ९ उ ४

१ ज्ञानाचार का एक भेद, ज्ञानदाता गुरु का विनय रखना विनयाचार है।

२ विवक्षित वस्तु में जो धर्म है उससे विपरीत धर्म बताने वाला पद।

[1] पैर जमीन पर रख कर सिंहासन ... पुरुष के नीचे से ... लेने पर जो अवस्था रहती है उसको ... वाला साधु ... है।

[2] धर्म कार्यों में यथाशक्ति ... द्वारा प्रवृत्ति ...

[illegible] ११० १३ ३०, १ ५११

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
वेद	१३०	१	६८	भ श ८ उ १ सू ८८
१ वेदक समकित	२८७	१	२६२	कर्म भा १ गा १५
वेद की व्याख्या और भेद	६८	१	४६	कर्म भा १ गा २२
वेदना दस नारकी जीवों की	७४८	३	४२५	ठा १० सू ७५३
वेदना नरकों में	५६०	२	३१६	जी प्रति ३ सू ८६ प्रव द्वा १७४ गा १०७४ प्रश्न आस्रवद्वार १ सू ६
वेदना, निर्जरा नारकी जीवों में	५६०	२	३३६	भ श ७ उ ३ सू २७६
वेदना भय	५३३	२	२६८	ठा ७ उ ३ सू ५४९ सम ७
वेदना समुद्घात	५४८	२	२८८	पन्न प ३६ सू ३३१ द्रव्यलो स ३ श्लो २१२ २६५ प्रव द्वा २३१ गा १३११ ग ७ सू ५८६
वेदनीय कर्म का स्वरूप और उसके भेद	५९०	३	६०	कर्म भा १ गा १२ व्याख्या तत्त्वार्थ अध्या ८ पन्न प २३ सू २९३
वेदनीय कर्म के दो भेद	५१	१	३०	पन्न प २३ कर्म भा १ गा १२
वेदनीय कर्म बन्ध के कारण	५९०	३	६०	भ श ७ उ ६ सू २८६ भ श ८ उ ९
वेद परिणाम	७४६	३	४२८	ठा १० सू ७१३ पन्न प १३ सू १८२
वेदमार्गणा और उसके भेद	८४६	५	५८	कर्म भा ४ गा ११
वेदान्त दर्शन	४९७	२	१५४	
२ वेदिका प्रतिलेखना	४४९	२	५४	ठा ६ सू ५०३ उत्त अ २६ गा २६
वेदिका प्रतिलेखना के ५ भेद	३२२	१	३२९	ठा ६ उ ३ सू ५०३ टी
वेदों का अल्प बहुत्व	५९९	३	१०९	जी प्रति २ सू ६२
वेयावच्च दस	७०७	३	३८२	भ श २५ उ ७ सू ८०२

१ क्षायिक समकित होने से ठीक अव्यवहित पहले क्षण में होने वाले क्षायोपशमिक समकितधारी जीव के परिणाम को वेदक समकित कहते हैं।

२ घुटनों के ऊपर नीचे और पसवाड़े हाथ रखकर अथवा दोनों घुटनों या एक घुटने को भुजाओं के बीच में रख कर प्रतिलेखना करना।

* गले में फांसी लगाकर वृक्ष आदि की डाल पर लटकने से होने वाला मरण।

१ ज्ञानाचार का एक भेद सूत्र के अक्षरों का ठीक ठीक उच्चारण करना।

[1] एक बार शान्त हुए कलह को फिर से उभाड़ने वाले वचन कहना।

श

१ ममता का त्याग करना। यह आभ्यन्तर तप का भेद है।

२ ऐसा व्यक्ति जिसमें कुव्याख्याता के उपदेश से विपरीत धारणा जड़ पकड़ गई हो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
शतसहस्र की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२८२	न सू २७गा ६५ टी
शनैश्चर संवत्सर	४००	१	४२८	ठा ५उ ३सू ४६० प्रव द्वा १४२
[1] शबल दोष इक्कीस	६१३	६	६८	दशा द २,सम २१
शब्द के दस प्रकार	७१३	३	३८८	ठा १०उ ३सू ७०५
शब्द नय	५६२	२	४१७	अनुसू १५२ रत्ना परि ७सू ३२
शब्द परिणाम	७५०	३	४३४	ठा १०उ ३सू ७१३ पन्न प १३ सू १८४-१८५
शम्ब के साहस का दृष्टान्त भाव अनानुयोग पर	७८०	४	२५२	आव ह नि गा १३४ वृ पीठिका नि गा १७२
[2] शम्बूकावर्त्ता गोचरी	४४६	२	५२	ठा ६उ ३सू ५१४,उत्त.अ ३० गा १६,प्रव द्वा ६७गा ७४५, ध अधि ३श्लो २२टी पृ.३७
शयन पुण्य	६२७	३	१७२	ठा ६उ ३ सू ६७६
शय्यातर पिण्ड कल्प	६६२	३	२३७	पंचा १७ गा १७ १६
शय्यादाता अवग्रह	३३४	१	३४५	भ श १६उ २सू ५७६ प्रव द्वा ८५गा ६८१ ६८४, आचा श्रु २चू १अ ७उ २सू १६२
शरट (गिरगिट) की कथा औत्पत्तिकी बुद्धि पर	६४६	६	२६२	सू २७गा ६३ टी
शरीर,आत्मा की भिन्नता विषयक परदेशी राजा के छ प्रश्न	४६६	२	१०७	रासू ६३-७७
शरीर की व्याख्या और उसके भेद	३८६	१	४१२	ठा ५उ १सू ३६५,पन्न प २१सू २६७, कम भा १गा ३३

[1] जिन कार्यों से चारित्र की निर्मलता नष्ट हो जाती है उन्हें शबलदोष कहते हैं।
[2] शंख के आवर्त की तरह वृत्त (गोल) गति वाली गोचरी।

१ वे जीव जिनका संसार परिभ्रमण काल अर्द्धपुद्गलपरावर्तन या उससे कम बाकी रहा है।

१ जो दाता श्रमणों का भक्त है उसके आगे श्रमणदान की प्रशंसा कर भिक्षा लेने वाला याचक श्रमण वनीपक कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
श्रावक के चार प्रकार	१८४	१	१३८	ठा ४ उ ३ सू ३२१
श्रावक के चार विश्राम	१८८	१	१४२	ठा ४ उ ३ सू ३१४
श्रावक के चार शिक्षाव्रत	१८६	१	१४०	आव ह अ ६ पृ ८३१ ८३६, पंचा १ गा २५ ३
श्रावक के चौदह नियम	८३१	५	२३	शिक्षा ध अधि २ श्लो ३ ० पृ ७६
श्रावक के छ गुण	४५२	२	५६	ध र गा ३३
श्रावक के तीन गुण व्रत	१२८क	१	६१	आव ह अ ६ पृ ८२६-८३०
श्रावक के तीन मनोरथ	८८	१	६४	ठा ३ उ ४ सू २१०
श्रावक के दस लक्षण	६८४	३	२६२	भ श २ उ ५ सू १०७
श्रावक के पाँच अणुव्रत	३००	१	२८८	आव ह अ ६ पृ ८१७ ८२६, ठा ५ सू ३८६ उपा अ १ सू ६, ध अधि २ श्लो २३ २६ पृ ४७ ६०
श्रावक के पाँच अभिगम	३२४	१	३१५	भ श २ उ ५ सू १०६
श्रावक के पतीस गुण	६८०	७	७४	धा प्रक १ श्लो ४७ ५६
श्रावक के प्रत्याख्यान के उनचास भंग	१००३	७	२६७	भ श ८ उ ५ सू ३२६
श्रावक के बारह भावनत	७६४	४	२८०	आगम
निश्चय और व्यवहार से श्रावक के बारह व्रत				
(तीन गुणाव्रत)	१२८क	१	६१	आव ह अ ६ पृ ८१७ ८३, उपा अ १ सू ६ ध अधि २ श्लो ३ ४० पृ ५३-६४ ठा ५ सू ३८६ पंचा १ गा ० ३२
(चार शिक्षा व्रत)	१८६	१	१४०	
(पाँच अणुव्रत)	३००	१	२८८	
श्रावक के बारह व्रत	४६७	२	२००	
श्रावक के बारह व्रतों के साठ अतिचार	३०१ ३१२	१	२६०-३१४	उपा अ १ सू ७ आव ह अ ६ पृ ८१७, ध अधि २ श्लो ४३ ५८ पृ १ -११८

* श्री जैनसिद्धान्त बोल संग्रह भाग २ पृष्ठ ७३ पर षड्जग्राम की सात मूर्छनाएं छपी हैं वे संगीत शास्त्र नामक ग्रन्थ से ली हुई हैं। अनुयोग द्वार तथा स्थानांग सूत्र में षड्जग्राम की मूर्छनाओं के नाम दूसरी तरह दिये हैं। उनकी गाथा इस प्रकार है—

मग्गी कोरविआ हरिया, रयणी य सारकंता य।
छट्ठी य सारसी नाम, सुद्धसज्जा य सत्तमा॥

अर्थ—मार्गी, कौरवी, हरिता, रत्ना, सारकांता, सारसी और शुद्ध षड्जा।

१ आहार में आधाकर्म आदि दोषों की शंका होने पर भी उसे लेना सक्रिय(शंकित) दोष है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संक्रम की व्याख्या और भेद	२४०	१	२३५	ठा ४ सू २९६ कर्म भा गा १
संक्रमण करण	५९२	३	९५	कम्म गा २
१ संक्रामण दोष	७२२	३	४१०	ठा १० उ ३ सू ७४३
संक्लेश दस	७१४	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७३९
संक्षेप रुचि	६९३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २६
२ संख्यातजीविक वनस्पति	७०	१	५०	ठा ३ उ १ सू १४१
संख्यादत्तिक	३५४	१	३६९	ठा ५ उ १ सू ३९६
संख्यान दस	७२१	३	४०४	ठा १० उ ३ सू ७४७
संख्या प्रमाण आठ	६१९	३	१४१	अनु सू १४६
संख्या या परिमाण जानने के दस बोल	७२१	३	४०४	ठा १० उ ३ सू ७४७
संख्येय के तीन भेद	६१९	३	१४४	अनु सू १४६
संगीत के आठ तथा अन्य गुण	५४०	२	२७३	अनु सू १२७ गा ४८-४९ ठा ७ उ ३ सू ५५३
संगीत के छः दोष	५४०	२	२७३	अनु सू १२७ गा ४७ ठा ७ सू ५५३
संग्रह दान	७६८	३	४५०	ठा १० उ ३ सू ७४५
संग्रह नय और उसके दो भेद	५६२	२	४१४	रत्नाकरा परि ७ सू १३-१७ अनु सू १५२ गा १३७
संग्रह परिज्ञा सम्पदा	५७४	३	१५	दशा द ४ गा ८ उ सू ०१
संघ की आठ उपमाएं	६०३	३	१५६	नन्दी टीका गा ४-१७
संघ तीर्थ है या तीर्थङ्कर तीर्थ है ?	९१८	६	१३४	विशे गा १०३३-३७ भग श २० उ ८ सू ६८१
संघ धर्म	६९२	३	३६१	ठा १० उ ३ सू ७६०

१ वाद का एक दोष प्रस्तुत विषय को छोड़कर अप्रस्तुत विषय को कहना।
२ जिस वनस्पति में संख्यात जीव हों, जैसे नालि से लगा हुआ फूल

[1] ऐसी शक्ति विशेष जिससे शरीर के प्रत्येक भाग से सुना जाय।

[1] मांडला का एक दोष रसलोलुपता के कारण एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ संयोग करना। [2] परिग्रह से निवृत्त साधु का वस्त्र पात्र तथा शरीरादि में ममत्व होना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
संसार में आने वाले प्राणियों के दस भेद	७२८	३	४१५	ठा १० उ ३ सू ७७१
संसारी	७(ख)	१	४	ठा २ सू १०१ नन्दी व अ स्या ४ सू १०
संसारी जीव के चार प्रकार	१३०	१	९७	ठा ४ उ २ सू ४३, भ श २ उ १ सू ८८
संसारी जीव के दो प्रकार	८	१	४	
स दो दो भेद				
[1] संसृष्ट कल्पिक	३५३	१	३६८	ठा ५ उ १ सू ३९६
संस्थान छः अजीव के	४६९	२	६९	भ श २५ उ ३ सू ७२४ पन्न प १ सू ४ जी प्रति १
संस्थान छः जीव के	४६८	२	६७	ठा ६ सू ४९५ कम भा १ गा ४०
संस्थान नरकावासों का	५६०	२	३३४	जी प्रति ३ सू ८२
संस्थान नरकों के	५६०	२	३४१	भ श १५ उ ३ सू ७२५
संस्थान नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
संस्थान परिणाम	७५०	३	४३३	ठा १० उ ३ सू ७१३ पन्न प १३
संस्थान विचय धर्मध्यान	२२०	१	२०४	ठा ४ उ १ सू २४७
संस्थान सात	५५२	२	२९३	ठा ७ सू ४७ ठा ७ उ ३ सू ५४८
संस्थानानुपूर्वी	७१७	३	३९१	अनु सू ७१
संहनन (संघयण) छः	४७०	२	६९	पन्न प २३ सू २९३, ठा ६ उ ३ सू ४९४ कम भा १ गा ३८-३९
संहनन नारकी जीवों का	५६०	२	३३७	जी प्रति ३ सू ८७
संहरण के अयोग्य सात	५३०	२	२६६	प्रव द्वा २६१ गा १४१९
सकडाल(सद्दाल)पुत्र श्रावक	६८५	३	३१९	उपा अ ७
सकाम मरण	५३	१	३१	उत्त अ ५ गा २

[1] संसृष्ट अर्थात् खरडे हुए हाथ या भाजन आदि से दिये जाने वाले आहार को ही ग्रहण करने वाला साधु ।

[1] आसुरी भावना का एक भेद, हमेशा लड़ाई झगड़ करते रहना करने के बाद पश्चात्ताप न करना दूसरे के क्षमाने पर भी प्रसन्न न होना और सदा विरोध भाव रखना।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सात कुलकर आगामी उत्सर्पिणी के	५११	२	२३९	ठा ७उ ३ सू ५५६ सम १५६
सातकुलकरगतउत्सर्पिणीके	५१२	२	२३९	ठा ७उ ३सू ५५६,सम १५७
सात कुलकर वर्तमान अवसर्पिणी के	५०८	२	२३७	ठा ७उ ३सू ५५६, सम १५० जै भा २पृ ३६२
सात गणापक्रमण	५१५	२	२४४	ठा ७उ ३ सू ५४१
सात गाथा विषयसमाधि अध्ययन की उद्देशों की	५४३	२	२९३	दश अ ६उ ४
सात नय	५६२	२	४११	अनुसू १५२,प्रवद्वा १२४ गा ८४७-८४८, विशे गा २१८० २२७८ रत्नापरि.७ तत्त्वार्थ अध्या १ द्रव्यानु अध्या ५-८ न्यायप्र अध्या ५ आगम नय, नयप्र नयवि नया आलाप,
सात नरक	५६०	२	३१४	जीप्रति ३सू ६६ ९५ प्रव द्वा १७२ १८४ भ १ १७ १४ १८ २५ ३० पन्न १२०,१६,प्रश्नसू ६
सात निक्षेप अनुयोग के	५२६	२	२६२	विशे गा १३८५ १३९२
सात निह्नव	५६१	२	३४२	विशे गा २३०० २६२ आव ह अ १ गा ७७८ ७८८ भश १ उ १ भश ९उ ३३ ठा ७सू ५८७
सातपंचेंद्रियरत्नचक्रवर्तीके	५२८	२	२६५	ठा ७ उ ३ सू ५५७
सात पक्षाभास	५४९	२	२९१	रत्नापरि ६ सू ३८-४६
सात पदवियाँ	५१३	२	२३९	ठा १० ३सू १७७ टी
सात पानैषणा	५२०	२	२५०	आचा २ श्रु १ अ १ उ ११ सू ६२ ठा ७उ ३सू ५४५ प्रव द्वा ९६ सू १३८ दी १ उ ५
सात पिण्डैषणा	५१९	२	२४९	(see above)

१ इस बोल के अन्तर्गत जो इक्कीस मूर्च्छनाएं छपी हैं उनके सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

१ मकान, वस्त्र, पात्र आदि वस्तुएं लेने में विशेष प्रकार की मर्यादा धारण करना।
२ आहार के सैंतालीस दोषों में एक दायक दोष है। इसके चालीस भेद हैं। ये ४० भेद श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के तीसरे भाग के बोल नं ६६३ में दिये गये हैं।

[1] समान समाचारी वाले साधुओं का सम्मिलित आहार आदि व्यवहार सम्भोग कहलाता है।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
साधु के लिये ग्लान साधु की सेवा करना आवश्यक है या उसकी इच्छा पर निर्भर है?	६८३	७	१०८	बृ गा १८७१-१८७८ भ श २५ उ ७ सू ८०२, उत्त अ २६ गा ८-१०, उत्त अ २९ प्रश्न ४३, ओ गा ८८ ४६, ६२ ५३२-१३
साधु (स्थविरकल्पी) के लिये चौदह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१ ७७८
साधु (जिनकल्पी) के लिये बारह प्रकार का उपकरण	८३३	५	२८	पंच व गा ७७१ ७७८
साधु के लिये वर्जनीय ८ दोष	५८३	३	३८	उत्त अ २४ गा ९
साधु के संयम की विशुद्धि दस	६६९	३	२५७	ठा १० उ ३ सू ७३८
साधु के संयम में सक्षोभ (अशान्ति होने के दस कारण	७१४	३	३८८	ठा १० उ ३ सू ७३९
साधु के सत्ताईस गुण	९४५	६	२२८	सम २७, आव ह अ ४ पृ ६५९, उत्त अ ३१ गा १८
साधु के सत्य वचन में भी क्या विवेक होना चाहिये?	९८३	७	१०७	प्रश्न संवरद्वार २ सू २४, सूय अ ६ गा २३
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले १६ उद्गम दोष	८६५	५	१६१	प्रव द्वा ६७ गा ५६५ ५६६, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ३८, पिं नि गा ९२ ९३ पि वि गा ३-४, पंचा १३ गा ५ ६
साधु को आहार की गवेषणा में लगने वाले सोलह उत्पादना दोष	८६६	५	१६४	प्रव द्वा ६७ गा ५६७-५६८, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ४०, पिं नि गा ४०८-४०९, पिं वि गा ५८ ५९, पंचा १३ गा १८ १९

* पृष्ठ १०३ पर टिप्पणी देखो।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूत्र की वाचना देने के ५ बोल	३८२	१	३९८	ठा ५ उ ३ सू ४६८
सूत्र के बत्तीस दोष तथा आठ गुण	९६७	७	२३	अनुसू १५१ टी विशे गा ९९९ टी, वृ पीठिका नि गा २७८-२८७
सूत्र के बारह भेद	७७८	४	२३५	वृ उ १ नि गा १२२१
[1] सूत्रधर पुरुष	८४	१	६१	ठा ३ उ ३ सू १५६
सूत्र पढ़ने के बत्तीस अस्वाध्याय	९६८	७	२८	ठा सू ८५ ७१४ प्रव द्वा २६८ गा १४५० १४७१ व्यव भा उ ७ नि गा २६६-३१६, आव हरि अ ४ नि गा १३२१
सूत्र पढ़ाने की मर्यादा और दीक्षा पर्याय	४१४	२	२४३	ठा ४ उ १ सू ३६६ टी ८ अ सू ५४४, व्यव भा उ १ सू २१-२५
सूत्र बत्तीस	९६६	७	२१	
सूत्र रुचि	६९३	३	३६३	उत्त अ २८ गा २१
सूत्र श्रुत धर्म	१९	१	१५	ठा २ उ १ सू ७२
सूत्र सीखने के पाँच स्थान	३८३	१	३९९	ठा ५ उ ३ सू ४६८
सूत्र सुनने के सात बोल	५०६	२	२३४	वि नि गा ५ २
[2] सूत्र स्थविर	९१	१	६६	ठा ३ उ ३ सू १५९
सूत्रागम	८३	१	६०	अनु सू १४४
सूयगडांग सूत्र के ग्यारहवें मार्गाध्ययन की ३८ गाथाएं	९८५	७	१३९	सूय अ ११
सूयगडांग सूत्र के चौथे अ० प्रथम उ० की ३१ गाथाएं	९६३	७	८	सूय अ ४ उ १

[1] सूत्र को धारण करने वाला शास्त्र पाठक पुरुष सूत्रधर कहलाता है।
[2] ठाणांग और समवायांग सूत्र के ज्ञाता साधु सूत्रस्थविर कहलाते हैं।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
सूयगडांग सूत्र के चौदहवें अध्ययन की २७ गाथाएं	९४६	६	२३०	सूय अ १४
सूयगडांग सूत्र के तेईस अध्ययनों के नाम	९२४	६	१७३	
सूयगडांग सूत्र के दसवें समाधि अ० की २४ गाथाएं	९३२	६	१९७	सूय अ १०
सूयगडांग सूत्र के दूसरे अ० के दूसरे उ० की ३२ गाथाएं	९७४	७	५६	सूय अ २ उ २
सूयगडांग सूत्र के नवें धर्माध्ययन की छत्तीस गाथाएं	९८१	७	८७	सूय अ ९
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ० के दूसरे उद्देशे की पचीस गाथाएं	९४१	६	२१९	सूय अ ५ उ २
सूयगडांग सूत्र के पाँचवें नरयविभत्ति अ० के पहले उ० की सत्ताईस गाथाएं	९४७	६	२३६	सूय अ ५ उ १
सूयगडांग सूत्र के प्रथम द्वितीय दोनों श्रुतस्कन्धों के तेईस अध्ययनों का विषय वर्णन	७७६	४	७६	
सूयगडांग सूत्र के वीरस्तुति अध्ययन की उनतीस गाथाएं	९५५	६	२९९	सूय अ ६
सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र के बीस प्राभृतों का संक्षिप्त विषय वर्णन	७७७	४	२३०	
सेठ (कालगढ) की पारिणामिकी बुद्धि की कथा	९१५	६	७८	नसू० ७ गा ७२, आव ह गा ९४९

[1] पृष्ठ ३२१ की टिप्पणी देखो। [2] जो आयु पूरी भोगे बिना आयु टूटने के सात कारणों में से किसी कारण से असमय में ही टूट जाय। [3] जिस कर्म का फल उपदेश आदि से शांत हो जाय।

१ जिस वनस्पति का स्कन्ध भाग बीज का काम देता है जैसे शक्की आदि।

२ पच्चक्खाण करने में एक तरह का संकेत पानी रखने के स्थान पर पड़ी हुई बूंदें जब तक सूख न जांय अथवा जब तक ओस की बूंदें न सूखें तब तक का पच्चक्खाण।

विषय	बोल	भाग	पृष्ठ	प्रमाण
स्थान तेईस साधु के उतरने योग्य तथा अयोग्य	६२३	६	१७०	आचा २ चू १ अ २ उ २
स्थान परिहरणोपघात	६६८	३	२५६	ठा १० उ ३ सू ७३८
[1] स्थानातिग	३५७	१	३७१	ठा ५ उ १ सू ३९६
स्थापन दोष	८६५	५	१६२	प्रव द्वा ६७ गा ५६४, ध अधि ३ श्लो २२ पृ ३८, पिं नि गा ९२, पिं नि गा ३ दशवै अ ५ उ १ गा ५
स्थापना अनन्तक	४१७	१	४४१	ठा ५ उ ३ सू ४६२
स्थापना कर्म	७६०	३	४४१	आचा अ ८ उ १ नि गा १८३
स्थापना दोष	३४७	१	३५९	आव ह अ ३ नि गा ११०७ पृ ५१७, प्रव द्वा २ गा १०६
स्थापना निक्षेप	२०९	१	१८७	अनु सू १५०, न्याय अध्या १
स्थापनानुपूर्वी	७१७	३	३९०	अनु सू ७१
स्थापनानुयोग	५२६	२	२६२	विशे गा १३९०
[2] स्थापनाप्रमाणनाम के ७ भेद	७८९	३	४००	अनु सू १३० गा ८५
स्थापनार्य	७८५	४	२६६	सू श्रु २ अ १ नि गा ३
स्थापना सत्य	६९८	३	३६९	ठा १० सू ७४१, पन्न प ११ सू १६५, ध अधि ३ श्लो ४१ पृ १२१
स्थापिता आरोपणा	३२६	१	३३५	ठा ४ उ १ सू २६३
स्थावर	८	१	५	ठा २ उ १ सू ५७
स्थावरकाय पाँच	४१२	१	४३७	ठा ५ उ १ सू ३९३

[1] अतिशय रूप से स्थान अर्थात् कायोत्सर्ग करने वाला साधु।

[2] सद्भाव या असद्भाव आकार वाली वस्तु में किसी की स्थापना करके उसे उस नाम से कहना स्थापना सत्य है। जैसे शतरंज के मोहरों को हाथी घोड़ा आदि कहना अथवा 'क' इस आकार विशेष को 'क' कहना।

* मूर्च्छनाओं के सम्बन्ध में पृष्ठ २६१ पर टिप्पणी देखो।

ह

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यद्‌वा स्याद्धीप्रमादितम्।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः॥

भावार्थ–श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में तथा उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि प्रमाद से जो न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला पाप निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥

भावार्थ–सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायँ, दुर्भिक्ष(दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्रीजिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो।

शान्ति ! शान्ति !!

न्यूनाधिकमशुद्धं वा, यच्चात्र स्याद्धीप्रमादितम्।
दुष्कृतं तस्य मिथ्याऽस्तु, क्षन्तव्यं तच्च ज्ञानिभिः॥

भावार्थ-श्री जैन सिद्धान्त बोल संग्रह के सात भागों में उनके विषयानुक्रमसूचक इस आठवें भाग में बुद्धि भ्रम से न्यून, अधिक अथवा अशुद्ध लिखा गया हो उससे होने वाला निष्फल हो एवं ज्ञानी पुरुष उसके लिये क्षमा करें।

अन्तिम मंगल कामना

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः
काले काले च वृष्टिं वितरतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रसरतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि॥

भावार्थ-सकल प्रजाजनों का कल्याण हो, राजा बलवान् और धर्मात्मा हो, वृष्टि यथासमय हुआ करे, सभी रोग नष्ट हो जायें, दुर्भिक्ष (दुष्काल), चोरी और महामारी आदि दुःख संसार में कभी किसी भी प्राणी को न सतावें और रागद्वेष के विजेता श्री जिनेश्वर देव द्वारा प्रवर्तित, सर्व सुखों को देने वाले धर्मचक्र का सदा सर्वत्र विस्तार हो।

शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!